kissekahani.com

फोटो : सुभाष द. संचेती

अतापता

मुखपृष्ठ :

बीनेराम : छगनसिंह राव १

सरस कहानियां :

रिवाल्वर की धमकी : सत्यस्वरूप दत्त ८
रिजल्ट का चक्कर : प्रदीपकुमार १२
बुखार : जयलक्ष्मी राजगोपाल १६
रिश्वत एक प्यारी-सी : मालती जोशी २४
सीकेपीकेटीके : आशुतोष मुखोपाध्याय २८
ठठ-मनौवल : यादराम 'रसेंद्र' ३६
धोखे का जाल : शाहिद अब्बास अब्बासी ४४
पशु के मारे कौन मरे : मनहर चौहान ५५

चटपटी कविताएं :

काला अक्षर भैंस बराबर : योगेंद्रकुमार लल्ला ४
गर्मी की शाम : सुबोधकुमार द्विवेदी ३२
बकरे दादा : शंभुप्रसाद श्रीवास्तव ५६
बंदर का तलाक : पुष्पमचंद 'मानव' ५६
करो आज उपवास : निर्मला तिवारी ५७
अकल ठिकाने आई : शांति मालवीय ५७

मजेदार कार्टून-कथाएं :

बुद्धूराम : आबिद सुरती १९
छोटू और लंबू : शहाब २०

अन्य रोचक सामग्री :

खट्टी-मीठी कुट्टी (फोटो-कथा) : महेंद्र राजा जैन ६
शैतान की खोज (कार्टून) : रंजित २७
अनोखे त्योहार (लेख) : श्रीकृष्ण ४८
डाक-टिकटों पर पक्षी (लेख) : प्रभातकुमार गुप्त ५२

स्थायी स्तंभ :

छोटी छोटी बातें : सिम्मा ११
कहो कैसी रही (चुटकुले) : वीणा वल्लभ २२
शीर्षक प्रतियोगिता-२७ : २३
उद्धरण प्रतियोगिता-३१ : ४०
रंग भरो प्रतियोगिता-१०७ : ५९

वार्षिक शुल्क : स्थानीय : रु. ६-००
डाक से : रु. ६-५०

संपादक : आनंदप्रकाश जैन

kissekahani.com

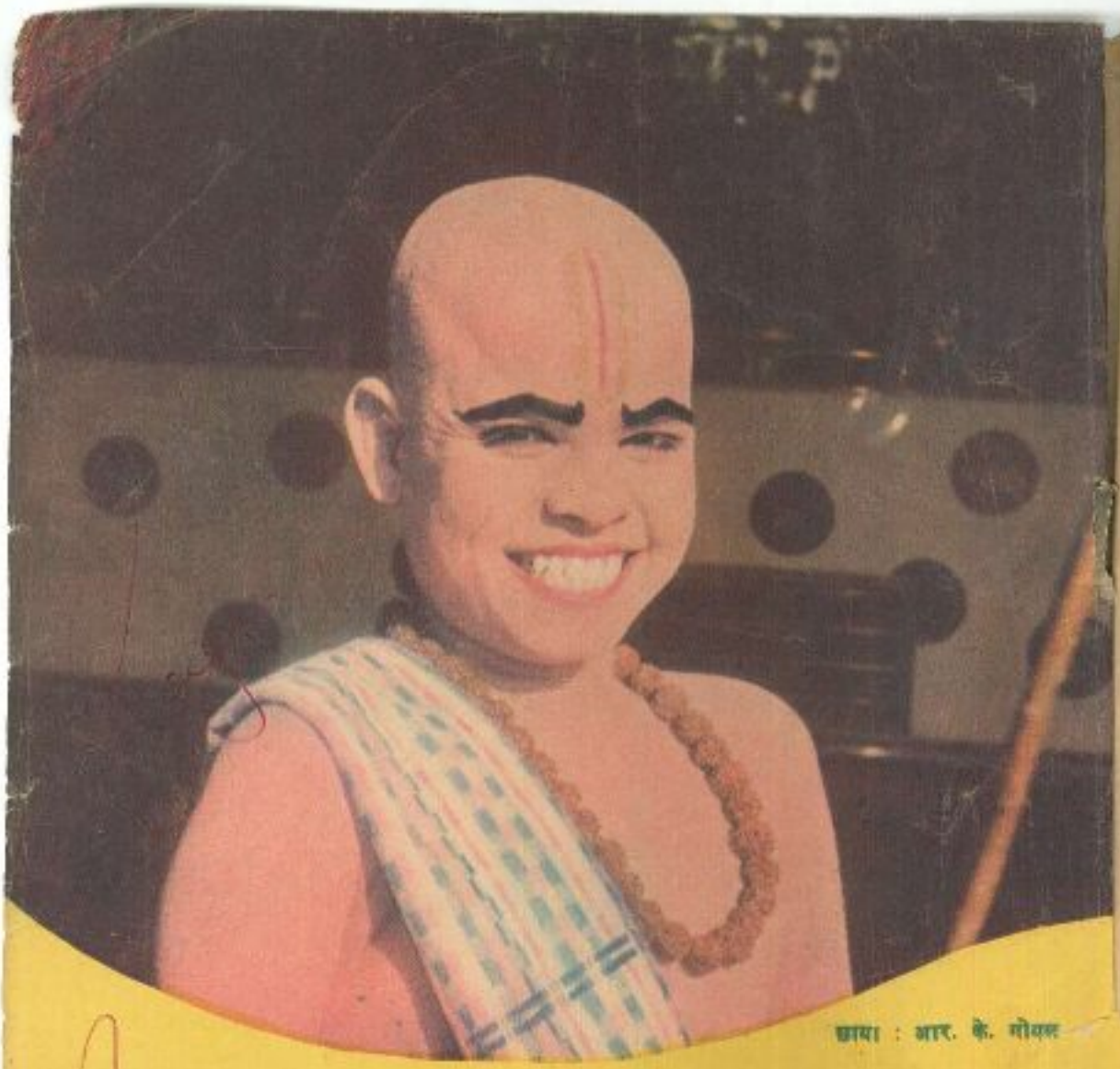

छाया : आर. के. गोयल

काला अक्षर...

गजभर लंबा तिलक भाल पर,
सिर है घोटमघोट,
मैं पंडित हूं तमिलनाडु का
पहने सिर्फ लंगोट!

मंदिर-मंदिर घूमा, देखी—
मदुराई, तंजौर;
चोटी चुहिया कुतर ले गई,
लुंगी ले गए चोर!

पैसा-धेला एक न छोड़ा,
बचे न चावल-दाल;
सिर्फ फकत दम बाकी हूं मैं,
अब ठन-ठन गोपाल!

चिट्ठी लिखकर भेज रहा हूं,
जो भी इसको पाए;
रुपया-पैसा, कपड़ा— जैसी
श्रद्धा हो भिजवाए!

छाया : विद्याभ

...भैंस

बिना टिकट

लड़की एक

पड़ी हाथ में

खश होकर

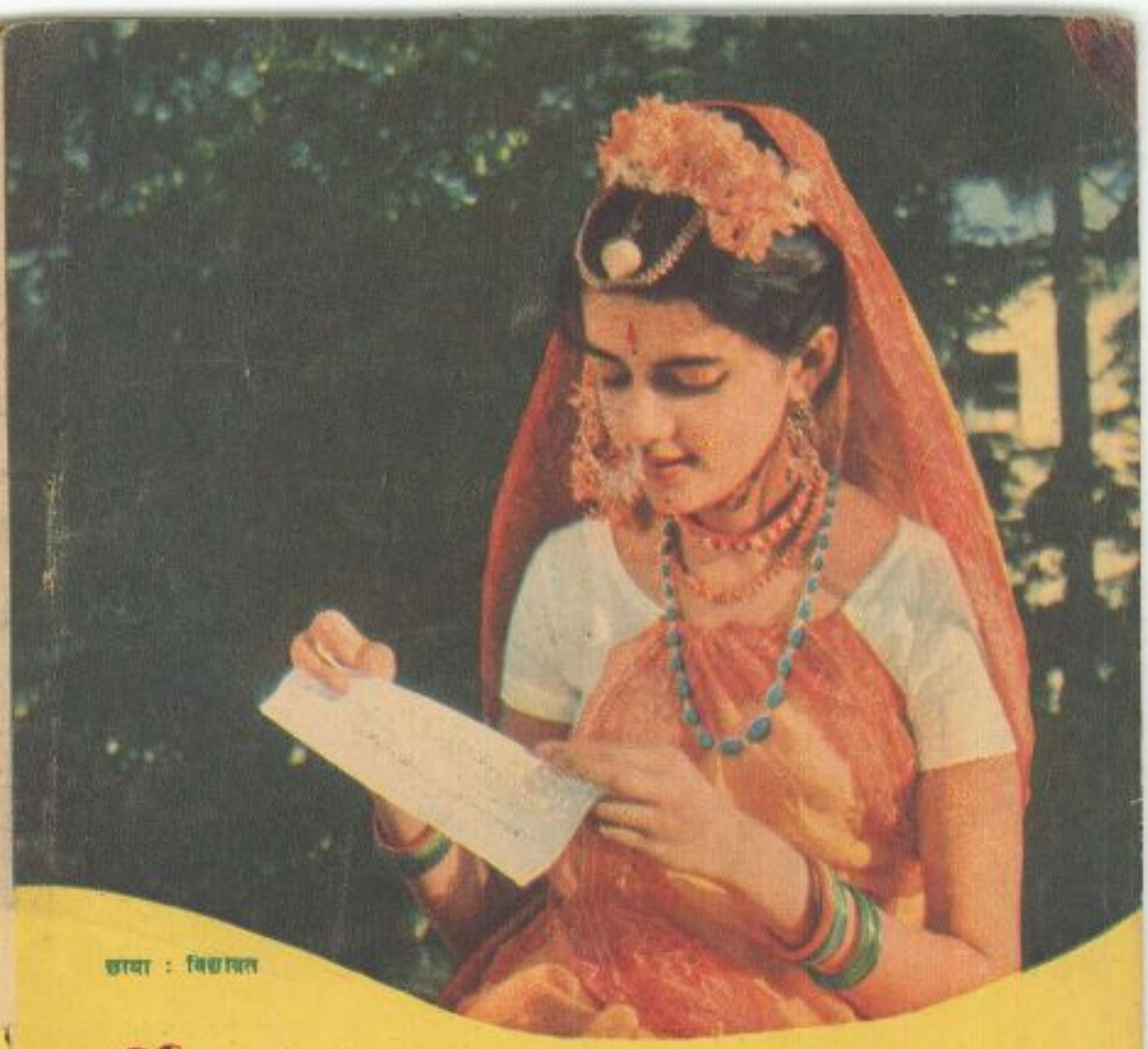

छाया : विद्यावत

...भैंस बराबर

• योगेंद्रकुमार लल्ला

बिना टिकट की बैरंग चिट्ठी,
पहुंची राजस्थान;
लड़की एक वहां रहती थी,
भोली-सी अनजान!

पड़ी हाथ में उसके, लेकिन
समझ न आया लेश;
खश होकर खोली थी चिट्ठी,
लगी हृदय को ठेस!

लिखा न जाने किस भाषा में,
भला पढ़े क्या आंख,
बोली, 'लिखने वाले तेरी
पड़े अकल पर खाक!

काला अक्षर भैंस बराबर
कर दी कीरमकाट;
उल्टा-सीधा समझ न आता,
'सात' लिखा या 'साठ'!

kissekahani.com

खट्टी-मीठी कुट्टी

१– उहूं! मैं छोटी हूं तो क्या, खोटी तो नहीं!

२– एक के बजाए दो ही लड्डू तो खाए थे— लो गाल फोड़ लेती हूं!

३– उंह! फिर भी गुस्सा, तो क्या मेरी जान ही लोगे?

४– छिः छि: गंदी आदत आज कल बड़े

५– ई ई ई ई ई ई! यह कसूर तो जीभ का है, मेरा थोड़े ही है!

६– अच्छा है बोरी उसके लिए सजा भी

•छाया: महेंद्र राजा

खट्टी-मीठी कुट्टी

४– छिः छिः! कितनी गंदी आदत हो गई है आज कल बड़े बच्चों की!

५– ई ई ई ई ई ई! यह कसूर तो बीभ का है, मेरा थोड़े ही है!

६– अच्छा, बताओ कहां है चोरी का माल— उसके मिले बिना तो सजा भी नहीं हो सकती!

•छाया: महेंद्र राजा जैन

kissekahani.com

कहानी

रिवाल्वर की धमकी

स्टेशन के बाहर नित्य की भांति भारी चहल-पहल थी. आती-जाती गाड़ियों की गड़गड़ाहट व सीटियां सुनाई पड़ रही थीं. कभी-कभी लाउड स्पीकर पर की जाने वाली घोषणा का कुछ अंश भी सुनाई दे जाता था. नित्य की भांति अशोक अपने सामने अखबार एवं रंग-बिरंगी पत्रिकाएं बिछाए बैठा था. नित्य की भांति लोग आ-जा रहे थे. प्रत्येक की चाल मेल गाड़ी को मात करती दिख रही थी.

यह हड़बड़, यह भाग-दौड़ अशोक की समझ में नहीं आती. लोग पांच मिनिट पहले क्यों नहीं आ जाते, जिससे आराम से गाड़ी पकड़ लें. ऐसी कौन-सी व्यस्तता है, ऐसा कौनसा कार्य है जो आड़े आता है, लोगों की सांस फुलाए रखता है. सब दौड़ रहे हैं. इस दौड़ में पुत्र पीछे छूट जाए और पिता को पता न चले, तो आश्चर्य की कोई बात नहीं.

अशोक के पिता कहा करते थे कि सुरक्षित रहना है, तो भीड़ में रहो.

अशोक के चेहरे पर
रेखा खिंच जाती है.
उनकी बात भी अत
गई है. आज की भ
क्षित कह सकता है
भीड़ का एक सदस
जाता है और भीड़ म
चलता. भीड़ में बम
चार, छुरा चलने के
छपते हैं. भीड़भाड़ से
के समाचार अनेक

एक सप्ताह पूर्व
थी भरी सड़क पर.
हत्यारे पकड़े नहीं ज

तीन दिन पूर्व
को छुरा भोंक दिय
तटस्थ रही.

आदमी तो आ
गांधी जी की मूर्ति तो
दी गई. चितरंजनदास
ने कुछ नहीं कहा. किसी
भयभीत है. कौन परे
दो हड्डियां तुड़वाए?
की हड्डियां तोड़ भी

कभी-कभी, जब

सत्यस्वरूप दत्त

अशोक के चेहरे पर अविश्वास की एक रेखा खिंच जाती है. पिता जी के साथ उनकी बात भी अतीत की बात बन गई है. आज की भीड़ को कौन सुरक्षित कह सकता है? भीड़ के रहते भीड़ का एक सदस्य जीवन से कट जाता है और भीड़ को पता भी नहीं चलता. भीड़ में बम फटने के समाचार, छुरा चलने के समाचार नित्य छपते हैं. भीड़भाड़ से पूर्ण क्षेत्र में स्थित बैंक के लूटे जाने के समाचार अनेक बार देखने में आते हैं.

एक सप्ताह पूर्व उसके चाचा की हत्या कर दी गई थी भरी सड़क पर. सब के सामने हत्या करने वाले हत्यारे पकड़े नहीं जा सके.

तीन दिन पूर्व सड़क पर पहरा देते एक सिपाही को छुरा भोंक दिया गया. हत्यारा चला गया. भीड़ तटस्थ रही.

आदमी तो आदमी मूर्तियां भी सुरक्षित नहीं. गांधी जी की मूर्ति तोड़ दी गई. टैगोर की प्रतिमा गिरा दी गई. चितरंजनदास की मूर्ति खंडित कर दी गई. किसी ने कुछ नहीं कहा. किसी ने विरोध नहीं किया. भीड़ शायद भयभीत है. कौन परेशानी मोल ले? कौन अपनी एक-दो हड्डियां तुड़वाए? अपनी हड्डियां तुड़वा कर किसी की हड्डियां तोड़ भी दीं, तो क्या किया?

कभी-कभी, जब वह यह सब देखता है, सुनता है पढ़ता है, तो अशोक को भीड़ से भय लगता है. उसकी इच्छा भीड़ से भाग जाने की होती है. किंतु वह भीड़ से कैसे भाग सकता है? उसका काम ही भीड़ में रहने का है. एकांत में, जनशून्य पथ पर कौन उससे अखबार खरीदेगा? कौन उसकी अखबार बेचती चटपटी शब्दावली सुनेगा? कौन उसके सामने पड़ी पत्रिकाओं को देखकर ठिठकेगा? वह क्या, भीड़ से कोई नहीं बच सकता. किसी न किसी संदर्भ में प्रत्येक को भीड़ बनना पड़ता है, भीड़ को चीरना पड़ता है. मजे की बात तो यह है कि एकांत स्थान पर भी भीड़ में से ही होकर जाना पड़ता है. अतः अशोक ने स्वयं को भीड़ का अभ्यस्त बना लिया है. जब भीड़ में ही रहना है, तो भीड़ से डरना क्या?

अशोक से कुछ दूर हटकर बैठता है रमेश—उसका मित्र. उसका और रमेश का पिछले अनेक वर्षों का साथ है, अभिन्न साथ है. रमेश पान-सिगरेट बेचता है. पान-सिगरेट के साथ मक्खन और डबल रोटी भी बेचता

है. मक्खन और डबल रोटी के साथ अंडे भी बेचता है. कुछ महीनों पहले उसकी दोनों टांगें थीं. वह अशोक के साथ दौड़ लगाता था, पैदल चलने में अशोक को पिछाड़ने का प्रयास करता था. पिछाड़ भी देता था. किंतु वह सब अब एक स्मृति मात्र है—मन को दुखाने वाली स्मृति.

भीड़ में एक दिन अचानक बम फटा और उसके विस्फोट में, उसके घुएं में रमेश की एक टांग विलीन हो गई. उस घुएं से वह बैसाखी के सहारे निकला. वह अशोक के और निकट हो गया. अशोक उसे बस में चढ़ाता, बस से उतरने में उसकी सहायता करता, उसकी दूकान का सामान जुटाता, उसके ग्राहकों के लिए एक, पांच, दस के नोट भुना लाता.

बस की प्रतीक्षा में खड़ा रमेश कभी-कभी पूछ बैठता—"अपने दिन क्या ऐसे ही बीतेंगे? क्या स्टेशन के आगे इसी भांति बैठे-बैठे हमारे सिर के बाल सफेद हो जाएंगे?"

"नहीं, हमारे दिन फिरेंगे. एक दिन हम दोनों की बड़ी बड़ी दूकानें होंगी—अगल-बगल में!" अशोक कहता.

"मुझे भय लगता है. बड़ी दूकान, बड़ा भय! न जाने कौन हमारी खून-पसीने की कमाई का शत्रु बन जाए! कब हम पर बम फेंक दे! कब हमारी दूकान जला दे!" रमेश डरता है. उसके मन से भीड़ का भय नहीं जाता.

"ऐसा अधिक दिन नहीं चलेगा," अशोक कहता. कुछ क्षण ठहरता, फिर कहता—"ऐसा अधिक दिन नहीं चलेगा."

"इस तोड़-फोड़ का, इस मार-धाड़ का अंत कभी होगा, मुझे तो नहीं लगता," रमेश कहता.

"कुछ भी अनंत नहीं, अमर नहीं. जिसका आरंभ है उसका अंत भी निश्चित है. लोग इस स्थिति को अधिक दिन स्वीकार नहीं करेंगे. जिसकी टांग जाएगी, जिसकी आंख जाएगी, जिसका भाई जाएगा, जिसका पिता जाएगा, वह मौन नहीं रहेगा. वह आगे बढ़कर विरोध करेगा. कोई उसकी सहायता नहीं करेगा, तो वह अपनी सहायता आप करेगा." अशोक उत्तेजित स्वर में कहता. एक संकल्प उसकी आंखों में जन्म लेता.

ऐसी बातें वे प्रायः करते. बस के आ जाने पर या किसी ग्राहक के आ जाने पर उन दोनों की बातचीत का यह क्रम टूट जाता. बात वहीं की वहीं रह जाती. अगली किसी चौंकाने वाली घटना के घटने पर बातचीत एक नया मोड़ लेती.

राकेश भी वहीं बैठता था. उसकी चमकदार बूट-पालिश! बूट-पालिश करने का उसका विशिष्ट अंदाज लोगों को आकर्षित करता. अवकाश होने पर वह भी इस बातचीत में सम्मिलित होता.

रमेश को किसी-किसी दिन अपनी टांग का न रहना, अपना किसी पर आश्रित होना बेहद अखर जाता. वह कुछ देर के लिए विद्रोही हो जाता.

"राकेश, यह बम कहां मिलते हैं?" वह उत्तेजित स्वर में पूछता. उसकी आंखों में कुछ जलता, उसके स्वर में किसी बम का विस्फोट निहित होता.

"बम!. . .द् द् द्. . . बम! बाप रे! तुम्हारे मस्तिष्क में यह बम किधर से घुस गया? क्या करोगे तुम बम का?" राकेश पूछता.

"किसी भीड़ पर डालूंगा, हर भीड़ पर डालूंगा और डालता रहूंगा. मैं उस व्यक्ति की टांग छीनना चाहता हूं जिसने मेरी टांग छीनी है. मैं उस अज्ञात व्यक्ति से प्रतिशोध लेकर ही रहूंगा." रमेश का स्वर पूर्ववत् गंभीर रहता.

"तुमने कभी सोचा है कि तुम्हारे इस पागलपन से कितने व्यक्तियों की टांगें जाएंगी? कितने व्यक्ति तुम्हारी या तुमसे भी खराब स्थिति को प्राप्त होंगे?"

"मैं कुछ सोचना नहीं चाहता. मैं पागल ही होना चाहता हूं. पागल मुझसे अधिक सुखी है. पागल को कम से कम अपनी स्थिति का एहसास तो नहीं होता. मुझे हरदम एक टांग का न होना, सब की भांति सहज भाव से न चल पाना कचोटता है." रमेश के स्वर में आक्रोश से अधिक पीड़ा का पुट रहता.

तभी कोई ग्राहक आ जाता या तीन-चार ग्राहक आ जाते और रमेश का क्रोध शिथिल पड़ जाता.

ग्राहकों के चले जाने पर वह सामान्य दिखता. अशोक से इधर-उधर की गप लड़ाने लगता, किसी फिल्मी धुन को गुनगुनाने लगता. अशोक के सामने रखे अखबारों पर छपे शीर्षक पढ़ने लगता.

"मैं दूर से तुम्हारे अखबार पढ़ सकता हूं, किंतु तुम मेरे सिगरेट के पैकेटों पर छपी बातें नहीं पढ़ सकते. मेरी दृष्टि तुमसे तेज हुई न?"

"हूं! बड़ी तेज हुई! यह मोटे-मोटे अक्षर पढ़कर कौन-सा तीर चला लिया? ऐसे तो मैं भी सड़क के पार लगा सिनेमा का पोस्टर पढ़ सकता हूं—सत्यकाम. . . धर्मेंद्र, अशोककुमार. . . मनोरंजन कर से मुक्त!"

तभी कोई ग्राहक आ जाता.

"नया पराग नहीं आया?"

उन दोनों की बात वहीं रह जाती. दूकानदारी पहले है बाकी सब बातें बाद में.

ग्राहक अखबार लेकर चला जाता है. अशोक कुछ देर के लिए मुक्त हो जाता है. वह रमेश की ओर देखता है. वहां तीन-चार ग्राहकों को पाता है.

"दो ठो पान. साथ में पीली पत्ती."

"एक पैकेट पनामा."

वह राकेश की ओर देखता. उसे भी व्यस्त पाता.

"क्रीम पालिश कर दूं?"

अशोक वहां से
है. उससे कुछ हटकर
रंग की फिएट खड़ी
स्टेशन छोड़ने या कि

फिएट के निकट
है. एक के हाथ में सूटके
अधीरता के भाव हैं.

"पटना ही जाना
बात नहीं, गाड़ी आधा
से बाहर खड़े रहना
हों, यहां भीड़ बहुत है."

"एक किनारे!.

"लगता है आप म

"नहीं, डरने की
का समय है."

"क्या दिन के
लगता है आप अखबार

"मैं आपका अभि
कि आप मुझसे क्या बा
पहली बार देख रहा हूं.

"मेरे लिए कोई
अपरिचित नहीं. मेरा
पड़ता है."

सूटकेस हाथ में
दिखता है. उसके मुख
छित स्थिति में फंस गया

छोटी छोटी

"देख, तेरे
खुशखबरी

अशोक वहां से दृष्टि हटाकर सामने केंद्रित करता है. उससे कुछ हटकर, उसके दाएं हाथ पर हल्के नीले रंग की फिएट खड़ी है. कोई आया होगा किसी को स्टेशन छोड़ने या किसी को स्टेशन से लेने.

फिएट के निकट ही वह दो व्यक्तियों को देखता है. एक के हाथ में सूटकेस है. उसके मुख पर शीघ्रता के, अधीरता के भाव हैं.

"पटना ही जाना है न आपको? घबराने की कोई बात नहीं, गाड़ी आधा घंटा लेट है. प्लेटफार्म पर टहलने से बाहर खड़े रहना अच्छा है. आइए, एक किनारे खड़े हों, यहां भीड़ बहुत है."

"एक किनारे!. . . किनारे पर क्यों?"

"लगता है आप मुझसे डर रहे हैं. डर रहे हैं न?"

"नहीं, डरने की ऐसी कोई बात नहीं. वैसे भी दिन का समय है."

"क्या दिन के समय कोई खतरा नहीं होता? लगता है आप अखबार नहीं पढ़ते?"

"मैं आपका अभिप्राय नहीं समझा. मैं समझा नहीं कि आप मुझसे क्या बात करना चाहते हैं? मैं आपको पहली बार देख रहा हूं."

"मेरे लिए कोई व्यक्ति नया नहीं, कोई व्यक्ति अपरिचित नहीं. मेरा सबसे संबंध है. मेरा सबसे काम पड़ता है."

सूटकेस हाथ में उठाए छात्र कुछ अधिक परेशान दिखता है. उसके मुख से लगता है कि वह किसी अवांछित स्थिति में फंस गया है.

"सूटकेस उठाने में कठिनाई हो रही हो, तो मुझे दे दें."

"नहीं. . .नहीं, ऐसी कोई बात नहीं. यह काफी हल्का है."

"हां, टैरेलीन के वस्त्र काफी हल्के होते हैं!"

"नहीं, इसमें सब वस्त्र टैरेलीन के नहीं, कुछ गरम भी हैं."

"रात को काफी ठंडक हो जाएगी गाड़ी में. अपने ओढ़ने के लिए कुछ नहीं लिया?"

"लिया है. एक कंबल है. वह इसी सूटकेस में है." छात्र कह जाता है, कहकर थम जाता है, जैसे कुछ गलत कह गया हो.

दूसरा व्यक्ति उसके भाव को पढ़कर बात बदल देता है.

"आप कांग्रेसी हैं?"

"नहीं."

"आप समाजवादी हैं ?"

"नहीं."

"आप साम्यवादी हैं ?"

"नहीं."

"आप माओवादी हैं ?"

"नहीं."

"विचित्र बात है! फिर आप किस पार्टी के समर्थक हैं? आप किस वाद को मानते हैं?"

(शेष पृष्ठ ३९ पर)

छोटी छोटी बातें--

—सिम्स

"देख, तेरे लिए क्या बढ़िया खुशखबरी लाया हूं!"

"यार, इस वक्त नींद आ रही है... अलमारी में रख दे. . .सवेरे देख लूंगा!"

कहानी

रिज़ल्ट का चक्कर

kissekahani.com

भैया की परीक्षाएं पंद्रह दिन चलनी थीं. उनका परीक्षा-केंद्र घर से दो मील दूर था. वहां तक पैदल जाने में थकान तो होती ही थी, वक्त भी बहुत खराब जाता था. दो मील जाने और दो मील आने में कितना ही समय बेकार निकल जाता. जितनी देर आने-जाने में लगती, उतनी देर में तो काफी कुछ पढ़ा जा सकता था. मम्मी ने सलाह दी कि पंद्रह दिनों के लिए रिक्शा लगवा लो. पर रिक्शा वाले का रेट सुनकर सब चुप हो गए. अगर रिक्शा वाले के बताए रेट पर रिक्शा कर भी लेते, तो यह कौन-सा निश्चित था कि रिक्शा वाला ठीक वक्त पर आ ही जाएगा. उसे देर-सवेर भी तो हो सकती है. इससे तो और भी झंझट पड़ेगा. अतः रिक्शा वाला भी ठीक नहीं बैठा.

अंत में तय यह हुआ कि भैया को परीक्षा-केंद्र तक मैं छोड़ने जाया करूं—पिता जी की साइकिल पर, और पिता जी के आफिस जाने से पहले ही छोड़कर आ जाऊं. फिर जब लाने का वक्त हो, तो किराए की साइकिल पर उन्हें वापस ले भी आऊं. साइकिल दोनों बार भैया ही चलाएंगे. मुझे भला क्या ऐतराज हो सकता था? मैंने हां कर दी.

अगले दिन सुबह भैया का पहला पेपर था. भैया के साथ-साथ मुझे भी समय से पूर्व उठना पड़ा. परीक्षा का पहला दिन था, अतः मम्मी ने खीर बनाई थी और साथ में थे पेड़े. भैया के साथ-साथ मुझे भी मिले. (मिलते कैसे नहीं? मैं अगर कह देता, जाओ मैं नहीं जाता छोड़ने, तो?) भैया तो परीक्षा की वजह से घबराए हुए थे, इसलिए उनसे खीर नहीं खाई गई. सब मैंने ही साफ की. जब भैया जाने लगे, तो मम्मी ने उन्हें अठन्नी देकर कहा—"रास्ते में कोई भंगी झाड़ू देता नजर आए, तो उसे दे देना." भैया परीक्षा-केंद्र पहुंचे, तो उन्होंने वह अठन्नी मुझे पकड़ा दी. हम दोनों आपस में एक दूसरे को देखकर मुस्करा दिए. अठन्नी को मैंने जेब के हवाले किया.

अब मैं रोज भैया को छोड़ने जाता और भैया रोज मुझे अठन्नी देते. (हे ईश्वर! कम से कम एक महीना तो चलती परीक्षाएं!) बदले में मुझे पेपर हो चुकने के बाद उनसे सिर्फ इतना पूछना होता था—पेपर कैसा हुआ? अगर वह कहें—'अच्छा हुआ' तो हम भी खुश हो लेते, अगर कहें 'ठीक नहीं हुआ' तो हम भी रोनी सूरत बना लेते. जैसे उनसे भी ज्यादा अफसोस हमें हुआ हो. (ऐसा न करते तो अगले दिन की अठन्नी क्या मिलती?)

भैया प्रायः रोज यही कहते कि पेपर ठीक नहीं हुआ और मुझे रोज रोनी सूरत बनानी पड़ती. वैसे मैं जानता था कि भैया झूठ बोल रहे हैं. क्योंकि दीदी भी जब पेपर देकर आतीं, तो यही कहतीं—ठीक नहीं हुआ. पर बाद में रिजल्ट निकला, तो सैकंड आईं. 'ठीक नहीं हुआ'—

कहने का तो शायद रिवाज ही चल पड़ा है.

एक अनुभवी दोस्त से इस संबंध में बात की, तो उसने बताया कि लड़कियां अगर कहें—ठीक नहीं हुआ, तो इसका मतलब है ठीक हुआ है; अगर घर आकर रोएं, तो समझो कुछ खराब हुआ है; अगर रो-रो कर घर सिर पर उठा लें, तो इसका मतलब है सचमुच खराब हुआ है! लेकिन लड़के अगर कहें कि ठीक नहीं हुआ, तो सचमुच ठीक नहीं हुआ. अगर कहें—ठीक हो गया, तो इसका मतलब है सचमुच ठीक हो गया.

इसका मतलब था भैया के पेपर सचमुच ठीक नहीं हो रहे. मुझे डर लगा—अगर भैया फेल ही गए, तो? खैर,

में भैया को रोज छोड़
पेपर खत्म और भैया
एक बोझ था सो उता
से प्रतीक्षा करने लगा

•

लंबी प्रतीक्षा के
आ गया. भैया सुबह
क्योंकि रिजल्ट का
से आना था. मम्मी ने
मीठा कराया, शगुन
स्टेशन पर अपना फैस

एक बात आपको
लगातार पांच साल
पंचवर्षीय योजना स
वर्ष है अर्थात् द्वितीय
की यह योजना यहीं
को चेतावनी दे रखी
फेल हो गए, तो तुम्ह
दूकान खुलवा देंगे. हम
कहते हैं—जब तक

मैं भैया को रोज छोड़कर आता रहा. पंद्रह दिन बाद पेपर खत्म और भैया की आवारागर्दी शुरू. परीक्षा तो एक बोझ था सो उतार दिया. मैं रिजल्ट की उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगा.

•

लंबी प्रतीक्षा के बाद रिजल्ट निकलने का दिन भी आ गया. भैया सुबह चार बजे उठकर स्टेशन चले गए, क्योंकि रिजल्ट का अखबार सुबह चार बजे की ट्रेन से आना था. मम्मी ने भैया के जाने से पहले उनका मुंह मीठा कराया, शगुन आदि किए और तब भैया जी पहुंचे स्टेशन पर अपना फैसला सुनने कि डूबे या तर गए.

kissekahani.com

—प्रदीपकुमार—

एक बात आपको और बता दूं. हमारे भैया इंटर में लगातार पांच साल से डूबते आ रहे हैं. यानी वह एक पंचवर्षीय योजना समाप्त कर चुके हैं. यह उनका छठा वर्ष है अर्थात् द्वितीय योजना का प्रथम वर्ष (काश, भैया की यह योजना यहीं ठप्प हो जाए!). पिता जी ने भैया को चेतावनी दे रखी है—"बेटा, अगर इस बार भी फेल हो गए, तो तुम्हारी पढ़ाई-वढ़ाई बंद. तुम्हें चाय की दूकान खुलवा देंगे. हमारे पैसे हराम के नहीं हैं." पर भैया कहते हैं—जब तक बी. ए. की डिग्री न ले लूंगा, चैन से नहीं बैठूंगा. इसी धुन में भैया इंटर की पढ़ाई भी नहीं करते थे. वह कहते हैं जिसे एक ही क्लास में फेल होने का पांच वर्ष का अनुभव है, उसे तो कम से कम अगली क्लास में चढ़ा ही देना चाहिए. उनका कहना है, अगर इस बार भी फेल हो गया, तो इंटर करूंगा ही नहीं, सीधा बी. ए. करूंगा!

तो भैया तो स्टेशन चले गए अपने भाग्य का फैसला सुनने और इधर हम सब धड़कते दिल से उनके आने का इंतजार करते रहे. पिता जी कह रहे थे कि बेटा इस बार भी फेल हो जाएगा, अतः उसे चाय की दूकान खुलवा देंगे. मम्मी कह रही थीं—आप तो हर वक्त अशुभ ही बोलते रहते हो, बेटा फर्स्ट आएगा और जरूर आएगा. उसे बी. ए. करवाकर नोट छापने की कंपनी का मनीजर लगवा देंगे.

नौ-दस बजे तक भी अब भैया नहीं आए, तो हमारी

पहले--डबल सीक्रेट एजेन्ट ००१/२
फिर--बिजली के बेटे ००१/२
और अब--तोप के गोले ००१/२

किशोर साहित्य के स्पाई-हीरो 'डबल सीक्रेट एजेन्ट ००१/२' राम और श्याम दुनिया की छत, तिब्बत, से शत्रुओं की आंखों में, धूल झोंक कर, दलाई लामा की नागमणि लाने के लिए 'लामा सीता राम' और 'लामा राधे श्याम' का रूप धारण करते हैं—

तोप के गोले ००१/२

डबल सीक्रेट एजेंट राम और श्याम का नया दिल हिला देने वाला कारनामा--पंचेन लामा के राज्य में 'लामा सीता राम' और 'लामा राधे श्याम' का चीनी आक्रमणकारियों तथा काले दानव से भयानक युद्ध !

'चंदर' के नवीनतम थ्रिलरों में–

१. प्यार का तूफान--२)
२. रह जा री हरजाई--२)
३. ढोल की पोल (संपादित)--२)
४. प्लास्टिक की औरत--२)
५. डबल सीक्रेट एजेंट ००१/२--२)
६. बिजली के बेटे ००१/२--२)
७. तोप के गोले ००१/२--२)

और ख्यातिप्राप्त उपन्यासकार आनंदप्रकाश जैन का अत्यंत लोकप्रिय ऐतिहासिक उपन्यास :

८. पलकों की ढाल--३)

विशेष उपहार :

आठों उपन्यासों का पूरा सैट मंगाने पर 'तोप के गोले ००१/२' की एक प्रति, तथा पैकिंग-रजिस्टरी--डाक-व्यय एकदम फ्री ! किंतु **वी. पी. किसी हालत में नहीं भेजी जाएगी**--अतः अपने निकटतम पाकेट बुक विक्रेता को टटोलिए, अन्यथा १५ रु. का मनी आर्डर कीजिए. एक उपन्यास के लिए ३.५० रु. तथा इस से अधिक के लिए सम्मिलित मूल्य के साथ २ रु. डाक व्यय भी अग्रिम आना आवश्यक है.

भारत भर में सब पुस्तक विक्रेताओं के पास उपलब्ध--नए एजेंट बंधु अलग से पत्र-व्यवहार करें.

चंदर पॉकेट बुक्स

१०, नरुला बिल्डिंग, २१वां रास्ता, चेम्बूर, बम्बई–७१

चिंता बढ़ी. पिता जी ने भैया
पर कुछ पता नहीं लगा. इधर
के सामने पालथी मारकर बैठ
आया क्या करूं. मैं कुछ देर पा
देखता, तो कभी मम्मी को प्रार्थ

ग्यारह बजे के करीब
हांफते हुए हमारे यहां आए. पि
कहकर उन्होंने बगल में से मु
और जमीन पर फैला दिया. ए
को दिखाते हुए बोले—"यह दे
बेटा. फौरन मिठाई मंगाओ
कई बार अपनी आंखों से रो
पक्का यकीन हो गया कि य
है, तो उन्होंने मुझे मिठाई
दिया. मैं मिठाई ले आया. दे
सारी मिठाई पर हाथ साफ क
चाय चढ़ाकर अखबार बगल में
करते, बाहर चले गए.

मम्मी बोलीं—"बस, मैं
बेटा फर्स्ट आएगा. आप तो ना
करते हैं. आखिर पांच साल
ही जाता है. काम आ गया
डिवीजन से तो छह साल पढ़
नहीं? अब बेचारे की जिंदगी
ही बी. ए. में दाखिला दिलवा

इससे पहले कि पिता जी
चौधरी जी ने प्रवेश किया. बै
मुझे बेहद अफसोस है, आपका
भगवान उसे अगली बार स
भी इस बार रह गया है.

पापा आश्चर्य से आंख
किसने बताया कि हमारा बेट
फर्स्ट आया है फर्स्ट. जा रे,
मीठा कराएं चौधरी जी का.'
"लेकिन, शर्मा जी,"

चिंता बढ़ी. पिता जी ने भैया के दोस्तों से पता किया, पर कुछ पता नहीं लगा. इधर मम्मी भगवान की मूर्ति के सामने पालथी मारकर बैठ गई थीं. मुझे समझ नहीं आया क्या करूं. मैं कुछ देर पापा को बालकनी में टहलते देखता, तो कभी मम्मी को प्रार्थना करते देख जाता.

ग्यारह बजे के करीब लाला बद्रीप्रसाद खुशी से हांफते हुए हमारे यहां आए. पिता जी को मिठाई के लिए कहकर उन्होंने बगल में से मुड़ा-तुड़ा अखबार निकाला और जमीन पर फैला दिया. एक लाल निशान पिता जी को दिखाते हुए बोले—"यह देखो, फर्स्ट आया है तुम्हारा बेटा. फौरन मिठाई मंगाओ अब तो, हां!" पिता जी ने कई बार अपनी आंखों से रोल नंबर देखा. जब उन्हें पक्का यकीन हो गया कि यह भैया का ही रोल नंबर है, तो उन्होंने मुझे मिठाई लाने के लिए पांच का नोट दिया. मैं मिठाई ले आया. देखते-देखते बद्रीप्रसाद जी सारी मिठाई पर हाथ साफ कर गए. ऊपर से एक लोटा चाय चढ़ाकर अखबार बगल में दबाए, मुस्कराते, धम-धम करते, बाहर चले गए.

मम्मी बोलीं—"बस, मैंने कहा नहीं था कि मेरा बेटा फर्स्ट आएगा. आप तो नाहक उस बेचारे को बदनाम करते हैं. आखिर पांच साल का पढ़ा हुआ बेकार थोड़े ही जाता है. काम आ गया न? एक साल पढ़कर थर्ड डिवीजन से तो छह साल पढ़कर फर्स्ट डिवीजन भली. नहीं? अब बेचारे की जिंदगी बन जाएगी. अब उसे जल्दी ही बी.ए. में दाखिला दिलवा दो."

इससे पहले कि पिता जी कुछ बोलते, मुंह लटकाए चौधरी जी ने प्रवेश किया. बैठते हुए बोले—"शर्मा जी, मुझे बेहद अफसोस है, आपका बेटा इस बार भी रह गया. भगवान उसे अगली बार सफल बनाएं. अपना गुल्लू भी इस बार रह गया है. . ."

पापा आश्चर्य से आंख फाड़ते हुए बोले—"आपको किसने बताया कि हमारा बेटा फेल हो गया है? वह तो फर्स्ट आया है फर्स्ट. जा रे, जरा मिठाई तो ला. मुंह मीठा कराएं चौधरी जी का."

"लेकिन, शर्मा जी," वह अपनी शंका व्यक्त करते हुए बोले, "मैं तो खुद अपनी आंखों से अखबार में नंबर देखकर आया हूं."

"मैंने भी अपनी ही आंखों से देखा है. बताना तो आपने कौन-सा नंबर देखा है?"

"एक लाख सतासी हजार आठ सौ छियालीस!"

"गलत!" पिता जी उछले, "एकदम गलत. उसका नंबर अंत में आठ सौ छियालीस नहीं आठ सौ चालीस है."

"अच्छा? तो उसने मुझे गलत नंबर बताया होगा. खैर, अच्छा हुआ इस बार लड़का निकल गया. मुबारक, मुबारक. . .!"

मिठाई-विठाई लाकर चौधरी जी चले गए.

पापा बोले—"यह लड़का बड़ा बदमाश है. लोगों को सही रिजल्ट न पता चल सके, इसलिए रोल नंबर ही गलत बता दिया."

तभी प्रसन्न-मुख भैया ने प्रवेश किया. मम्मी-पिता दोनों ने उन्हें गले से लगाकर आशीष दी.

"देखा, पिता जी, आखिर निकल ही गया न? चाहे थर्ड डिवीजन में ही निकला, निकला तो सही!" खुश होते हुए भैया ने कहा.

"क्याऽऽ. . ." मम्मी-पिता जी दोनों ने ही आश्चर्य से पूछा. "यह क्या कह रहा है रे, तू तो फर्स्ट आया है फर्स्ट!"

"हम जैसे फर्स्ट आ गए, तो देश का कबाड़ा हो जाएगा! आपसे किसने कहा कि मैं फर्स्ट आया हूं?"

"तो तू फर्स्ट नहीं आया?" पिता जी को यकीन नहीं हो रहा था. वह समझे, भैया शायद मजाक कर रहे हैं. "मुझे तो बद्रीप्रसाद अखबार भी दिखा गए हैं. मैंने खुद देखा कि तुम्हारा नंबर फर्स्ट वालों में है!"

भैया हंस पड़े—"बद्रीप्रसाद एक नंबरी हैं स्साला! पिछले साल का अखबार लिये घूम रहा है मोहल्ले में. मिठाई का मुक्कड़!"

"क्या पिछले साल का अखबार?"

"हां, पिछले साल का अखबार. यह रहा आज का अखबार, देख लो." पिता जी ने अखबार में रोल नंबर देखा. भैया सचमुच रायल थे. ●

२६० आदर्श नगर, जयपुर–४ (राज.).

शीर्षक प्रतियोगिता नं. २४ का परिणाम

पुरस्कार विजयी शीर्षक :

'जैसी रिश्वत वैसी किस्मत'

प्रेषक :

राकेश सिनहा, सी. डी. ६१९।२, ध्रुवा,
रांची, बिहार.

कहानी

चुंबनवाद

रवि स्कूल से घर लौटा और सीधे अपने कमरे में में चला गया. उसकी मम्मी कहीं दिखाई नहीं दीं. रवि ने सोचा—दुपहर की कसर निकालने के लिए वह खुद ही उसके चाय-नाश्ते का इंतजाम कर रही होंगी और उन्होंने रवि का मनपसंद हलवा भी बनाया होगा. रवि जल्दी-जल्दी यूनिफार्म उतारने लगा. उसके पेट में चूहे दौड़ रहे थे. वह झटपट कपड़े बदलकर डायनिंग रूम की तरफ भागा.

जरूर आज मम्मी उसे अपने हाथों से ही हलवा खिलाएंगी और हलवा खाने के बाद वह दुपहर वाली बदतमीजी के लिए मम्मी से क्षमा मांगेगा. बाद में मम्मी भी उससे 'सॉरी' कहेंगी. क्योंकि दुपहर की घटना के लिए दोनों 'फिफ्टी-फिफ्टी पर्सेंट' जिम्मेदार थे. एक हाथ से ताली बजती है कहीं?

लेकिन डायनिंग रूम में मम्मी के बदले सिर्फ उनकी चिट ही मिली. रवि उबल पड़ा. उसने यह नहीं सोचा था कि मम्मी आज की घटना के बाद भी उसके

kissekahani.com

घर आने के पहले ही कहीं बाहर चली जाएंगी.

उसने कांपते हुए हाथों से चिट उठाई, मम्मी ने लिखा था— 'मिसेज शर्मा की फेयरवेल पार्टी में जा रही हूं. पार्टी की सूचना अभी-अभी मिली है. तुम्हारे पापा को भी नहीं बता सकी. चाय-नाश्ते के बाद आया से सेंक करवा लो, पीठ का दर्द कम हो जाएगा. मैंने आया को भी कह दिया है.'

रवि चिट मुट्ठी में भींच कर मसलने लगा—'वाह-वाह! आया से सेंक करवाने के लिए बताके गई हैं. मारने के लिए वह, सेंकने के लिए आया! बहुत खूब. . . !'

"छोटे बाबू, चाय पी लो. . . फिर सेंक करवा लेना. . ." आया चाय और नश्ता ट्रे में लिये आ खड़ी हुई. रवि ने एक बार आया की तरफ देखा, एक बार ट्रे की तरफ. सचमुच उसमें उसका मनपसंद हलवा ही था, लेकिन खिलाने वाले हाथ. . .!

"चाय पी लो, बाबू!" रवि ने उसकी हूबहू नकल

उतारी और पूरी ट्रे की ट्रे
आवाज के साथ कप-प्लेटों

रवि ने आया को मन
दी. यह चुड़ैल घर में क्या
ज्यादा बाहर ही रहने लगी
आया का गला उसी तरह
हुआ मुर्गी का गला घोंट

रवि अपने कमरे में
की किताब लेकर पढ़ने
मन पूरी तरह उसी में
प्रकाशित कृष्ण की कहानी
ढंग से लिखी गई थी.

उसमें लिखा था—पू
गई थी! कृष्ण के जैसा
राक्षसी को कैसे मार सक
अबोध नन्हे-मुन्ने कृष्ण को
बदले उसे गोद में उठाक

कंस के दंड से बचने क
इसलिए उसने वहीं छि

रवि को कहानी
जोर-जोर से पढ़ने लगा
आकर रोने लगा—'म
ही बेटा हूं, या तुमने
बलराम तुम्हारी तरह
हूं? और फिर तुम छि

उतारी और पूरी ट्रे की ट्रे जमीन पर दे मारी. 'छन्' की आवाज के साथ कप-प्लेटों के टुकड़े-टुकड़े हो गए.

रवि ने आया को मन ही मन एक भद्दी-सी गाली दी. यह चुड़ैल घर में क्या घुस आई कि मम्मी घर से ज्यादा बाहर ही रहने लगीं! उसका वश चलता तो वह आया का गला उसी तरह घोंट देता, जिस तरह रसोइया मुर्गी का गला घोंट देता है.

रवि अपने कमरे में जाकर यों ही एक कहानी की किताब लेकर पढ़ने बैठा और पढ़ते-पढ़ते उसका मन पूरी तरह उसी में खो गया. किशोरों के लिए प्रकाशित कृष्ण की कहानी थी वह, जो बिलकुल नए ढंग से लिखी गई थी.

उसमें लिखा था—— पूतना कृष्ण के द्वारा मारी नहीं गई थी! कृष्ण के जैसा छोटा बच्चा उतनी बड़ी राक्षसी को कैसे मार सकता था भला! पूतना ने जब अबोध नन्हे-मुन्ने कृष्ण को देखा, तो वह उसको मारने के बदले उसे गोद में उठाकर प्यार ही कर सकी. लेकिन

कंस के दंड से बचने का उसके पास कोई उपाय न था, इसलिए उसने वहीं विष खाकर आत्महत्या कर ली थी.

रवि को कहानी बहुत पसंद आई और वह उसे जोर-जोर से पढ़ने लगा—— "नन्हा कृष्ण यशोदा के पास आकर रोने लगा——'मां, सचमुच बताओ, क्या मैं तुम्हारा ही बेटा हूं, या तुमने पैसा देकर मुझे खरीदा था? बलराम तुम्हारी तरह ही गोरा है, लेकिन मैं काला क्यों हूं? और फिर तुम सिर्फ मुझे ही मारती हो, बलराम को कभी कुछ नहीं कहतीं. बोलो, मां, बोलती क्यों नहीं? अगर तुम मेरी मां नहीं हो, तो मुझे मेरी असली मां के पास ही छोड़ आओ.' रवि ने किताब रख दी. कृष्ण तो काफी 'इंटेलीजेंट' लड़का था, इसी लिए चुटकियों में सही बात का पता लगा लिया.

अचानक रवि के दिमाग में एक नया विचार कौंध गया. अरे, सचमुच वह कितना बड़ा बुद्धू रहा, जो अब तक यह बात न सोच सका. जिस तरह यशोदा कृष्ण की असली मां नहीं थीं, उसी तरह मम्मी भी उसकी असली मम्मी नहीं हैं. असली होतीं, तो दुपहर को उतनी बेदर्दी से मारने के बाद भी उसे यों घर में छोड़ के जातीं?

वैसे उसके घर आने वाले मेहमान कहते हैं कि वह रंग में मां पर गया है और सूरत में पापा पर. लेकिन वे सिर्फ पापा को प्लीज करने के लिए ऐसा कहते होंगे, उसके पापा बहुत बड़े आफिसर जो हैं! और आफिसरों को प्लीज करने के लिए कौन झूठ नहीं बोलता? उसे अच्छी तरह याद है, एक बार उसके पापा ने भी अपने बॉस को खुश करने के लिए बिलकुल सफेद झूठ बोला था.

अब वह किसी की बात का विश्वास न करेगा. वह हरगिज मम्मी का बेटा नहीं है. . . सोचते-सोचते रवि की आंखों में आंसू भर आए.

आज दुपहर को, वह हमेशा की तरह पापा की कार में खाना खाने आया था. वह, मम्मी और पापा एक साथ खाने को बैठे थे. लंच में आज चिकन-सूप, फिशकरी और मटन बना था. रवि को सामिष भोजन बिलकुल पसंद नहीं है. वह प्लेट में गोभी की भाजी और रोटी लेकर खाने को बैठा. मम्मी ने उसकी प्लेट में मटन परोसा.

जयलक्ष्मी राजगोपाल

kissekahani.com

"मैं नहीं खाऊंगा," रवि ने मुंह बनाकर कहा.

"क्यों?" मम्मी ने पूछा.

"हमारे जीने के लिए सब्जी-फल खाना भी तो काफी है. फिर यह मटन-वटन खाने की क्या जरूरत है?"

"यह सब इसके उसी गांधी मास्टर का उपदेश है," मम्मी ने पापा से कहा.

फिर मम्मी जबरदस्ती उसके मुंह में मटन ठूंसने लगीं. रवि अपने प्रिय मास्टर को मजाक उड़ाए जाने पर पहले ही चिढ़ा हुआ था, मम्मी की इस जबरदस्ती ने जलती आग में घी का काम किया. उसने मम्मी की उंगलियों पर खूब जोर से दांत गड़ा दिए. उनकी उंगलियों से खून फूट निकला और मम्मी गुस्से से पागल हो उठीं. उन्होंने फुटरूल लेकर रवि की ऐसी पिटाई की, ऐसी पिटाई की, कि बस. पापा बुत बने बैठे रहे.

रवि ने आंखें पोंछ लीं और वह किताब खोलकर फिर पढ़ने लगा—— "यशोदा ने कृष्ण को प्यार से गोद में उठाकर कहा : 'अरे, पागल! तू मेरी कोख से ही पैदा हुआ था, तुझे मैंने कहीं से खरीदा नहीं.'

'सच, मां?' कृष्ण ने मुस्कराते हुए पूछा.

'बिलकुल सच. अब जरा हंस के तो दिखा, हां. . . और थोड़ा, हां. . .' और कृष्ण खिलखिलाकर हंस पड़ा."

यह यशोदा भी कितनी बड़ी 'लायर' यानी झूठी थी! वैसे उसकी मम्मी भी यशोदा से कम 'लायर' नहीं हैं. और पापा क्या उनसे कम हैं, जो घर में बैठे-बैठे भी मम्मी से फोन पर कहलवा देते हैं कि वह घर में नहीं हैं. शायद सारी दुनिया ही 'लायरों' से भरी पड़ी है.

और उसकी मम्मी शायद थोड़ी सनकी भी हैं. क्योंकि रवि को खूब अच्छी तरह याद है, एक बार वह क्लब जा रही थीं, रवि ने उनसे कहा था—'मुझे भी ले चलो.' और मम्मी खूब खिलखिलाकर हंसी थीं. फिर कहा था—'अरे बुद्धू, क्लब 'चिलड्रंस पार्क' थोड़े ही है कि तुम्हें लेती जाऊं.'

उसके ठीक दूसरे दिन ही रात को रवि को अपने कमरे में अकेले सोते समय अचानक कुछ डर-सा लगा था और उसने मम्मी से कहा था—'मम्मी, आज मैं तुम्हारे पास सोऊंगा.' मम्मी फिर उसी तरह हंस दी थीं और व्यंग्य से कहा था—'वाह रे, मेरे नन्हे-मुन्ने! शर्म नहीं आती, इतने बड़े हो गए हो. . .!' रवि की समझ में न आ रहा था कि वह एकदम छोटे-से बड़ा कैसे हो गया. ऐसी मम्मी को सनकी न कहे, तो क्या कहे?

"छोटे बाबू! छोटे बाबू!"

एकाएक उसकी विचारधारा भंग हो गई. आया एक बड़े बर्तन में गरम पानी लिये खड़ी थी. गरम पानी देखते ही रवि को अचानक पीठ में बहुत दर्द महसूस होने लगा. वह दर्द सहेगा, लेकिन आया से सेंक नहीं करवाएगा, चाहे जो हो जाए.

"दूर हट जाओ गरम पानी लेकर, नहीं तो बिलकुल अनहोनी हो जाएगी!" वह पूरी ताकत से चिल्लाया.

आया सहमकर कमरे से बाहर चली गई और वह खुद भी बाहर आंगन में जाकर लान की ठंडी घास पर बैठकर पढ़ने लगा—"फिर कृष्ण ने यशोदा से पूछा—'तो, मां, तुम रोज मुझे ही क्यों मारती हो?'

"यशोदा ने भी कृष्ण की नकल की—'और बताओ, कृष्ण, तुम्हीं क्यों रोज यहां-वहां जाकर चोरी से दूध-दही खाते हो?'"

ठीक ही तो है, कृष्ण जैसे चोर को मां मारेंगी नहीं, तो क्या सिर पर चढ़ा लेंगी. चोर कहीं का! अच्छी मां बच्चे की गलती सुधारने की कोशिश जरूर करेगी.

रवि को लगा, कृष्ण जैसे ही उसने भी यशोदा को समझने में बड़ी गलती की थी. और कृष्ण यशोदा का ही बेटा था. इसी लिए कहानी में कहीं भी इसका जिक्र नहीं है कि यशोदा कृष्ण को घर में छोड़कर क्लब जाया करती थीं.

अरे, कैसा बुद्धू है वह भी! कृष्ण के जमाने में ये क्लब-व्लब थे ही कहां, जो वह जातीं. . . वैसे क्लब होने पर भी सब कोई थोड़े ही जाया करते हैं. गोपाल की मां जाती हैं क्या? और रोहित की मां?

वैसे रोहित के जैसा खुशनसीब लड़का ढूंढ़ने पर भी शायद ही मिलेगा. उसके पास कार व बंगला जरूर नहीं है, लेकिन अच्छी-अच्छी मां तो है न? रोहित कहता था, वह जब भी बाहर जाती है, रोहित को साथ में अवश्य ले जाती है—बाजार, सिनेमा, कहीं भी. और रात को वह सोता तक मां के पास है.

रवि उठकर घास पर इधर-उधर टहलने लगा. रात हो चुकी थी. पूरे घर में बत्तियां जली थीं. जाड़े के दिन थे. रवि को ठंड महसूस होने लगी.

वह वहां से अपने कमरे में गया.

"छोटे बाबू, रात को क्या पकाना है? मेम साहब बताना भूल गईं." उसके आगे रसोइया खड़ा था.

"जो तुम्हारी मर्जी. . ." रवि ने रूखेपन के साथ कहा. उसे रात को भी खाना थोड़े ही खाना है. . .!

फिर एक बार रोहित कहता था, उसे पिछले साल, जब बारिश में भीगने से निमोनिया हो गया था, उसकी मां दिन-रात उसके पास ही बैठी रहती थीं. वह कहता था, जब बुखार आता है, मां का प्यार बहुत बढ़ जाता है.

रोहित की बात ठीक ही होगी. बहुत 'इंटेलीजेंट' है वह. काश कि रवि को जोर का बुखार आ जाता और वह मम्मी की परीक्षा कर पाता. . .! लेकिन बुखार आने के लिए बारिश की भी जरूरत है न? जाड़े के दिनों में भला बारिश आएगी कैसे?

लेकिन भीगने के लिए तो ठंडे पानी की ही जरूरत है. वह तो बाथ-रूम के नल में भी है न? उसे आम खाने से मतलब है कि पेड़ गिनने से? वह एक-दो घंटे तक नल के नीचे बैठकर अपने को अच्छी तरह भिगोएगा बस. और रात को मम्मी के घर लौटने तक उसे खूब जोर का बुखार आ जाएगा. ठीक है वह वैसा ही करेगा.

रवि ने किताब मेज पर पटक दी. अगर उसे बुखार आने के बाद भी उसकी मम्मी उसे छोड़कर क्लब जाएंगी, तो यह बात पक्की है कि वह मम्मी का बेटा नहीं है. बस वह उसी दिन घर छोड़कर चला जाएगा. दुनिया काफी बड़ी है. उसे कहीं न कहीं जगह मिल ही जाएगी.

रवि ने बाथ-रूम की सिटकनी चढ़ा ली और नल पूरी रफ्तार से खोलकर उसके नीचे बैठ गया. ठंडे पानी के सिर और शरीर पर गिरते ही वह बुरी तरह कांपने लगा. और जब उसे खूब चक्कर से आने लगे, तभी वह लड़खड़ाते पैरों से अपने कमरे में लौट गया और बिस्तर पर लुढ़क गया. . .

●

रवि ने धीरे से आंखें खोलीं. उसका बदन बुरी तरह तप रहा था और पोर-पोर बहुत ही दर्द कर रहा था. उसको लगा, शायद उसकी छाती पर कोई पट्टी-वट्टी भी लगी है. उसने करवट बदलने की कोशिश की.

उसके मम्मी-पापा सिरहाने बैठे थे. रवि को अचरज-सा लगा. उसके पापा उसके कमरे में सिर्फ जरूरत होने पर ही आया करते थे. रवि ने मम्मी की तरफ

देखा. अरे, मम्मी की
रही हैं. रवि कुछ भी
"मम्मी. . ." वह
"हां, बेटे. . ." म
"तुम कल कितने
पोंछती रहीं. और पापा
मम्मी तो आठ दिन से
"आठ दिन. . . !
"हां, और तुम बे
तो तुम्हारी मम्मी इ
गई हो. और इन आठ
रात को सोईं भी नहीं
ली है इन्होंने! कहती
खोलकर बात न करेगा
रवि आंखें फाड़े
धीरे-धीरे सब बातें या
कैलेंडर की तरफ नज
देखने लगा. ओह, कि
आठ दिन तक
खेल थोड़े ही है! उस
अच्छी निकलीं. इतनी
पूछो मत! और अपने
ऐसी मम्मी को कितनी
मम्मी के बारे में कैसी
सोचते-सोचते रवि क
"दवा देने का टा
हुए कहा.
अब उसकी मम्मी
मम्मी को कभी गलत
बच्चा थोड़े ही है कि
वैसे मम्मी के
फुरसत ही कहां है
नहीं मिलता. और
बस, शाम से रात तक
मम्मी दवा लेके
लगा. लेकिन उसके
उसका सिर तकिये
मम्मी ने आंचल से
लिटाया, मानो वह छो
"मम्मी. . . !"
चाहता था.
"कहो."
"मम्मी. . . !" र
जैसे उसके गले में कुछ
आंसू भरी आंखों ने
सब. . .

सी १९२ आई. डी. पी
शिव पोस्ट आफिस,

देखा. अरे, मम्मी की आंखें क्यों भीगी-भीगी-सी लग रही हैं. रवि कुछ भी समझ न पाया.

"मम्मी. . ." वह बहुत ही धीमी आवाज में बोला.

"हां, बेटे. . ." मम्मी आंखें पोंछने लगीं.

"तुम कल कितने बजे लौटीं. . ." मम्मी आंखें पोंछती रहीं. और पापा ने जवाब दिया—"रवि, तुम्हारी मम्मी तो आठ दिन से कहीं भी नहीं गईं. . . !"

"आठ दिन. . . !" रवि बुदबुदाया.

"हां, और तुम बेहोशी की हालत में रहे. सच पूछो तो तुम्हारी मम्मी इस कमरे से भी बाहर शायद ही गई हों. और इन आठ दिनों में कुछ खाया भी नहीं. रात को सोईं भी नहीं. देखो, अपनी क्या हालत बना ली है इन्होंने! कहती थीं—जब तक मेरा रवि आंखें खोलकर बात न करेगा सिवा पानी के कुछ नहीं लूंगी!"

रवि आंखें फाड़े पापा की बातें सुनता रहा. फिर धीरे-धीरे सब बातें याद आने लगीं. रवि ने कमरे में टंगे कैलेंडर की तरफ नजर घुमाई, फिर वह मम्मी की तरफ देखने लगा. ओह, कितनी दुबली हो गई हैं मम्मी!

आठ दिन तक नींद, भूख त्याग देना कुछ हंसी-खेल थोड़े ही है! उसकी मम्मी तो रोहित की मां से भी अच्छी निकलीं. इतनी अच्छी, इतनी प्यारी, कि बस, पूछो मत! और अपने क्षणिक पागलपन के कारण उसने ऐसी मम्मी को कितनी तकलीफ दी! उसने ऐसी अच्छी मम्मी के बारे में कैसी बहकी-बहकी बातें सोच ली थीं? सोचते-सोचते रवि की आंखों में आंसू भर आए.

"दवा देने का टाइम हो गया. . ." मम्मी ने उठते हुए कहा.

अब उसकी मम्मी कहीं भी जाए, वह बुरा न मानेगा, मम्मी को कभी गलत न समझेगा. आखिर वह दूध पीता बच्चा थोड़े ही है कि हमेशा मम्मी के आंचल से बंधा रहे.

वैसे मम्मी के साथ यहां-वहां जाने के लिए उसे फुरसत ही कहां है? पढ़ाई-लिखाई के लिए ही समय नहीं मिलता. और होम वर्क भी इतना रहता है कि बस, शाम से रात तक करने पर भी पूरा नहीं होता.

मम्मी दवा लेके आई. रवि उठने की कोशिश करने लगा. लेकिन उसके पहले ही मम्मी ने बहुत ही धीरे से उसका सिर तकिये से उठाया और दवा पिलाई. फिर मम्मी ने आंचल से उसका मुंह पोंछकर इतने धीरे से लिटाया, मानो वह छोटा-सा बच्चा हो.

"मम्मी. . . !" रवि मम्मी से बहुत कुछ कहना चाहता था.

"कहो."

"मम्मी. . . !" रवि ने फिर कहा. लेकिन उसे लगा जैसे उसके गले में कुछ अटकने लगा है. लेकिन उसकी आंसू भरी आंखों ने मम्मी से सब बातें कह दीं—सब. . . ●

सी १९२ आई. डी. पी. एल. क्वार्टर्स, बाला नगर टाउनशिप पोस्ट आफिस, हैदराबाद-३७

बुद्धूराम—

—सुरती

kissekahani.com

kissekahani.com

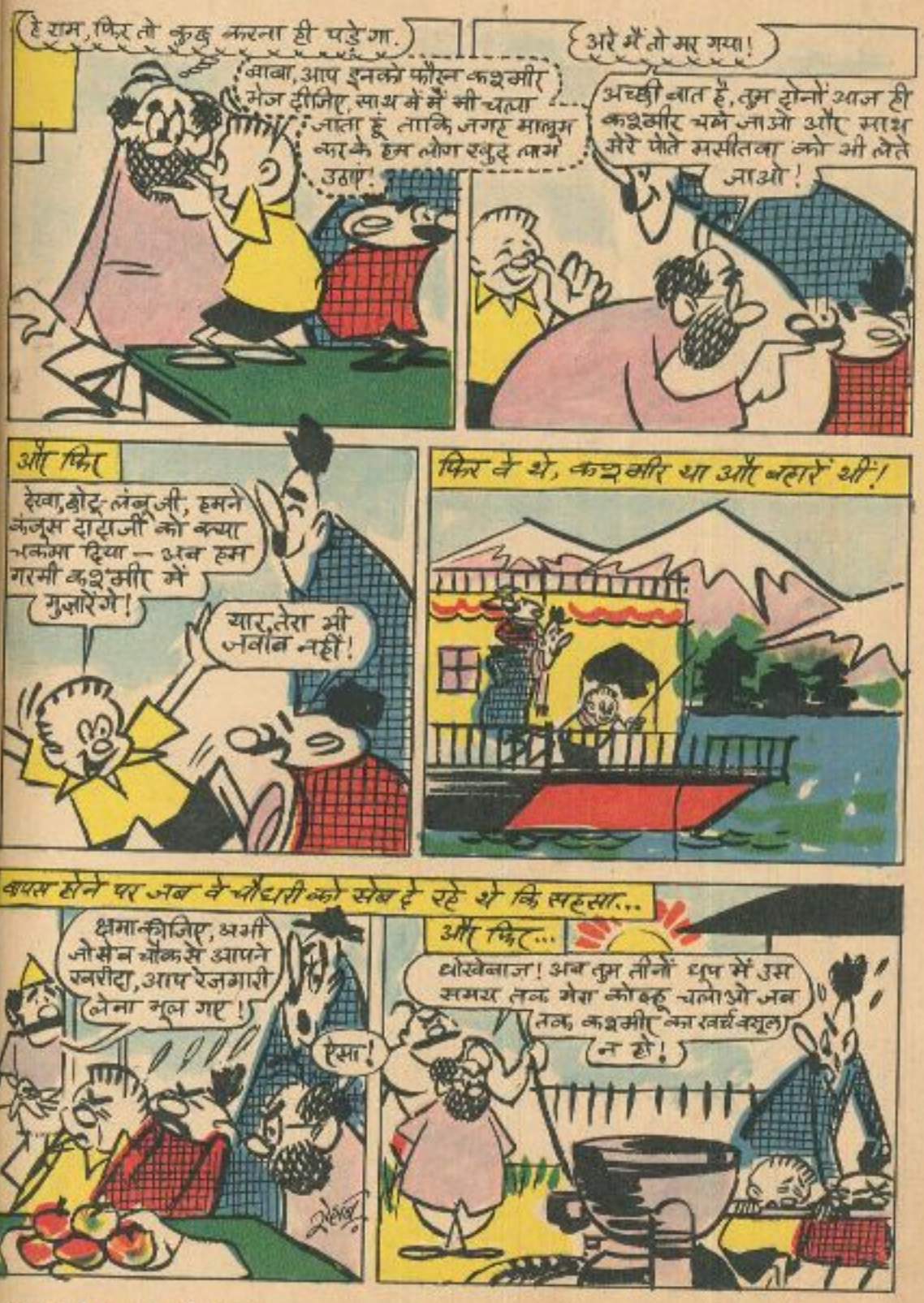

कहो कैसी रही

kissekahani.com

—वीणा वल्लभ

जंगल में भटकता हुआ एक भूखा-प्यासा, बेहद थका, आफत का मारा शिकारी दूसरे शिकारी को देखकर चिल्ला पड़ा—"खुदा का शुक्र है! तुम्हें देखकर बेहद खुशी हो रही है. दोस्त, मैं दो दिनों से यहां भटक रहा हूं!"

"अरे, तुम्हें क्या खुशी हो रही है," दूसरा शिकारी बुदबुदाया, "मुझ से पूछो, मुझे भटकते सात रोज हो गए!"

•

रमेश अपनी मां से रूठा हुआ था. कई दिनों से बोल भी नहीं रहा था. एक रात उसने मेज पर एक कागज रखा जिस पर लिखा था : "मां, सुबह छह बजे मुझे जगा देना—रमेश."

सुबह जब उसकी नींद खुली, तो सात बज चुके थे. उसे मां पर बड़ा गुस्सा आया. मेज पर एक कागज रखा था. रमेश ने उठाकर पढ़ा : "रमेश, छह बज गए हैं, अब उठ जाओ—मां!"

•

"आपका नाटक सुखांत है या दुखांत?"

"अगर हाउस फुल हो तो सुखांत, नहीं तो दुखांत होगा!"

•

"रात को नींद न आए, तो आप क्या करते हैं?"

"सितार पर गाता हूं."

"क्या इससे नींद आ जाती है?"

"नहीं, फिर मैं सारी रात आराम से जाग सकता हूं!"

•

एक आशावादी मजदूर का पक्का विश्वास था कि इस दुनिया में जो कुछ होता है, भले के लिए ही होता है. एक दिन जब वह कामपर जा रहा था, तो रास्ते में उसे याद आया कि उसका नाश्ता घर पर ही छूट गया है. दूसरे ही क्षण उसे मालूम हुआ कि उसके नकली दांत भी घरपर रह गए हैं. वह सोचने लगा, अच्छा ही हुआ जो नाश्ता छूट गया!

•

स्काउट मास्टर (गोपाल से) : "आज तुमने कौनसा अच्छा काम किया?"

गोपाल : "जब मैं बस में सफर कर रहा था, तो एक बूढ़ी औरत का पैसों से बंधा रूमाल खो गया और वह अपना टिकट न खरीद सकी."

स्काउट मास्टर (बीच में टोककर): "तो तुमने उसे टिकट के पैसे दे दिए. शाबाश!"

गोपाल : "जी नहीं, मैंने उसे पैदल चलकर कश्मीरी गेट जाने का छोटा-सा रास्ता बता दिया!"

•

एक महिला जूतों की दूकान में घुसी और थोड़ी देर पहले खरीदे गए सैंडिलों की शिकायत करने लगी. बोली, "मैं इन्हें पहन कर चल नहीं सकती, इसलिए वापस करने आई हूं."

"श्रीमती जी," दूकानदार ने उत्तर दिया, "ऐसे खरीदार जिन्हें चलना पड़ता है, इस दूकान से खरीदारी नहीं करते!"

•

मुसाफिर खाने में बैठे एक यात्री ने अपने झोले में से एक केला निकाला और छिलके सहित उसे खाने लगा. यह देखकर बगल में बैठे आदमी से रहा नहीं गया. बोला, "अरे भाई, इसे छील तो लिया होता!"

"क्यों, किसलिए छीलूं, जब कि मुझे पता है कि इसके अंदर क्या होता है!"

•

रमेश ने बी. ए. पास किया था. नौकरी के लिए चक्कर लगाते-लगाते वह परेशान हो चुका था. एक दिन वह एक फैक्टरी में गया और एक चपरासी से उसने पूछा, "क्यों, भाई, बी. ए. पास के लिए जगह है यहां?"

"अभी तो नहीं, हां, कल तक जरूर हो जाएगी. अगर आज मैनेजर ने मेरी तनख्वाह नहीं बढ़ाई, तो कल मैं इस्तीफा दे दूंगा!"

•

एक चोर एक बैंक में घुसा. तिजोरी पर उसने पढ़ा—"घुंडी को दाईं ओर घुमाओ, तिजोरी अपने आप खुल जाएगी." चोर बड़ा खुश हुआ. उसने घुंडी घुमाई मगर अफसोस! चारों तरफ तेज रोशनी हो गई. अलार्म की घंटियां भी बज उठीं. चोर पकड़ा गया.

अदालत में जब जज ने उससे पूछा कि तुम्हें अपने अपराध के बारे में क्या कहना है, तो वह बड़ी मायूसी के साथ बोला, "क्या कहूं, साहब, दुनिया बड़ी धोखेबाज है!"

•

णा वल्लभ

गया और वह

"तो तुमने उसे

चलकर कश्मीरी
"

और थोड़ी देर
यत करने लगी.
सकती, इसलिए

र दिया, "ऐसे
दूकान से खरी-

अपने झोले
लके सहित उसे
मी से रहा नहीं
लिया होता!"
पता है कि इसके

ौकरी के लिए
चुका था. एक
पराती से उसने
हगह है यहां?"
र हो जाएगी.
बढ़ाई, तो कल

र उसने पढ़ा—
अपने आप खुल
ड़ी घुमाई मगर
गई. अलार्म की

कि तुम्हें अपने
ह बड़ी मायूसी
या बड़ी धोखे-

शीर्षक प्रतियोगिता—२७

फोटो : एम. एस. होरा

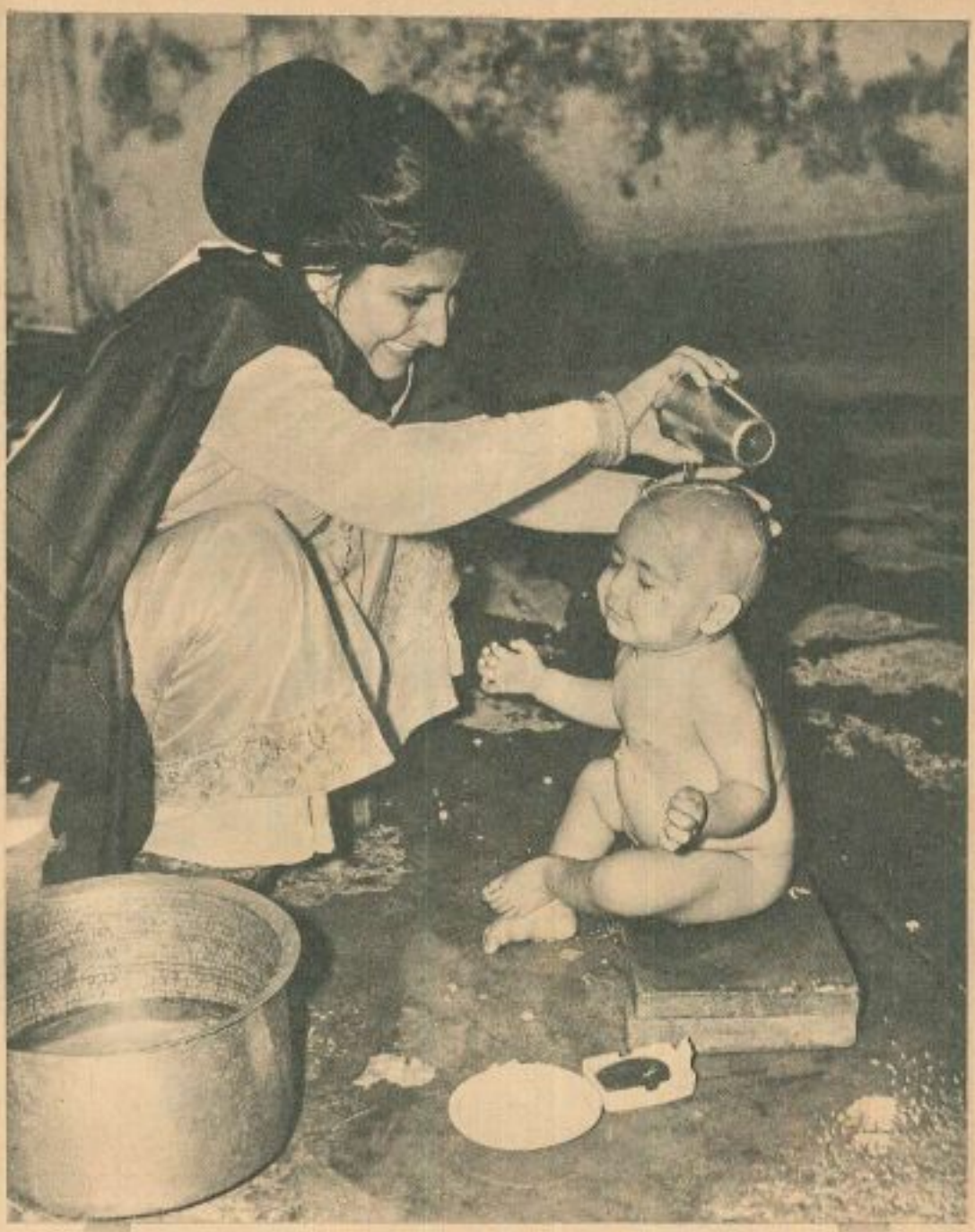

इस चित्र का शीर्षक बताइए

ऊपर के चित्र को देखिए और जरा सोचकर इसका एक बढ़िया और फड़कता हुआ शीर्षक बताइए. अपने उत्तर एक सबसे अलग पोस्ट कार्ड पर लिखकर हमें २० मई तक भेज दीजिए. सबसे बढ़िया शीर्षक पर दस रुपये के मूल्य की पुस्तकें पुरस्कार में मिलेंगी. हां, कार्ड पर अपना नाम और पता लिखना मत भूलिए. शीर्षक के कार्ड इस पते पर भेजिए: संपादक, 'पराग' (शीर्षक प्रतियोगिता-२७), पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बंबई—१.

कहानी

रिश्वत एक प्यारी-सी

• मालती जोशी

kissekahani.com

पड़ोस का रेडियो जोर से चीख रहा था—

'सात समंदर पार से, गुड़ियों के बाजार से,
अच्छी-सी गुड़िया लाना, प्यारी-सी गुड़िया लाना;
पप्पा जल्दी आ जाना...'

रेणु का मन हुआ, रेडियो के साथ सुर मिलाकर वह भी चीखे—पप्पा जल्दी आ जाना, मम्मी जल्दी आ जाना... पर आवाज उसके गले में फंसकर रह गई. हमेशा कैंची की तरह चलने वाली उसकी जबान चुप-सी हो गई थी. मन रोने-रोने को हो रहा था, पर आंखों में आंसू जमकर रह गए थे.

"रेणु!...चल, खाना खा ले."

दीदी की आवाज कान में पड़ी, तो वह चौंकी. सच, उसने सुबह चाय के बाद से कुछ लिया ही नहीं था. पर भूख भी तो जैसे गायब हो गई थी. वह चुपचाप

दीदी के पीछे चल दी.
चल रहा था कि वह
पर उसे कुछ पूछने का
रसोई में चाची फु
भी लाल हो रही थीं.
नहीं था. रेणु को इतना
उसे ठीक से कुछ बताता
लगातार रोए जा रही हैं.
देकर बैठी हैं. चाचा जी
वाले चले आ रहे हैं. औ
मना दिया जाता है.
भाड़ में जाए ऐसी
साथ कलकत्ते चली जाते
शादी देख आती और इस
दादी बेचारी कहती रह
चौथी की परीक्षा कैसी?
की रौनक देख लेगी.'
निकले कि ढेर सारे खि
छुड़ाकर चले गए.
और अब है कि आ
तो तार भी आ गया था
तभी पूजाघर से दा
सुनाई दी— "हे भोले बा
मंदिर पर ग्यारह ब्राह्मणों
दीदी का कौर हाथ
देखती रह गई.
"मां जी!" चाची ने
"लड़कियों का तो कुछ
सुबह से अभी तो कुछ मुंह
पर बात पूरी करते-करते
गला भर आया.
दोनों बहनें खाने प
हाथ धोते हुए रेणु को य
उसके खाने के समय दो
छीना-झपटी तो हुई ही नह
से पूछा— "चाची, बबलू
"पड़ोस में है."
वह दौड़कर पड़ोस में
आंटी बबलू को गोद में
आंटी से बातें कर रही थ
कर एकदम चुप हो गई.
रेणु चुपचाप लौट आई.
मुंह से उसने पापा के नाम
एक्सीडेंट शब्द भी सुना
सुबह कुछ इसी तरह की
था. खबर इतनी भीषण थी
से कुछ पूछने की हिम्मत ही
उसने किसी पि
का टकराना देखा था.
भयानक दृश्य था!

दीदी के पीछे चल दी. दीदी की आंखों से साफ पता चल रहा था कि वह अभी-अभी खूब रोकर चुकी हैं. पर उसे कुछ पूछने का साहस नहीं हो रहा था.

रसोई में चाची फुलके उतार रही थीं. आंखें उनकी भी लाल हो रही थीं. चाचा जी का सुबह से कहीं पता नहीं था. रेणु को इतना गुस्सा आ रहा था कि कोई उसे ठीक से कुछ बताता क्यों नहीं. दीदी और चाची लगातार रोए जा रही हैं. दादी ठाकुर जी के सामने धरना देकर बैठी हैं. चाचा जी हैं कि एक दम गायब हैं. मिलने वाले चले आ रहे हैं. और उसे बार-बार पढ़ने के बहाने भगा दिया जाता है.

भाड़ में जाए ऐसी पढ़ाई. इससे तो मम्मी-पापा के साथ कलकत्ते चली जाती, तो ठीक था. मामा जी की शादी देख आती और इस पढ़ाई से भी पीछा छूट जाता. दादी बेचारी कहती रह गई थीं— 'अरे, मरी तीसरी-चौथी की परीक्षा कैसी? साथ ले जाओ. लड़की शादी की रौनक देख लेगी.' लेकिन मम्मी-पापा ऐसे पक्के निकले कि ढेर सारे खिलौनों का बाबा करके पीछा छुड़ाकर चले गए.

और अब हैं कि आने में देर किए जा रहे हैं. कल तो तार भी आ गया था कि आ रहे हैं.

तभी पूजाघर से दादी की सिसकियों-भरी गुहार सुनाई दी— "हे भोले बाबा, मेरे बेटा-बहू लौटा दे! तेरे मंदिर पर ग्यारह ब्राह्मणों को खाना खिलाऊंगी!"

दीदी का कौर हाथ से छूट गया. रेणु टुकुर-टुकुर देखती रह गई.

"मां जी!" चाची ने गुस्से में कहा. "लड़कियों का तो कुछ खयाल कीजिए. सुबह से अभी तो कुछ मुंह में गया है. . ." पर बात पूरी करते-करते खुद उनका ही गला भर आया.

दोनों बहनें खाने पर से उठ आईं. हाथ धोते हुए रेणु को याद आया, आज उसके खाने के समय दो नन्हे हाथों की छीना-झपटी तो हुई ही नहीं. उसने चाची से पूछा—"चाची, बबलू कहां है?"

"पड़ोस में है."

वह दौड़कर पड़ोस में पहुंची. मिश्रा आंटी बबलू को गोद में लिये सक्सेना आंटी से बातें कर रही थीं. रेणु को देखकर एकदम चुप हो गईं. बबलू को लेकर रेणु चुपचाप लौट आई. मिश्रा आंटी के मुंह से उसने पापा के नाम के साथ-साथ एक्सीडेंट शब्द भी सुना था. अनिल भी सुबह कुछ इसी तरह की बात कर रहा था. खबर इतनी भीषण थी कि उसे किसी से कुछ पूछने की हिम्मत ही न होती थी.

उसने किसी पिक्चर में रेलों का टकराना देखा था. बाप रे! कैसा भयानक दृश्य था! उसकी कल्पना से भी डर लगता है. उसकी नन्ही-सी जान के लिए पहले ही क्या कम दुःख थे. रोज सुबह उठकर स्कूल के लिए तैयार होना पड़ता था; शाम को जब मोहल्ले के बच्चे खेलते होते, उसे मास्टर जी के पास पढ़ना पड़ता था; दीदी जब-तब सहेलियों के साथ सिनेमा चली जाती थीं, पर उसे कोई सहेलियों के साथ पार्क तक भी जाने नहीं देता था; घर में रेडियो था, टेप रेकार्डर था, प्रेस थी, पर मजाल क्या कि कोई उसे हाथ भी लगाने दे; कैमरा, थर्मामीटर जैसी चीजें तो उसकी पहुंच से सात हाथ ऊपर रखी जाती थीं.

पर इस नए दुःख के सामने ये सारी तकलीफें कितनी छोटी लग रही थीं! रेणु का मन विचारों में बहा जा रहा था. उसे होश भी नहीं था कि उसकी गोद में बबलू है. पर बबलू मियां इतने सीधे नहीं थे. बेचारे को भूख भी लग रही थी. उन्होंने रोकर, रेणु के बाल नोंच कर उसे अपनी बात समझाई और फिर चाची को देखते ही उसने तार सप्तक में रोना शुरू कर दिया. और दिन होता तो दादी उसके रोने को लेकर घर में तूफान मचा देतीं. सौ काम छोड़कर चाची को उसे चुप कराना पड़ता. दादी की यही रट रहती— 'घर में ले-दे कर एक ही लड़का है, पर दोनों मिलकर उसे भी संभाल नहीं सकतीं.'

पर आज का दिन ही कुछ और तरह का था. बबलू का रोना सुनकर दादी चिल्ला पड़ीं—"चुप रह करम-जले! आते ही मेरे बेटे को खा गया. . .!"

चाची बेचारी को एकदम रोना आ गया. दीदी ने बबलू को रेणु की गोद से छीनकर चाची को दे दिया—"तुम इसे लेकर कमरे में जाओ, चाची, रसोई में समेट लूंगी. दादी का दिमाग आज ठिकाने नहीं है."

यह सब कुछ इतना अजीब-सा लग रहा था कि रेणु का घर में दम घुटने लगा. बाहर खेलने निकल गई, तो देखा, बच्चे उसे देख अजीब-सी शकल बना लेते हैं. कुछ ने तो ऐसे ऊटपटांग प्रश्न पूछे कि वह परेशान हो गई. वापस लौटकर पढ़ने बैठी, तो एक अक्षर भी पढ़ा नहीं गया. कल पेपर था और पढ़ाई का यह हाल था. आखिरकार भूगोल की किताब लेकर वह छत पर चली गई. पढ़ने को तो वह पढ़ रही थी, पर उसके कानों में दादी के शब्द गूंज रहे थे—'मेरे बेटे को खा गया!' तो क्या सचमुच पापा. . .

इस कल्पना मात्र से ही उसके रोंगटे खड़े हो गए और मुंडेर पर सिर रखकर वह चुपचाप बैठी रही.

"तुलसी महारानी! बुढ़ापे में किस अपराध की सजा मुझे दे रही हो, मैया!" दादी की आवाज सुनकर रेणु ने नीचे झांका. दादी तुलसी के चौरे के पास खड़ी आंसू बहा रही थी. अब दिन ढले उन्होंने ठाकुर जी के कमरे के बाहर पैर रखा था. रेणु को उन पर दया हो आई. बेचारी सुबह सवेरे उठकर नहाती हैं, दो-दो घंटे पूजा करती हैं, रोज पांच देवताओं के दर्शन करती हैं, शाम को तुलसी पर दिया जलाती हैं, भला वह कोई अपराध कैसे कर सकती हैं? फिर भगवान उन्हें ऐसी सजा क्यों दे रहे हैं?

और सजा क्या अकेले उन्हीं को मिल रही थी. रेणु, दीदी, चाचा जी—सभी के लिए होगी यह सजा. तो क्या सबों ने कोई अपराध किया होगा?

रेणु बेचारी तो कभी कोई गलत काम नहीं करती. नियम से स्कूल जाती है. स्कूल से जो होम वर्क मिलता है, पहले उसे करती है, तभी खेलने निकलती है. दोनों वक्त भगवान के सामने हाथ जोड़ती है, बड़ों के पैर छूती है. जो भी काम कहा जाता है फौरन कर देती है. बड़ों को जवाब नहीं देती. . .पर यह सब सोचते हुए रेणु को अपने कितने ही गलत काम भी याद आने लगे.

एक बार मम्मी ने साबुन मंगाया था. उस दिन पांच पैसे बच गए थे. उसने टॉफी लेकर खा ली थी. छुपाने का इरादा भी नहीं था, पर मम्मी ने हिसाब ही नहीं मांगा. रेणु भी भूल गई थी.

एक बार पेन में स्याही भरने के चक्कर में ढेर की ढेर स्याही पापा की मेज पर गिर गई थी. पापा घंटों चीखते रहे, पर डर के मारे उसने बताया ही नहीं. बेचारे नाथू पर बेकार की डांट पड़ी.

और एक बार सुस्मिता की डेस्क से इमली चुराई थी; रुखसाना की कापी से गणित के सवाल टीप लिये थे; होम वर्क करना भूल गई थी सो एक बार टीचर जी से झूठमूठ बुखार का बहाना बना दिया था.

बाप रे! ये सारी छोटी-छोटी गलतियां आज कितनी बड़ी लग रही थीं. मम्मी कहती हैं भगवान सब को देखते रहते हैं. जरूर भगवान ने इन सारी बातों को नोट कर लिया है. तभी नाराज होकर उन्होंने उसे सजा देने का फैसला कर लिया है.

अंधेरा घिर आने पर जब वह नीचे उतरी, तो उसका मन बुरी तरह कांप रहा था. ठाकुर जी के सामने वह देर तक बैठकर अपनी गलतियों के लिए माफी मांगती रही. आगे से खूब अच्छी लड़की बनने का वचन उसने भगवान को दिया, तब कहीं जाकर मन को थोड़ा संतोष हुआ.

रात जब दीदी के पास सोई, तो उन्होंने उसे एकदम से भींच लिया. दीदी के गले से लगकर सोते हुए उसे लगा कि उनके सिवाय अब संसार में उसका कोई नहीं है.

"दीदी!" उसने कांपती आवाज में कहा.

"हूं!"

"दूसरों की चिट्ठियां पढ़ना बुरा होता है न?"

"हां, होता तो है. क्यों?" दीदी ने पूछा.

"एक बार आपने मिश्री दीदी के लिए चिट्ठी दी थी न. वह हमने पढ़ ली थी!" दीदी के कुछ कहने की प्रतीक्षा में वह कुछ देर रुकी. पर दीदी चुप ही रहीं.

"और हूं न, दीदी, आपकी नीले फूलों वाली गुलाबी साड़ी हमने एक दिन पहन ली थी. हमसे जरा-सी फट भी गई थी. . पांव में आ गई थी न!"

दीदी फिर भी चुप ही रहीं और धीरे-धीरे उसके बालों में हाथ फेरने लगीं. इतनी बड़ी बात सुनकर भी वह कुछ नहीं बोलीं. रेणु ने समझ लिया कि उसे माफ कर दिया गया है और वह निश्चिंत होकर सो गई.

●

दूसरे दिन वह रोज की तरह उछलकर बिस्तर से उतरी, पर पिछले दिन की ही तरह घर का हाल देख वह भी मुंह लटकाकर अपने काम में लग गई.

अब चाचा जी का इंतजार था. जब से गए थे, उन्होंने तार, टेलिफोन, कुछ भी नहीं किया था. दादी का गुस्सा कभी बकझक का रूप ले रहा था कभी रोने का. रेणु का दिल हुआ, पेपर को गोली मारी जाए. पढ़ाई तो कुछ हुई नहीं थी. पर दीदी ने जैसे-तैसे ठेल-कर उसे स्कूल भेजा. जैसे भी बना उसने पेपर किया और घंटी बजते ही वह घर की ओर दौड़ी.

घर में प्रवेश करते ही एक साथ कई आवाजों की भनक उसके कान में पड़ी. ड्राइंग रूम खचाखच भरा था. पूरा मोहल्ला ही इकट्ठा हो गया था. पापा आराम कुर्सी पर लेटे थे. उनकी एक बांह पट्टियों में बंधी गले से लटक रही थी. चेहरे पर एक-दो चिप्पियां लगी थीं. दीदी उनके पांवों में आयोडक्स मल रही थीं. मम्मी पलंग पर लेटी थीं. पट्टियों से जकड़ा उनका सिर चाची की गोद में रक्खा हुआ था. वह उन्हें चम्मच से कुछ पिला रही थीं. रेणु पहले तो कुछ देर तक

सहमी-सी दरवाजे पर
लिपट गई.

"आह, मेरी मुनिय
से लगा लिया. कुछ
किया—"रेणु बेटी,

रेणु दूर तो हो
उसे लगा कि कब सब
पापा से जी भर कर

भीड़ छंटते-छंटते
कहा—"देखना, भैया,
होगी. जरूर आना.

"अम्मा, यह क
न, कि ग्यारह ब्राह्मण

"तू अपनी टांग
को जोर से डांट दिया.
रोती रही है.) "क
ब्रह्मभोज है, यह क

"सो तो है, मां,
अभी तो सिर्फ दो ही
करती है?"

पापा की बात प
बबलू को लेकर वहां
कोस रही थी और आ

"पापा, आप म
मैं भी सवा पांच
कालेज के सामने वाले
दीदी ने कहा. पापा
देखकर चुप ही रह
एक चपत लगा दी.

मम्मी के हाथों
से शरमा के बोलीं—
तब हम दोनों हर
भैया की गोद भरवानी

मम्मी ने प्यार से
"बड़ी पुरखिन बन रहे

"और अपनी
पहुंचने के लिए उन्हों

"अब आप चुप
पुण्यों से बच्चों के बी
मम्मी ने गुस्से में कहा

पापा फिर भी
को आते देखकर

"अरे, कहां गाय
इंतजार करते रह गए

"जरा काम से
कहा. फिर मम्मी के
मुंह खोलो. वह मुरल
मूत है. जरा-सा ले लो

"लाला जी,
सभी को आश्चर्य हो

था.
मां आज कितनी
भगवान सब को
री बातों को नोट
उन्होंने उसे सजा

नीचे उतरी, तो
ठुर जी के सामने
ी के लिए माफी
ी बनने का वचन
जाकर मन को

न्होंने उसे एकदम
कर सोते हुए उसे
का कोई नहीं है.
में कहा.

होता है न?"
ी ने पूछा.
लिए चिट्ठी दी
कुछ कहने की
दी चुप ही रहीं.
लों वाली गुलाबी
ने जरा-सी फट भी

धीरे-धीरे उसके
ी बात सुनकर
स लिया कि उसे
त होकर सो गई.

इलकर बिस्तर से
घर का हाल देख
लग गई.
से गए थे, उन्होंने
था. दादी का
था कभी रोने
ोली मारी जाए.
ी ने जैसे-तैसे ठेल-
उसने पेपर किया
ोर दौड़ी.
कई आवाजों की
न खचाखच भरा
गया था. पापा
क बांह पट्टियों में
एक-दो चिण्यां
ोडक्स मल रही
ट्टियों से जकड़ा
हुआ था. वह उन्हें
ले तो कुछ देर तक

सहमी-सी दरवाजे पर खड़ी रही. फिर दौड़कर मम्मी से लिपट गई.

"आह, मेरी मुनिया!" कहते हुए मम्मी ने उसे छाती से लगा लिया. कुछ देर बाद चाची ने उसे धीरे से दूर किया— "रेणु बेटी, मम्मी को चोट लगी है न!"

रेणु दूर तो हो गई, पर वहीं पलंग पर बैठी रही. उसे लगा कि कब सब बाहर चले जाएं और वह मम्मी-पापा से जी भर कर बातें करे.

भीड़ छंटते-छंटते शाम हो गई. दादी ने हरेक से कहा—"देखना, भैया, इस पूर्णमासी को मेरे यहां कथा होगी. जरूर आना. निमंत्रण की राह मत देखना."

"अम्मा, यह कथा कैसी? तुम तो कह रही थीं न, कि ग्यारह ब्राह्मण मंदिर में . . ."

"तू अपनी टांग मत अड़ाया कर!" दादी ने पापा को जोर से डांट दिया. (और कल इन्हीं के लिए दिन भर रोती रही है.) "कथा का उससे क्या संबंध है? वह ब्रह्मभोज है, यह कथा है. . ."

"सो तो है, मां, लेकिन तैंतीस करोड़ देवताओं में से अभी तो सिर्फ दो ही निपटे हैं. औरों को नाराज क्यों करती हैं?"

पापा की बात पर दादी ने मुंह बिचका लिया और बबलू को लेकर वहां से चल दीं. कल तो बेचारे को कैसा कोस रही थीं और आज एक पल को नीचे नहीं उतारेंगी.

"पापा, आप मजाक नहीं बनाना, इस मंगलवार को मैं भी सवा पांच रुपये का प्रसाद चढ़ाऊंगी. अपने कालेज के सामने वाले हनुमान जी से हमने बोला है!" दीदी ने कहा. पापा शायद कुछ कहते, पर दीदी का चेहरा देखकर चुप ही रह गए. बस प्यार से उसके सिर पर एक चपत लगा दी.

मम्मी के हाथों की मालिश करते हुए चाची धीरे से शरमा के बोलीं—"जीजी, आप अच्छी हो जाएं, तब हम दोनों हरसिद्धि पर चलेंगी. आपके हाथों से भैया की गोद भरवानी है. एक जोड़ा भी चढ़ाना है."

मम्मी ने प्यार से चाची का गाल थपथपा दिया— "बड़ी पुरखिन बन रही है तू तो!" चाची हंसकर रह गई.

"और अपनी जीजी से भी तो पूछो, घर सकुशल पहुंचने के लिए उन्होंने किस-किसको रिश्वत दी है?"

"अब आप चुप भी रहिए! पता नहीं, किसके पुण्यों से बच्चों के बीच फिर लौटकर आ पाए हैं!" मम्मी ने गुस्से में कहा.

पापा फिर भी शायद कुछ कहते, पर चाचा जी को आते देखकर रुक गए.

"अरे, कहां गायब हो गए थे? सब लोग खाने पर इंतजार करते रह गए . . ." पापा ने कहा.

"जरा काम से चला गया था," उन्होंने धीरे से कहा. फिर मम्मी के पास आकर बोले—"भाभी, जरा मुंह खोलो. यह मुरली मनोहर का प्रसाद और चरणामृत है. जरा-सा ले लो."

"लाला जी, तुम और परसाद!" मम्मी ही क्या, सभी को आश्चर्य हो रहा था! चाचा जी थे ही ऐसे.

शैतान की खोज—

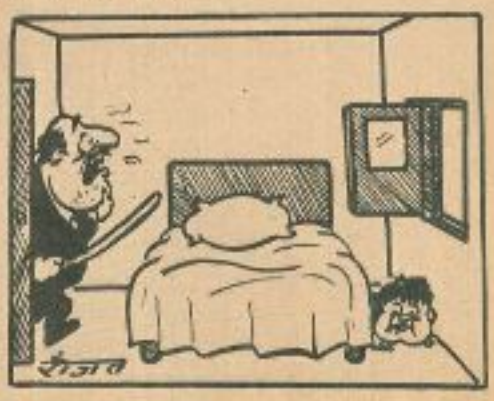

ऐं. . .खिड़की से तीन मंजिल नीचे कूदकर भाग गया. . .! शैतान कहीं का!

दादी सिर पटककर रह जातीं, पर वह कभी पूजाघर में पांव नहीं देते थे. किसी मंदिर की तरफ देखते तक न थे. और वही चाचा जी मुरली मनोहर का प्रसाद लाए! आश्चर्य तो होना ही था.

"हां, भाभी, उस दिन यहां से चला था, तो अचानक मंदिर पर नजर पड़ गई. मैंने कहा—"भगवान, अगर भैया-भाभी को लेकर लौटा, तो तुम्हारे दर्शन करने के बाद ही भोजन करूंगा. . ." रुलाई के मारे उनकी बात अधूरी रह गई. सबकी आंखों में आंसू आ गए.

रेणु को पता ही न चला, कब वह मम्मी के पास से उठकर पापा के पास आ गई थी.

"रेणु बेटी," पापा ने उसका सिर थपथपाते हुए पूछा— "देखो, सभी ने हमारे लिए भगवान को कुछ न कुछ रिश्वत दी है. तुमने कुछ नहीं दिया?" पापा बात मजाक की कर रहे थे, पर उनकी आवाज एकदम बदली हुई थी. उनकी इस आवाज ने रेणु को सोचने पर मजबूर कर दिया. सचमुच, उसने तो भगवान को कुछ भी देने का वादा नहीं किया. उसे याद ही नहीं रहा. उसे कितनी शर्म आ रही थी.

"पापा . . ." पापा के गले में हाथ डालकर उसने धीरे से कहा. "मिन्नत की तो हमें याद ही नहीं रही, पापा. हमने तो सिर्फ ठाकुर जी से अपनी गलतियों की माफी मांगी थी और . . . और अच्छी लड़की बनने का वादा किया था, पापा."

"मेरी बच्ची, उसकी जरूरत ही क्या थी! सबसे प्यारी रिश्वत तो तूने ही उसे दी है. तेरी मम्मी ठीक कहती हैं, पता नहीं, किस के पुण्य हमें लौटाकर लाए हैं! क्या पता वह तेरे ही पुण्य हों!"

पापा धीरे-धीरे बोल रहे थे उसके सिर पर हाथ फेरते हुए. रेणु की समझ में कुछ नहीं आ रहा था.

पर इससे क्या फर्क पड़ता था. ●

१०५/१२ दक्षिण तांत्या टोपे नगर, भोपाल.

kissekahani.com

बंगला कहानी

सी के पी के टी के

सुनने में बड़ा अजीब-सा लग रहा होगा शायद. पर संधि तोड़ते ही बात सरल हो जाती है. एक का नाम है चंद्र कुंडु, संक्षेप में सी. के.; एक का नाम है पूर्ण कोनार, संक्षेप में पी. के.; एक का नाम है तपन कर, संक्षेप में टी. के.; सब मिलाकर सीकेपीकेटीके. किंतु समझाने के लिए संधि-विग्रह की क्रिया जितनी सरलता से हो गई, वास्तव में बात उतनी सरल है नहीं. क्योंकि उनकी संधि में विग्रह का कोई स्थान नहीं. इसकी चेष्टा करना भी खतरे से खाली नहीं. सीकेपीकेटीके अविच्छेद्य हैं, उनके बीच के कामा-फुलस्टाप भी गायब हो गए हैं. तीनों मिलकर एक अदम्य शक्ति हैं वे—शत्रुओं के त्रास, मित्रों के परम आश्रय.

किंतु मित्र भी पीठ पीछे उनकी निंदा करने से बाज नहीं आते. सचमुच वे मुहल्ले वालों के लिए एक समस्या बन गए हैं. इसलिए उनके विनाश में ही वे अपना कल्याण देखते हैं. कारण, आज जो मित्र है, कल वही शायद शत्रु बन जाए. थोड़ी-सी भी त्रुटि वे बरदाश्त करने को तैयार नहीं हैं. विचारक भी वे ही हैं, दंडदाता भी वे ही. ऐसी हालत में अपनी खैर के लिए दुम दबाकर भाग जाने के अलावा और कहीं अपील नहीं.

दृष्टांत के लिए सूर्यनंदी की दुर्दशा की कहानी ली जा सकती है. कितने बड़े आदमी की कितनी बुरी हालत हो गई, जबकि सीकेपीकेटीके को छू तक नहीं सका कोई. पर असली रहस्य को कौन नहीं जानता था? मुहल्ले के एक नामी-गिरामी आदमी हैं सूर्यनंदी. बहुत पैसे वाले हैं. महलनुमा मकान है, दो कारें हैं. पुश्तैनी बड़ी जायदाद तो है ही, तिस पर अपना भी जमा-जमाया बहुत बड़ा कारोबार है. ईर्ष्यालु लोग कहा करते हैं कि व्यापार के 'सफेद' रास्ते से सूर्यनंदी का बैंक में जितना रुपया जमा होता है, उसका चौगुना 'काले' रास्ते से उसके घर में आता है. ठीक तैंतीस साल की उम्र में इस सूर्यनंदी महाशय के मन में एक नए संकल्प का उदय हुआ. उसके पास बेहद दौलत है, आलीशान मकान है, 'लेटेस्ट माडल' की गाड़ियां हैं, लेकिन दस भले आदमियों के बीच में मिलने वाली प्रतिष्ठा कहां है? किसी

तरह रुक-रुककर अठारह
पास करके ही अपने व्यापा
मुहल्ले के पढ़े-लिखे लोगों से

अपनी इस मानसिक
सूझी वह बात. चुनाव की
नंदी ने तय किया कि चुन
के लिए किसी दलबल की
वह निर्दलीय उम्मीदवार
होगा. अपने क्षेत्र से वह अग
सकेगा उससे? यानी और
है इतनी? चुनाव में दो-ती
बात है? एक बार चुनाव
की कोई कमी न रहेगी. बि
बाद, अगर किस्मत ने स
से भिड़कर मिनिस्टर-बि
तब तो उसकी पांचों उंगलि

प्रस्ताव सुनकर उ
हुए, और वे ही ले आए सं
पर भी वे ही मुहल्ले के न
इधर के पूरे इलाके पर उन
के लिए वोट मांगें, तो वि
दूसरी पेटी में अपने वोट
इलाके के दूसरे छोकरे
मानने लगे हैं.

—आशुतोष

तरह रुक-रुककर अठारह साल की उम्र में मैट्रिक पास करके ही अपने व्यापार में लग गया है, इसलिए मुहल्ले के पढ़े-लिखे लोगों से कोई संपर्क नहीं है.

अपनी इस मानसिक दशा में एकाएक सूर्यनंदी को सूझी वह बात. चुनाव की तैयारी हो रही थी तब. सूर्यनंदी ने तय किया कि चुनाव लड़ेगा वह. उम्मीदवारी के लिए किसी दलबल की खुशामद नहीं होगी उससे. वह निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में अपने बल पर खड़ा होगा. अपने क्षेत्र से वह अगर खड़ा होजाए, तो कौन जीत सकेगा उससे? यानी और किस के पास रुपये की ताकत है इतनी? चुनाव में दो-तीन लाख फूंक देना कौन बड़ी बात है? एक बार चुनाव में जीत गया, तो इज्जत-असर की कोई कमी न रहेगी. बिना मांगे मिलेंगी. और इसके बाद, अगर किस्मत ने साथ दिया, तो किसी दलबल से भिड़कर मिनिस्टर-विनिस्टर भी बन सकता है. तब तो उसकी पांचों उंगलियां घी में होंगी.

प्रस्ताव सुनकर उसके चापलूस दोस्त बहुत खुश हुए. और वे ही ले आए सीकेपीकेटीके को. उम्र कम होने पर भी वे ही मुहल्ले के नामी मस्तान (छोकरे गुंडे) थे. इधर के पूरे इलाके पर उनकी धाक थी. वे अगर सूर्यनंदी के लिए वोट मांगें, तो किसी की हिम्मत नहीं कि किसी दूसरी पेटी में अपने वोट का कागज डाल दें. इस समूचे इलाके के दूसरे छोकरे गुंडे इन तीनों को अपना गुरु मानने लगे हैं.

लिहाजा नंदी बाबू के यहां सीकेपीकेटीके की खातिरदारी के क्या कहने! खुद मकान मालिक उनके कंधे पर हाथ रखकर याराना तरीके से बातचीत करने लगे. इसका नतीजा यह हुआ कि नौकर-चाकरों ने उन्हें देखते ही उठते-बैठते सलाम बजाना शुरू कर दिया.

कई महीने बड़े मजे में कटे सीकेपीकेटीके के. सूर्यनंदी ने एक जीप दे रखी थी उन्हें. चलना-फिरना उसी पर होता था उनका. दोनों जून नंदी भवन में तर माल छकते थे और पैकेट पर पैकेट बढ़िया सिगरेट फूंकते थे. इसके अलावा नोटों की कुछ गड्डियां भी उनकी जेबों में पहुंच चुकी हैं. अपने सब शागिर्दों को अच्छी रकम दिलवाई सीकेपीकेटीके ने. सूर्यनंदी सरीखे दरियादिल किसी इनसान से अब तक साबका नहीं पड़ा था उनका.

उन्होंने भी विश्वासघात नहीं किया था. दूसरे उम्मीदवारों के दीवारों पर लगे सब पोस्टर फाड़कर सड़क के दोनों ओर के मकानों को उन्होंने सूर्यनंदी के पोस्टरों से भर दिया. दरवाजे-दरवाजे पर जाकर उन्होंने मतदाताओं से वोट मांगा और उन्हें आगाह कर दिया कि वे सूर्यनंदी को सब से काबिल उम्मीदवार समझते हैं, इसलिए वोट उसे ही दिया जाए. साथ ही करीब-करीब सब जगह यह भी कह आए कि वोट के दिन दरवाजे पर गाड़ी मौजूद रहेगी, उसीपर चढ़कर वोट देने जाएं सब. वोट न देने की बात किसीने नहीं कही उनके मुंह पर. बल्कि सबने यही कहा कि सूर्यनंदी को ही वोट देंगे.

—आशुतोष मुखोपाध्याय—

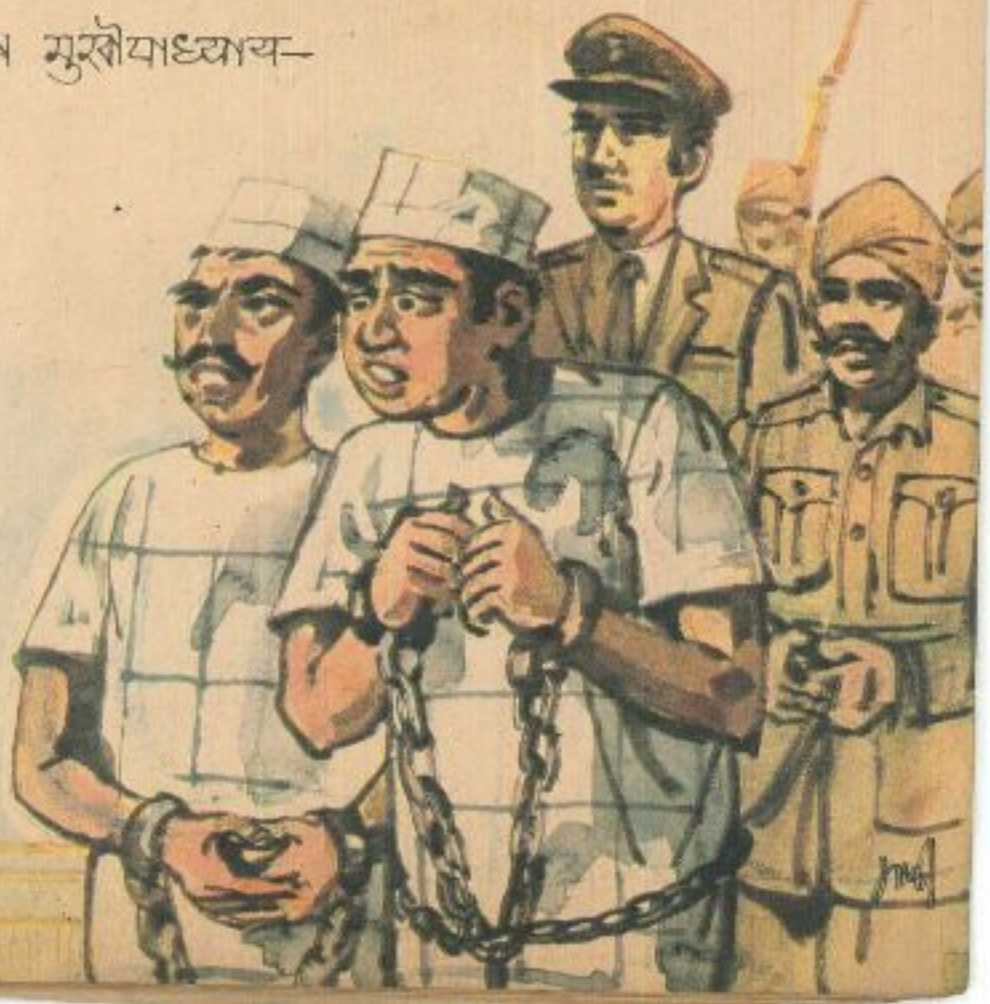

पर चुनाव का नतीजा निकलने पर हैरत में आ गए सीकेपीकेटीके. सूर्यनंदी हारे ही नहीं, उनकी जमानत भी जब्त हो गई थी.

किससे बदला लें सीकेपीकेटीके? हरेक आदमी उन्हें यही यकीन दिलाता कि सिर्फ उसीने उनके उम्मीदवार को वोट दिया है और दूसरों ने गद्दारी की है.

तभी से सूर्यनंदी की आंखों में खटकने लगे हैं वे. धीरे-धीरे उसके बरताव से क्रुद्ध होने लगे सीकेपीकेटीके. पहचान ही नहीं पाता अब वह उन्हें. उन्हें देखकर दूसरी ओर मुंह फेर लेता है.

यहां तक तो सहन कर लिया उन्होंने. पर कुछ दिन बाद एक खबर पहुंची उनके कानों में, जिससे उनका खून गरम हो गया. थाने में एक नए अफसर आए हैं, उनसे अच्छा खासा रबतजब्त हो गया है सूर्यनंदी का. उनसे इन तीनों की शिकायत की है सूर्यनंदी ने और उन्हें ठीक कर देने की प्रार्थना भी. वह इनका नाम-पता लिख ले गए हैं. थाने के एक कर्मचारी से यह खबर मिली है उन्हें.

सूर्यनंदी का दुर्भाग्य! थाने के वह अफसर किसी मामले में फंस गए और उसकी जवाबदेही करते-करते परेशान हो गए. उन्हें फुरसत ही नहीं मिली उन उद्दंड छोकरों को बुलाकर ठीक कर देने की. इसी बीच उनका तबादला भी हो गया वहां से. इसके सात दिन बाद ही सीकेपीकेटीके ने मुहल्ले में यह घोषणा की कि वे कुछ दिन के लिए दीघा जा रहे हैं घूमने.

•

तभी एक दिन एकाएक मुहल्ले में कोहराम मच गया. सूर्यनंदी रोज मुंह अंधेरे कार से खेल के मैदान में घूमने आया करता था. शरीर की बढ़ती हुई चर्बी को ढीला करने के लिए डाक्टर ने उसे यह सलाह दी थी. उस दिन भी गया था. जब ड्राइवर ने देखा कि घंटे भर बाद भी मालिक नहीं लौटे, तो उसे खोजने वह कार छोड़कर मैदान में गया. लेक के उस पार लोगों की एक भीड़ देखकर वह उधर ही चला गया. वहां जाकर उसने जो भीषण दृश्य देखा, उससे स्तंभित हो गया वह. जमीन पर बेसुध पड़ा है उसका विशालदेही मालिक. कपड़े तरबतर हो गए हैं खून से. सिर फट गया है, दोनों पैरों को एकदम कुचल डाला गया है.

इसके बाद अस्पताल. सूर्यनंदी की जान तो बच गई, लेकिन एक पैर कमजोर हो गया और दूसरे को आधा काटकर लकड़ी का पैर लगाना पड़ा है. थोड़ा स्वस्थ होने के बाद पुलिस को उसने जो बयान दिया उसका सार यह है : यकायक पीछे से सिर पर लोहे के डंडे का वार खाकर वह जमीन पर गिर पड़ा. अचेत होने के कुछ क्षण पहले उसने दो या तीन आक्रमणकारियों को देखा था जिनके चेहरे काले कपड़ों से ढंके थे. जमीन पर गिरते ही उसपर दनादन डंडे पड़ने लगे. वह बेसुध हो गया.

किस पर या किन पर उसे शक है, पूछे जाने पर वह सीकेपीकेटीके का नाम बताने जाकर भी डर कर चुप हो गया. पुलिस पर से उसका विश्वास हट गया था. इस बार तो जान बच गई. इसके बाद क्या होगा, कौन जाने. हालांकि वह निश्चित रूप से जानता था कि सीकेपीकेटीके के अलावा ऐसा दुःसाहसपूर्ण कार्य और कोई नहीं कर सकता. उनके ऊपर शक न हो, इसलिए वे दीघा चले गए थे.

इसके चार-पांच दिन बाद भले आदमियों की तरह सीकेपीकेटीके दीघा से लौटे. सूर्यनंदी की दुर्दशा की बात सुनकर उन्हें आश्चर्य हुआ. किसने किया यह कांड? उनपर शक किए जाने की दबी हुई चर्चा सुनकर उन्होंने कहा कि घटना के दिन भी वे दीघा में थे, इस बात के गवाह और सबूत मौजूद हैं. पर इस घटना के काफी दिन बाद उनके चेहरे की मुस्कराहट से सब समझ गए असली बात.

•

इन तीन उद्दंड छोकरों में सब से छोटा है तपन कर यानी टी. के.; चंद्र कुंडु और पूर्ण कोनार स्कूल में उससे तीन क्लास ऊंचे थे. पर अंत में वह उन दोनों को दो क्लास नीचे छोड़कर स्कूल फाइनल (मैट्रिक) पास करके निकल गया. इसी लिए खास तौर से सीकेपीके को पढ़ाई-लिखाई से नफरत हो गई. इधर से फुरसत पाकर अब वे पक्के अवारा बन गए. और टीके को भी इसी रास्ते पर लाने की कोशिश में लग गए.

टीके की सब से बड़ी समस्या यही है. वह क्या अपने प्रिय पीकेदा, सीकेदा की इच्छा नहीं पूरा करना चाहता? उनकी खुशी के लिए पढ़ाई छोड़ने में उसे तनिक भी हिचक नहीं थी. लेकिन मुश्किल हो गई है उसकी अपनी मां को लेकर. विधवा मां का इकलौता लड़का है वह. बेहद तकलीफें झेलकर उन्होंने अपने लड़के को पालपोस कर बड़ा किया है.

मां तपन की सब बातें बिना किसी आपत्ति के मान लेती हैं, सिर्फ एक पढ़ाई-लिखाई की बात को छोड़कर. तपन भी इसका कारण समझता है. तपन के पढ़-लिख कर लायक बनने पर ही उसकी मां के कष्ट मिटेंगे. स्कूल फाइनल पास करने के बाद तपन ने मां से कहा था—अब और पढ़कर क्या होगा? क्यों न किसी नौकरी की कोशिश करूं?

यह सुनकर उसकी मां गुस्से से बोली—'फिर अगर कभी पढ़ाई छोड़ने की बात कही तूने, तो मैं गले में फांसी लगाकर लटक जाऊंगी, कहे देती हूं!'

मां के उस तमतमाए हुए चेहरे को देखकर घबड़ा गया था तपन. तब से उसकी मां को उसे पढ़ाई से विमुख न होने देने के विरुद्ध यह एक अच्छा उपाय मिल गया. समय-समय पर इस वाक्य को दुहरा कर उन्होंने तपन को इंटरमीडिएट और बी. ए. पास कराया. फिर अपने एक रिश्तेदार की सलाह पर ला कालेज में भरती करा दिया कानून पढ़ने के लिए.

बी.ए. पास करने के बाद भी जब उसने पढ़ाई नहीं छोड़ी, तब सीके और पीके को बहुत बुरा लगा. उसने समझाया—'मैं एक खास मकसद को लेकर कानून पढ़

रहा हूं, मां के फांसी ल
जानकारी से आखिर
फंदे में हम नहीं फंसें
विद्या की उपयो
भी उठाया है उन्होंने.
के लड़के की जगह टी
देकर उन्हें पांच सौ रु
के इतने बड़े अंतर को
था कि कहीं टीके इस
न करने लगे. तभी सो
को टीके को काली जी
चरण स्पर्श करके ती
आजीवन एक साथ
कोई दल से अलग
चरम दंड पाएगा.
दंड देने का अधिकार
शुरू-शुरू में सी
ही किए थे. मुहल्ले
उनसे. मसलन, एकाए
एक रात को टोह में
कर पीटते-पीटते
मौका देख चीजों की
थे, उन्हें दुरुस्त किय
बहुत से काम सीकेपी
लेकिन धीरे-धी
लोगों के लिए. मां-
के लड़के दल में शा
बाजी बढ़ने लगी.
भी पुलिस से शिकाय
छोटी-छोटी बात के
अस्पताल भेज चुके
प्रभावशाली और पैसे
कर लिया था उन्हों
और उच्छृंखल ही
हिमायत करने वाले
पर टीके यानी
खड़ी हुई उसकी मां
मां को पता चल जाए
तपन नहीं जान पाए
ही फोड़ देता. क
रहा है कि उनके स
एक ही बात की र
छोड़ेगा या फांसी ल
उनका साथ
कभी-कभी उसे अप
उनकी तीखी-तीखी
पंद्रह दिन पहले उन
'तू तो उनका साथ
रास्ता देखूं, क्यों?'
यह सुनकर त

रहा हूं, मां के फांसी लगा लेने के डर से नहीं. कानून की जानकारी से आखिर में हमें बहुत सुविधा होगी. इसके फंदे में हम नहीं फंसेंगे.'

विद्या की उपयोगिता वे समझते हैं. इसका फायदा भी उठाया है उन्होंने. पिछले साल ही एक अमीर आदमी के लड़के की जगह टीके ने स्कूल फाइनल की परीक्षा देकर उन्हें पांच सौ रुपये दिलवाए थे. फिर भी वे विद्या के इतने बड़े अंतर को बरदाश्त न कर सके. उन्हें अंदेशा था कि कहीं टीके इस विद्या के गर्व से उनका तिरस्कार न करने लगे. तभी सोच-विचार कर वे एक दिन शनिवार को टीके को काली जी के मंदिर ले गए. काली माता के चरण स्पर्श करके तीनों ने यह शपथ ली : 'हम तीनों आजीवन एक साथ रहेंगे और कभी अलग न होंगे. यदि कोई दल से अलग हुआ, तो काली माता के कोप से चरम दंड पाएगा. काली माता की ओर से उसे चरम दंड देने का अधिकार बाकी दोनों को होगा.'

शुरू-शुरू में सीकेपीकेटीके ने दो-एक काम अच्छे ही किए थे. मुहल्ले के लोगों का उपकार ही हुआ था उनसे. मसलन, एकाएक चोरियां होने लगी थीं एक बार. एक रात को टोह में रहे वे चोरों को. फिर, उन्हें पकड़ कर पीटते-पीटते अधमरा कर दिया. जो दूकानदार मौका देख चीजों की कीमत बढ़ाकर लोगों को लूटते थे, उन्हें दुरुस्त किया उन्होंने. इस तरह के छोटे-मोटे बहुत से काम सीकेपीकेटीके ने किए थे.

लेकिन धीरे-धीरे वे ही त्रास बन गए मुहल्ले के लोगों के लिए. मां-बाप की अवज्ञा करके सब कम उमर के लड़के दल में शामिल होने लगे. गुंडई और पटाखे-बाजी बढ़ने लगी. अपनी आंखों उनकी हरकतें देखकर भी पुलिस से शिकायत करने में डरते थे लोग. क्योंकि छोटी-छोटी बात के लिए न जाने कितने लोगों को वे अस्पताल भेज चुके थे कि जिसका हिसाब नहीं. कुछ प्रभावशाली और पैसे वाले व्यक्तियों का संरक्षण हासिल कर लिया था उन्होंने. इससे वे और भी बेफिक्र, निडर और उच्छृंखल हो गए, क्योंकि बखेड़ा खड़ा होने पर हिमायत करने वाले जो मौजूद थे.

पर टीके यानी तपन के लिए सबसे बड़ी मुसीबत खड़ी हुई उसकी मां की ओर से. उसकी बहुतसी बातें मां को पता चल जाती हैं. कौन ये बातें मां को बताता है, तपन नहीं जान पाता. अगर जान पाता, तो उसका सिर ही फोड़ देता. क्रमशः मां का चेहरा ऐसा बदलता जा रहा है कि उनके सामने जाने से डरता है तपन. सिर्फ एक ही बात की रट लगाए रहती है : 'तू उनका साथ छोड़ेगा या फांसी लगा लूं मैं?'

उनका साथ अर्थात् सीके और पीके का साथ. कभी-कभी उसे अपनी मां पर बड़ा गुस्सा आता है. पर उनकी तीखी-तीखी आंखों को देखकर डर जाता है. इधर पंद्रह दिन पहले उन्होंने एक बार तपन से पूछा था—'तू तो उनका साथ नहीं ही छोड़ेगा, मैं फिर अपना रास्ता देखूं, क्यों?'

यह सुनकर तपन को गुस्सा आ गया था और वह घर छोड़कर चला गया था. अब वह भी बेपरवाह हो गया था.

उसके बाद मां ने एक भी बात नहीं कही उससे. सिर्फ उसकी ओर देखती भर रहती थीं.

उस दिन रात के दस बजे घर लौटकर उसने देखा कि मां पत्थर की मूरत बनी बैठी हैं और सामने उनके

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

प्रति मास नए पुरस्कार

इस अंक की कहानियां ध्यान से पढ़ें और हमें २० मई १९७१ तक लिखें कि अपनी पसंद के विचार से कौन-कौन सी कहानी आप पहले, दूसरे और तीसरे आदि नंबरों पर रखेंगे. आपको इस प्रकार उन सभी कहानियों पर अपनी पसंद बतानी है, जिनका उल्लेख अतापता में 'सरस कहानियां' के अंतर्गत आया है. जिन पाठकों की पसंद का क्रम बहुमत से अधिकतम मेल खाता हुआ निकलेगा, उन्हें हम श्रेष्ठ पुस्तकें पुरस्कार में भेजेंगे.

किशोर पाठकों द्वारा इस प्रकार इस अंक की प्रथम स्थान पर चुनी गई कहानियों में से जिस कहानी को सर्वाधिक मत प्राप्त होंगे, उसके लेखक को भी ५० रुपये का एक अतिरिक्त पुरस्कार प्रदान किया जाएगा. अपनी पसंद एकदम अलग कार्ड पर लिखें. पता यह लिखें : **संपादक, 'पराग', हमारी पसंद प्रतियोगिता नं. ५१, पो. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया, बंबई–१.**

प्रतियोगिता नं. ४७ (फरवरी ७१) का परिणाम

इस प्रतियोगिता में केवल एक पाठक का हल पूर्णतः सही आया, उनका नाम और पता नीचे दिया जा रहा है, शीघ्र ही उन्हें पुरस्कार भेजा जाएगा :

● **रजनीशकुमार, सुपुत्र श्री कौशलनरेश श्रीवास्तव, रजिस्ट्री आफिस, मकान नं. ५५, गोंडा (उ. प्र.).**

किशोर पाठकों द्वारा फरवरी ७१ की प्रथम स्थान पर चुनी गई कहानियों का मतसंख्यानुसार क्रम इस प्रकार है—

१–फिसलने से पहले, २–समदर्शी, ३–कौन हारा, ४–गहरे पानी की मछली, ५–सबूत, ६–बाजार में डाका, ७–टेलीफोन, ८–पोस्ट कार्ड.

हमें प्रसन्नता है कि प्रथम चुनी गई कहानी 'फिसलने से पहले' के लेखक श्री प्रदीपकुमार को इस प्रतियोगिता क्रम में यह पांचवीं बार ५० रुपये का अतिरिक्त श्रेष्ठता-पुरस्कार दिया जा रहा है! लेखक 'पराग' परिवार की ओर से बधाई लें.

छाया : वसुदेव

kissekahani.com

गर्मी की शाम

खत्म हुआ शोरगुल, बंद हुए काम;
पर्वत की चोटी से उतर रही शाम.

लाल-लाल साड़ी में लगती है बड़ी भली,
जैसे सुकुमार दुल्हन नाजों के बीच पली!
लाज से लचक लचक जाती है शाम.

बैठती कभी जाकर जल के किनारे,
लहरों के बीच कभी टांग को पसारे,
हारे-थके सैलानी-सी दिखती है शाम.

संध्या रानी की साड़ी के कुछ बूटे,
बिखरे आकाश बीच गिरकर जो टूटे;
देते कुछ लोग इन्हें तारों का नाम.

अंधियारे-उजियारे का अद्भुत संगम,
जीवन में रहता है जैसे सुख-दुख का क्रम;
लाई है साथ नई भोर का पैगाम,
पर्वत की चोटी से उतर रही शाम.

----सुबोधकुमार द्विवेदी

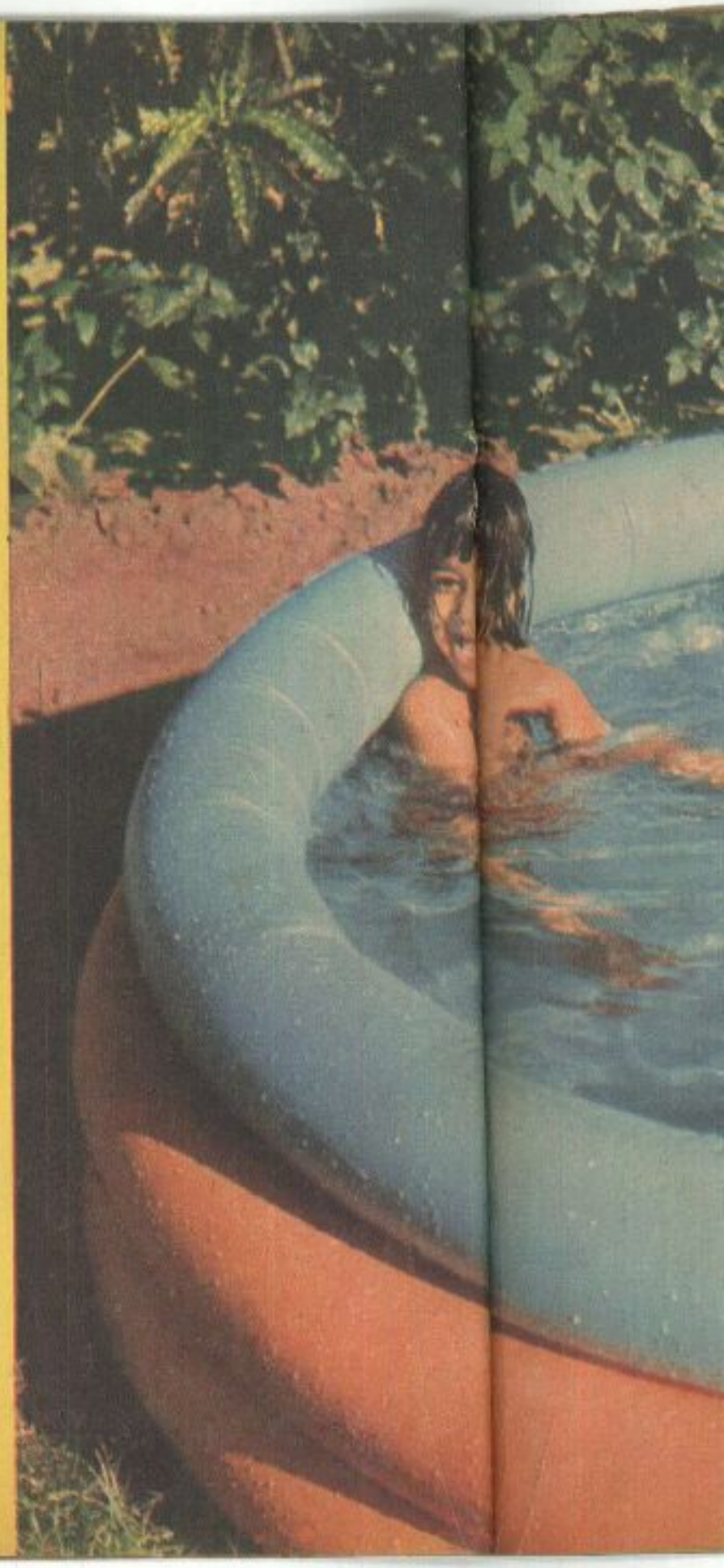

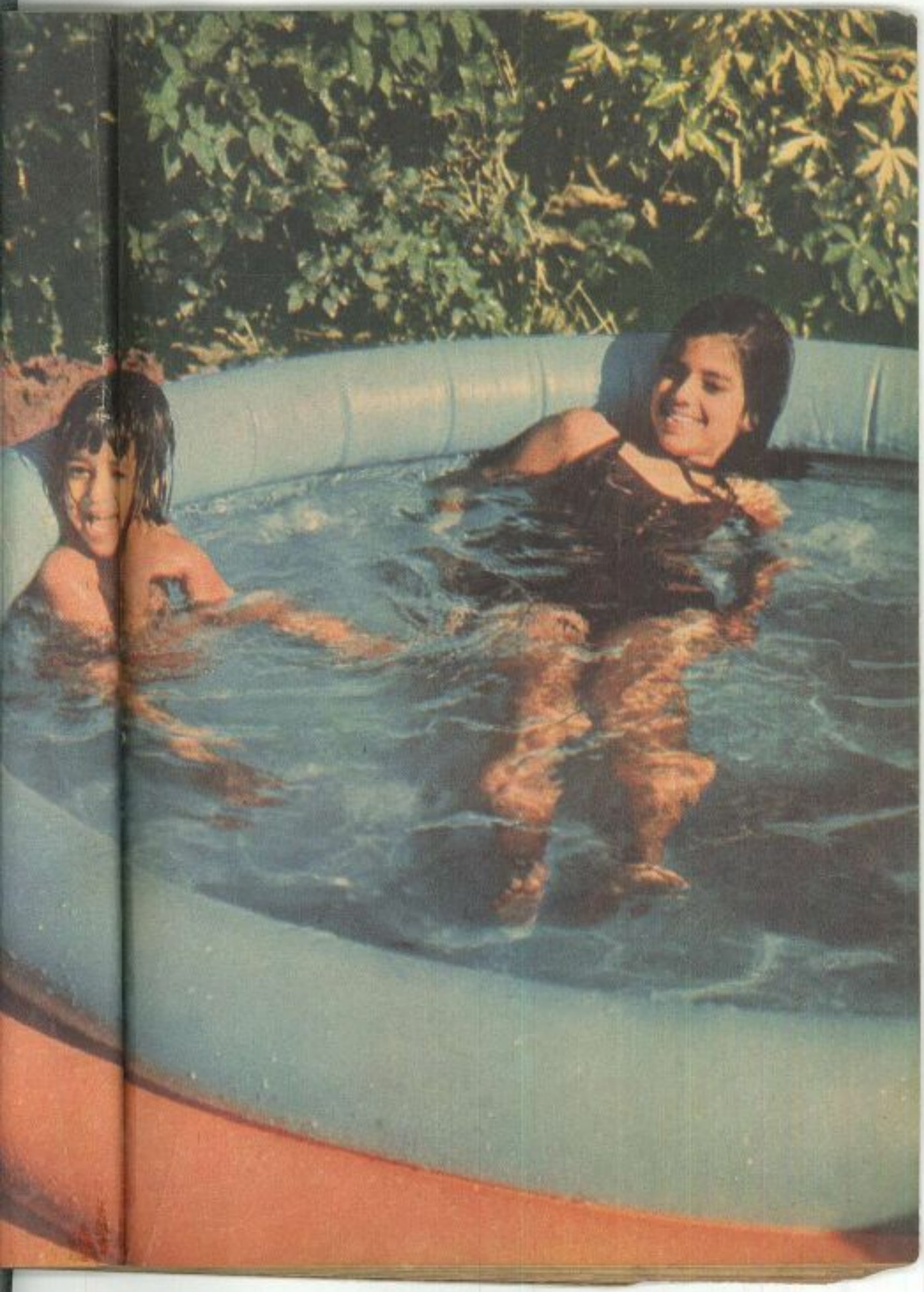

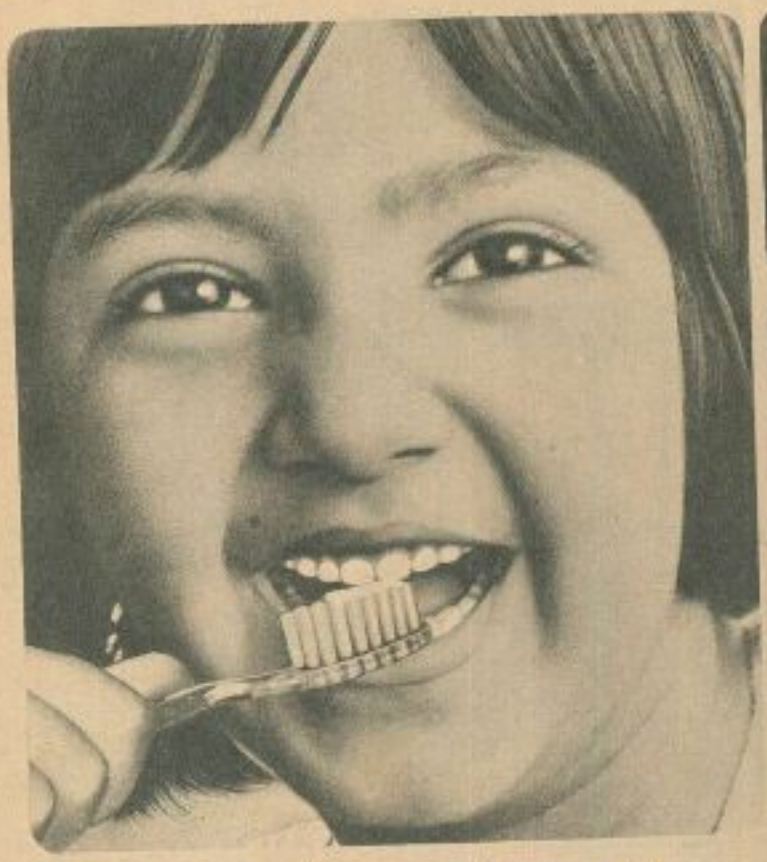

कोलगेट डेन्टल क्रीम से सांस की दुर्गंध रोकिये... दंतक्षय का दिन भर प्रतिकार कीजिये!

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि १० में से ७ लोगों के लिए कोलगेट सांस की दुर्गंध को तत्काल खत्म कर देता है और कोलगेट विधि से खाना खाने के तुरंत बाद दांत साफ करने पर अब पहले से अधिक लोगों का— अधिक दंतक्षय रुक जाता है। दंत-मंजन के लंबे इतिहास की यह एक बेमिसाल घटना है। क्योंकि एक ही बार दांत साफ करने पर कोलगेट डेन्टल क्रीम मुंह में दुर्गंध और दंतक्षय पैदा करने वाले ८५ प्रतिशत तक रोगाणुओं को दूर कर देता है। जबकि कोलगेट के पास यह प्रमाण है। इसका पिपरमिंट जैसा स्वाद भी कितना अच्छा है— इसलिए बच्चे भी नियमित रूप से कोलगेट डेन्टल क्रीम से दांत साफ करना पसंद करते हैं।

ज्यादा साफ व तरोताजा सांस और ज्यादा सफेद दांतों के लिए...
दुनिया में अधिक लोग दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट ही खरीदते हैं!

DC.G 41 HN

ला कालेज की फी
उस दृश्य को
उसने चिल्लाकर क
मां उसी तरह
आंखों से देखती रह
आज मैं ला कालेज
पकड़े जाकर
गया तपन. ला के
छह महीने से काले
भी नहीं दी है. काले
मां से उसने हर म
से खा-पीकर कालेज
पर गुस्सा भ
नहीं देख सका अ
घर के बाहर.
सीके के यहां
घर. एक अजीब-
बाहर का दरवाजा
बैठे-बैठे मां को नी
दरवाजे भिड़े हुए
इसके बाद ए
गया वह. यह क्या
. . .छत की
झूल रही थी.
बिस्तर पर
के हाथ की लिखा
इसके बाद भी क्या
सहसा बलि
वह और इसके बाद

•

एक महीने त
बहुत समझाया. प
चेहरे की ओर देख
रहता था. जब
'नहीं, अब यह रा
शुरू-शुरू में
पर सब ठीक हो
कोई लक्षण न देख
उसने आना बंद
मां के कमरे में
निकलती उसके
लौटना ही पड़ेगा
सीके, पीके
सहन न हुआ, उन
'हम तुझे सात दि
अगर हमने तेरी

सीकेपीकेटीके

(पृष्ठ ३१ से आगे)

ला कालेज की फीस की किताब खुली पड़ी है.

उस दृश्य को देखकर माथा गरम हो गया तपन का. उसने चिल्लाकर कहा—'तुमने क्यों मेरा सूटकेस खोला?'

मां उसी तरह मूर्तिवत् बैठी रहीं. उसी तरह ठंडी आंखों से देखती रहीं उसकी ओर; फिर—'तेरी खोज में आज मैं ला कालेज भी गई थी.'

पकड़े जाकर पिंजरे में बंद पशु की तरह उग्र हो गया तपन. ला के फाइनल ईयर में आकर तपन पिछले छह महीने से कालेज के पास तक नहीं फटका है, फीस भी नहीं दी है. कालेज से नाम कट गया है उसका. हालांकि मां से उसने हर महीने फीस के रुपये लिये हैं और रोज घर से खा-पीकर कालेज जाने का बहाना करके निकला है.

पर गुस्सा चाहे कितना आया हो उसे, मां की ओर नहीं देख सका अधिक देर. फिर झटके से निकल गया घर के बाहर.

सीके के यहां रात काटकर तड़के फिर लौट आया घर. एक अजीब-सी बेचैनी जैसे खींचकर ले आई थी. बाहर का दरवाजा खुला पड़ा था. शायद उसके आसरे बैठे-बैठे मां को नींद आ गई है. . . . मां के कमरे के दरवाजे भिड़े हुए थे. ठेलते ही खुल गए.

इसके बाद एक जोर का धक्का खाकर काठ बन गया वह. यह क्या देख रहा है? यह स्वप्न है या सत्य?

. . .छत की कड़ी से बंधी रस्सी पर मां की मृत देह झूल रही थी.

बिस्तर पर एक कागज का टुकड़ा पड़ा था. मां के हाथ की लिखावट थी उसपर. तपन ने पढ़ा : 'तपन, इसके बाद भी क्या तू मेरा राजा बेटा नहीं बनेगा?'

सहसा बलि के पशु की तरह आर्तनाद कर उठा वह और इसके बाद दौड़कर निकल गया घर के बाहर.

●

एक महीने तक सीके, पीके ने उसे बहुत सांत्वना दी, बहुत समझाया. पर टीके जैसे गूंगा बन गया था. उनके चेहरे की ओर देखता रहता था और न जाने क्या सोचता रहता था. जब बोलता तो एक ही बात कहने लगता—'नहीं, अब यह रास्ता और नहीं!'

शुरू-शुरू में सीके, पीके ने सोचा था दुःख कम होने पर सब ठीक हो जाएगा. दो महीने बाद भी ठीक होने का कोई लक्षण न देखकर उन्हें फिक्र होने लगी. उनके पास उसने आना बंद कर दिया, उसके घर जाने पर वे देखते, मां के कमरे में चुपचाप बैठा है. और वही एक बात निकलती उसके मुंह से—'अब यह रास्ता और नहीं, लौटना ही पड़ेगा इस रास्ते से.'

सीके, पीके को उसका यह परिवर्तन और अधिक सहन न हुआ, उन्होंने बड़ी कठोरता से उसे चेतावनी दी : 'हम तुझे सात दिन का समय और देते हैं. इसके बाद भी अगर हमने तेरी हालत में कोई सुधार न पाया, तो हम समझेंगे कि तू काली माता के चरण छूकर खाई शपथ को भूलकर हमारा साथ छोड़ना चाहता है. पर याद रहे, हम उस शपथ के अनुसार कार्य करना नहीं भूलेंगे.'

●

सात दिन तो क्या सत्रह बरस में भी उन्हें टीके का पता न लगा. अकस्मात जैसे अंतर्धान हो गया वह. बहुत खोजा सीके पीके ने उसे और प्रतिज्ञा की कि कभी न कभी इस विच्छेद के लिए वे चरम दंड उसे अवश्य देंगे. अगर न दे सके तो काली माता झूठी हैं.

कहानी थोड़ी और बाकी है. कारण, सत्रह साल बाद फिर मुलाकात हुई थी उनकी.

किसी मुफस्सल शहर की अदालत में डकैती और उसके साथ हत्या के षड्यंत्र का एक मुकदमा चल रहा था. अभियुक्तों के नाम थे : चंद्र कुंडू और पूर्ण कोनार. सहकारी जज का नाम : तपन कर. इन्हीं जज के इजलास में मुकदमा चल रहा था.

आखिरी दिन था वह. आज जज अपना फैसला सुनाएंगे. सीके और पीके स्तब्ध कठोर दृष्टि से देख रहे थे जज की ओर.

बड़ी संजीदगी के साथ तपन कर यानी टीके ने फैसला सुनाया. दोनों अभियुक्तों को आजीवन कारावास का दंड मिला.

दंड की घोषणा करके जज अपने चेंबर में चला गया.

थोड़ी देर बाद दो पुलिस सार्जेंट अभियुक्तों को हथकड़ी बंधी हालत में जज के कमरे में ले आए. ऐसा नियम नहीं है, जज के अनुरोध पर ही लाए गए हैं वे.

उसी तरह कठोर दृष्टि से देखते रहे सीके पीके टीके की ओर, उसी संजीदगी से देखता रहा टीके भी उनको.

आखिर में टीके ने पूछा—'कुछ कहोगे?'

थोड़ी देर और एकटक उसकी ओर देखकर पीके ने जवाब दिया—'काली माता अगर सच्ची होतीं, तो बहुत पहले ही अपनी बात कह देते हम, हमारे पहले तुम्हें ही मिल जाता चरम दंड. काली माता झूठी हैं.'

'सच्ची हैं!' तमतमा उठा टीके का चेहरा. कठोर स्वर में उसने कहा—'सच्ची हैं, तभी तुम्हें चरम दंड मिला. मैंने तुम्हारा साथ नहीं छोड़ा था, न छोड़ना चाहता था. तुम्हीं दोनों ने मेरा साथ छोड़ दिया.'

उसका इशारा पाते ही सार्जेंट अभियुक्तों को बाहर ले गए. जज की बात वे कुछ भी नहीं समझ पाए थे, पर जज की ओर देखकर थोड़ा विस्मय जरूर उन्हें हुआ और दोनों अभियुक्त भी कुछ विमूढ़से हो गए.

जज की आंखें भी भीगी-भीगी मालूम हो रही थीं. ●

मूल लेखक का पता : २८ प्रतापादित्य रोड, कलकत्ता-३६
अनुवाद : रसिक बिहारी,
डी ४५ । २९ नई बस्ती, रामापुरा, वाराणसी-१.

वह मेरे पड़ोस में रहती थी. हमने उस साल साथ-साथ ही आठवीं की कक्षा की परीक्षा दी थी. उन दिनों गर्मियों की छुट्टियां चल रही थीं, इसलिए स्कूल में हमारा आना-जाना बंद था.

मुझे याद है कि जब मैं छोटा-सा था, तो उसके साथ 'लाई-माई' खेला करता था और हमारी वह चमा-चौकड़ी तब तक बराबर चलती आ रही थी. परंतु उन दिनों मुझे कुछ-कुछ अनुभव होने लगा था कि उसके घर वाले मुझे कुछ अजीब-सी निगाहों से देखने लगे थे और वह भी मुझे देखकर पहले की तरह खुलकर नहीं खिलखिलाती थी. इस परिवर्तन का क्या कारण था? मेरी समझ में नहीं आ रहा था. बहुत सोचता, पर कोई खास कारण हाथ नहीं आता था.

"क्यों, गुल्लू, आजकल यह रोनी-सी सूरत क्यों बनाए रहते हो? और हमसे बोलते भी नहीं, क्या बात है?"

यह सुनकर गुल्लू एक क्षण चुप रहा. मैं जानता था कि वह अपने माता-पिता का बड़ा आज्ञाकारी बेटा है,

kissekahani.com

उसका छोटा भाई गुल्लू पहले हमेशा मेरे घर के चारों ओर मंडराता रहता था, परंतु अब वह बुलाने पर भी बहुत झिझककर मेरे पास आता.

एक दिन की बात है कि मैं बाजार से आ रहा था. गुल्लू गली में खेल रहा था. वह मुझे देखकर खिसकने लगा. मैंने उसे बहला-फुसलाकर पास बुलाया और दो-चार टाफियां जो मेरे पास थीं, उसे दक्षिणा-स्वरूप दीं. वह पहले तो डरा, परंतु जब मैं उसे एकांत कोने में ले गया, तो उसका भय कुछ कम हो गया. मुझे पक्का शक था कि जरूर कुछ बात हो गई है. मैं यह बात कई दिन से जानने को अधीर था, इसी लिए मैंने गुल्लू को पकड़ा था.

घर की बात आसानी से नहीं बताएगा, इसलिए मैंने फिर पूछा, "अरे, मुझसे छिपाना क्या, मैं कोई गैर थोड़े ही हूं. हां, बता तो, क्या बात है? तेरी सुधा दीदी तो दिखाई ही नहीं देती, उसकी तबीयत तो ठीक है न?"

इतने सारे प्रश्नों से गुल्लू घबड़ाया नहीं, बड़े शांत भाव से सुनता रहा. मैं भी अपनी गलती महसूस करने लगा. मैं खुद उनके घर जाकर बड़े लोगों से सभी बातें क्यों नहीं मालूम करता? इस बच्चे से पूछने की जरूरत क्या है? परंतु मेरा अहं भाव बड़ा तीव्र था. एक बार मैंने लक्ष्य कर लिया कि उनके घर-वालों को मेरा आना-जाना अब पसंद नहीं है, तो मैंने खुद ही उनके यहां जाना बंद कर दिया. आखिर अपनी

तौहीन कराने से फायदा
मुझे सहन नहीं हो रही
कम निकलती थी, इसलि
था.

मैंने लक्ष्य किया कि
ले रहा है, उतना मेरी बा
से टाफी खा रहा था, जैसे

एक टाफी उदरस्थ

जा ही रहा था कि मैंने
टाफियां बाद में खा लेन
दीदी . . . "

"छुदा दीदी?" उ

"हां," मैंने प्रसन्न

"वह बाहर नहीं
उसी कार्य में व्यस्त होने

"क्यों, क्या बात

"अम्मा उछे डांट

"क्यों?"

"कहती हैं, अब तू

तौहीन कराने से फायदा क्या? फिर भी सुधा की उपेक्षा मुझे सहन नहीं हो रही थी. वह उन दिनों बाहर बहुत कम निकलती थी, इसलिए मैं कुछ पूछ भी नहीं सकता था.

मैंने लक्ष्य किया कि जितना रस गुल्लू टाफियों में ले रहा है, उतना मेरी बातों में नहीं. वह निर्विकार भाव से टाफी खा रहा था, जैसे मैंने उससे कुछ पूछा ही न हो.

एक टाफी उदरस्थ कर वह दूसरी मुंह में डालने

जा ही रहा था कि मैंने पूछा, "भई, बोलता क्यों नहीं? टाफियां बाद में खा लेना, हम और ला देंगे. तेरी सुधा दीदी . . ."

"छुदा दीदी?" उसने बीच में ही कहा.

"हां," मैंने प्रसन्न होकर कहा.

"वह बाहल नहीं जाती," यह कहकर वह अपने उसी कार्य में व्यस्त होने जा रहा था कि मैंने पूछा—

"क्यों, क्या बात है?"

"अम्मा उसे डांटती हैं."

"क्यों?"

"कहती हैं, अब तू बड़ी हो गई है, तेरी छादी जल्ली ई कलेंगे!"

"अच्छा, और कुछ?" मैंने बात की गंभीरता को समझा. फिर हल्का मन करने के लिए पूछा, "औल तेली छादी भी जल्ली कलेंगे!"

गुल्लू ने टाफी गड़प की और हंसकर बोला, "नई अम छादी-वादी नई कलवाएंगे. छुदा दीदी कैती हैं छादी अच्छी नई ओती!"

और वह शरमा कर भाग गया. मैं भी सोच में पड़ गया था. तो यह बात है. पर यह कोई खास बात तो है नहीं! फिर भी दो बातें ऐसी थीं, जो बार-बार मेरे मन में आ रही थीं. 'सुधा अब बड़ी हो गई है,' 'सुधा शादी नहीं कराना चाहती!' इन दो वाक्यों पर मैं सोचता रहा. सुधा बड़ी हो गई है, तो इसका मतलब यह कि कि अब मैं भी बड़ा हो गया हूं. उम्र में मैं सुधा से दो-एक वर्ष बड़ा ही हूं. पर मैं अपने आपको बड़ा नहीं समझ पाता. मेरा मन तो बच्चों जैसा ही है. मैं हूं ही बच्चा. चौदह-पंद्रह साल की उम्र में कोई बूढ़ा थोड़े ही कहला-एगा! फिर सुधा बड़ी कैसे हो गई? अभी चार दिन पहले तो वह मेरे मुंह से टाफियां छीनकर खा जाती थी, चिकोटियां काटकर अंगूठा दिखाती थी और हठ-मनौ-

—यादराम 'रसेंद्र'—

वल किया करती थी. फिर इतनी जल्दी वह बड़ी कैसे हो गई?

सोचता हुआ मैं घर आया. भरसक प्रयत्न किया कि सुधा से एक बार मिल पाऊं. देखूं कि वह सचमुच ही बड़ी तो नहीं हो गई है! पर मैं प्रयत्न करने पर भी उसे देख नहीं पाया. वह शायद रसोई में खटरपटर कर रही थी.

एक बार मन में आया कि किसी बहाने से सुधा के घर चला जाऊं. परंतु फिर मन ने साथ नहीं दिया. सोचा, मैं क्यों जाऊं? यह सुधा की बच्ची अपने आपको समझती क्या है? इतने दिन हो गए, वही जब कभी किसी बहाने हमारे घर नहीं आई, तो मैं इतनी फिकर क्यों करूं? कम से कम वह मुझे किसी कारण से बुला तो सकती ही थी. उसके घरवाले क्या कर लेते? थोड़ा-सा मुंह लटकाकर रह जाते. खा तो जाते नहीं. मैं कोई चोर-डाकू तो हूं नहीं कि वे मुझे घर में घुसते ही धक्के मारकर बाहर कर देते!

इसी तरह की बातें मैं सोचता रहा. सुधा पर गुस्सा आता रहा. मैं जाना चाहता था, पर मेरे स्वाभिमान ने मुझे जाने नहीं दिया. चारपाई पर पड़ा हुआ कुछ पढ़ता रहा. किंतु इस तरह पढ़ने में मन कब तक लग सकता था? थोड़ी देर बाद ही पुस्तक एक तरफ पटक देनी पड़ी. मैं बेकार पड़ा छत ताकता रहा.

अचानक मुझे लगा कि दरवाजे पर कोई खड़ा है. मैंने देखा, वह सुधा थी. एकाएक मेरे शरीर में सिहरन दौड़ गई. पर तभी मेरा स्वाभिमान जाग उठा. मैं अभी-अभी सुधा को देखने को व्याकुल था. परंतु उसे सामने देखकर मैं उससे नजर नहीं मिला सका. एक सैकंड के लिए मेरी आंखें उसकी आंखों से टकराईं और इसी एक क्षण में मेरा सारा अहम् पिघल गया. सुधा की बड़ी-बड़ी आंखों में आंसू थे. न जाने कबसे वह मुझे देख रही थी. पर मैं बोला नहीं. उसने अपनी आंखों के आंसुओं को पोंछा नहीं, पर वह भी मुझसे कुछ कहने की स्थिति में नहीं थी.

मैं समझता था कि पहले वही कुछ कहेगी. या पहले की तरह मान-मनौवल करेगी, तभी कुछ बोलूंगा. उधर शायद सुधा भी इसी उधेड़-बुन में थी कि पहले मैं बोलूंगा और मैं ही उसकी मान-मनौवल करूंगा, तब वह मुझे एक मीठी डांट पिलाएगी और न जाने क्या क्या धमकियां देकर डराएगी.

एक क्षण तक हमारे मनों में यह द्वंद्व-सा चलता रहा.

अचानक गुल्लू आ गया और उसने सुधा का दुपट्टा खींचकर कहा, "छुआ जीजी, मां बुला रही हैं. चलो, बहुत नाराज हो रही हैं."

सुधा ने एक क्षण शिकायत और याचना भरी नजरों से मुझे देखा कि शायद मैं अब भी बोलूंगा, परंतु मैं नहीं बोला. सुधा ने अपनी आंखों में आए आंसुओं को पोंछा और फिर तेजी से मुड़कर बाहर हो गई.

●

उसके जाने के बाद एक क्षण मैं विमूढ़-सा पड़ा रहा. फिर मेरा मन मुझे ही कचोटने लगा कि क्यों मैं उस बेचारी निरीह लड़की के प्रति इतना कठोर बना रहा. वह मेरी दुश्मन तो थी नहीं कि मैं अपना स्वाभिमान उस पर जताता. और दूसरी ओर यह तो और भी गलत बात थी, क्योंकि वह स्वयं चलकर मेरे घर पर आई थी. क्या मैं इतना भी नहीं जानता कि कितनी कठिनाई से वह यहां तक आ पाई होगी. माता-पिता की डांट-डपट की भी उसने परवाह नहीं की होगी.

मुझे लगा कि सुधा के प्रति अवश्य ही मैंने ज्यादती की है. मेरा मन मुझे ही धिक्कारने लगा. एक बार जी में आया कि मैं उसके घर जाकर माफी मांग लूं. अगर वह लड़की होकर भी इतना साहस रखती है, तो फिर मैं तो लड़का हूं, मैं ही उसके या अपने माता-पिता के डर से क्यों घबराऊं.

मैंने अपने आप में एक विचित्र साहस का संचार होते देखा और मैं झटके से उठ खड़ा हुआ.

एकाएक मेरे पैरों ने जवाब दे दिया. सुधा की मां की कर्कश आवाज मेरे कानों में साफ-साफ पड़ी, "कहां गई थी, चुड़ैल? हमारी नाक कटा कर छोड़ेगी. काम के नाम से तो छाले पड़ते हैं तेरे पैरों में, और वहां दौड़-दौड़कर जाते शर्म नहीं आती! अब कभी गई, तो टांग तोड़ दूंगी!"

और फिर शायद उसने दो-चार धौल भी सुधा के लगा दिए होंगे. मैंने सुधा की आंसू भरी आंखों का अनुमान लगाया और मेरी भी आंखें नम हो गईं. परंतु मैं समझ नहीं पाया कि वास्तव में बात क्या है.

सुधा की मां भी वही हैं जो कुछ दिन पहले जरा-जरा-सी चीजों को मंगाने के लिए सुधा को बार-बार हमारे घर भेजा करती थी. परंतु अब ऐसी क्या बात हो गई? क्या मेरे व्यवहार ने उन्हें रुष्ट कर दिया है, या कोई और कारण हो सकता है?

मैंने दीवार के कान लगाया. सुधा की सिसकियां साफ सुन रहा था. एकाएक मन ही मन विद्रोह भर उठा कि क्यों यह चाची की बच्ची इस गरीब के पीछे हाथ धोकर पड़ी है? अभी मैं जाकर दो-चार खरी-खोटी सुनाकर उसकी अकल ठिकाने लगाता हूं. फिर देखता हूं वह क्या कर लेती है मेरा!

और मैं लपककर सुधा के घर में घुस गया.

●

सुधा खाट पर पड़ी सिसक रही थी और उसकी मां अभी भी उसे जली-कटी सुना रही थी.

"क्या बात है, चाची, क्यों इस गरीब के पीछे लट्ठ लिये फिरती हो? आखिर मैं भी तो सुनूं कि बात क्या है? अगर मैं इतना ही बुरा हूं तो, बाबा, आज के बाद तुम्हें शक्ल नहीं दिखाऊंगा. परंतु इसका कसूर क्या है? चार दिन पहले तुम्हीं तो दौड़ा-दौड़ा कर इसे हमारे घर भेजती थीं. अब कौनसा अनर्थ हो गया?"

सुधा एकाएक चुप हो गई. उसने आंखें पोंछ लीं. सुधा की मां की आंखों में चिंगारियां छूटने लगीं. वह शायद कुछ कठोर बात कहने ही जा रही थी कि सुधा बीच में ही चीखकर बोली, "तुम यहां क्यों आए हो? बड़े आए मेरी मां को सीख देने वाले! आज के बाद कभी आए, तो ठीक नहीं होगा! चले जाओ, जाओ..."

और वह दौड़कर अपने कमरे में घुस गई. मैं हक्का-बक्का सुधा को देखता रह गया. सुधा की मां की आंखें भी आश्चर्य से फटी पड़ रही थीं. मैं अपमान सहन न कर सका और नीची गरदन किए लौट पड़ा.

ज्यों ही मैं दरवाजे के बाहर निकला, मेरे कानों में सुधा की सिसकियां स्पष्ट सुनाई पड़ीं और मेरी आंखें भी नम हो गईं. नहीं जानता कि यह कौनसा मनोविज्ञान था? क्या इसी लिए स्त्री को समझना कठिन बताया गया है?

मन ने कहा, नहीं, सुधा को उसी घर में अभी रहना है अपनी मां की समस्त मान्यताओं के साथ. और मुझे भी यह निरर्थक-सी कहानी याद रहे चली जा रही है.●

लाइन नं. १, मकान नं. ३९, बिरला नगर, ग्वालियर–४

"अभी तो मैं पढ़ाई
का कहना है कि पढ़ाई प
"यह तो आप के
मत है? हम लोगों के
यह दकियानूसी पिताव
सोचते. पिता जी ने जो
हो गया. भगवान ने
स्वतंत्र रूप से सोचने के
किसी उचित पार्टी के
समस्याओं का हल नहीं
का समान अवसर नहीं
पाने में विफल रही है,
गठन किया है—एकम
इस पार्टी का गठन क
खोज रहा हूं. उसके लि
म प्रयास को आप
कर रहा हूं राष्ट्र
आप कितना रुपया दे
यह सुनकर छात्र
इधर-उधर ताकता है.
"देखिए, शोर मच
शुभ अनुष्ठान में आ
भीड़ में मेरी पार्टी के
हैं. आप सहायता के
लोग ही आपकी सह
लीजिए."
"यह तो. . . य
"आपने भरा ह
"नहीं. . . नहीं
"देखना चाहते
चाहते हैं?"
यह व्यक्ति छात्र
छुआता है.
"न जाने लोग क
आप डर गए हैं शा
यह रूमाल, आपको
के पास कितने रुपये
"पच्चीस रुपये
"केवल पच्चीस
और यह कीमती
नेतृत्व देने के लिए त
आज तक त्याग नहीं

रिवाल्वर की धमकी (पृष्ठ ११ से आगे)

"अभी तो मैं पढ़ाई में विश्वास करता हूं. पिता जी का कहना है कि पढ़ाई पहले और बाद बाद में."

"यह तो आप के पिता का मत है. आपका क्या मत है? हम लोगों के प्रगति न कर पाने का एक कारण यह दकियानूसी पितावाद है! हम मौलिक कुछ नहीं सोचते. पिता जी ने जो कह दिया वह पत्थर की लकीर हो गया. भगवान ने सबको स्वतंत्र मस्तिष्क दिया है, स्वतंत्र रूप से सोचने के लिए. भारत का शासन जब तक किसी उचित पार्टी के हाथ में नहीं होगा, भारत की समस्याओं का हल नहीं होगा, सबको पढ़ाई का, नौकरी का समान अवसर नहीं मिलेगा. वर्तमान पार्टियां कुछ कर पाने में विफल रही हैं, इसी लिए मैंने एक नई पार्टी का गठन किया है—एकमात्र उचित पार्टी का. आजकल मैं इस पार्टी का गठन कर रहा हूं. उसके लिए कार्यकर्ता खोज रहा हूं. उसके लिए धन एकत्रित कर रहा हूं. मेरे स प्रयास को आप अनुचित नहीं कह सकते. मैं कर रहा हूं राष्ट्र की भलाई के लिए कर रहा हूं. आप कितना रुपया दे सकते हैं?"

यह सुनकर छात्र घबरा जाता है. सहायता के लिए इधर-उधर ताकता है.

"देखिए, शोर मचाने का प्रयास मत कीजिएगा. इस शुभ अनुष्ठान में आपको कुछ त्याग करना ही है. इस भीड़ में मेरी पार्टी के कम-से-कम पंद्रह कार्यकर्ता खड़े हैं. आप सहायता के लिए चिल्लाएंगे, तो मेरी पार्टी के लोग ही आपकी सहायता के लिए बढ़ेंगे. आप सोच लीजिए."

"यह तो. . . यह तो. . . " छात्र हकला जाता है.

"आपने भरा हुआ रिवाल्वर देखा है?"

"नहीं. . . नहीं तो. . . "

"देखना चाहते हैं? उसकी मधुर आवाज सुनना चाहते हैं?"

वह व्यक्ति छात्र का हाथ पकड़कर पैंट की जेब से छुआता है.

"न जाने लोग क्यों इससे डरते हैं. मैं इससे खेलता हूं. आप डर गए हैं शायद. पसीना पोंछ लीजिए. लीजिए यह रूमाल, आपको डरने की आवश्यकता नहीं. आप के पास कितने रुपये हैं टिकट के रुपयों के अतिरिक्त. . ."

"पच्चीस रुपये."

"केवल पच्चीस रुपये? और यह कलाई घड़ी? और यह कीमती वस्त्रों की अटैची? राष्ट्र को सही नेतृत्व देने के लिए त्याग तो करना ही है. लगता है आप ने आज तक त्याग नहीं किया. आपसे अधिक नहीं लूंगा. आप बीस रुपये दे दें. आप के राह खर्च के लिए पांच रुपये पर्याप्त रहेंगे."

अशोक चकित रह जाता है. दिन दहाड़े, भीड़ में, छात्र कितना असहाय पा रहा है स्वयं को! वह रमेश को देखता है, राकेश को देखता है. दोनों को ग्राहकों में व्यस्त पाता है. उन्हें पता नहीं कि उनके निकट एक सज्जन यात्री को लूटने की चेष्टा की जा रही है, उसे धमकाया जा रहा है. उन्हें संकेत दे पाने की कोई संभावना नहीं. वह अन्य व्यक्तियों को देखता है. सब अति व्यस्त हैं. छात्र के निकट से निकल रहे हैं, किंतु उसकी दशा से, उसके संकट से अनभिज्ञ हैं. गोली का स्वर ही उन्हें चौंकाएगा.

उसे कुछ करना होगा. मौन रहना उचित नहीं. वह छात्र की सहायता करेगा. वही उसकी अपनी सहायता होगी. वह किसी को रमेश बनने से बचा सकता है. वह क्या करे? शोर मचाए? शोर मचाना व्यर्थ रहेगा. उससे स्थिति बिगड़ सकती है. राष्ट्र का शुभचिंतक भाग सकता है! राष्ट्र के शुभचिंतकों का अभिनंदन होना ही चाहिए. इस समय जितना अनिवार्य छात्र को बचाना है उतना ही राष्ट्र के शुभचिंतक को पकड़वाना है!

उसने पुनः रमेश को देखा. वह अपने ग्राहकों में व्यस्त था. उसने राकेश को देखा. राकेश अपने स्थान पर नहीं था. अभी अभी तो था.

वह धीरे से उठा और चल दिया. कुछ कदम सामान्य गति से चलकर वह दौड़ने लगा. क्षण-प्रति-क्षण वह अपनी गति बढ़ाता गया—तेज. . . तेज. . . तेज. . . और तेज. . . वह जानता था कि छात्र की कुशल नहीं है. बात बीस रुपये पर नहीं रुकेगी. . . बीस रुपये के पश्चात् कलाई घड़ी, कलाई घड़ी के पश्चात् अटैची. . . और आनाकानी करने पर रिवाल्वर की धमकी, शोर करने पर रिवाल्वर का यथार्थ रूप!

"दीवान जी!" मोटर साइकिल पर जाते पुलिस अधिकारी को उसने जोर से पुकारा. मोटर साइकिल ठहर गई.

और दूसरे ही क्षण वह मोटर साइकिल के पीछे बैठा लौट रहा था—मन में एक अपूर्व संतोष लिये. सहसा उसकी दृष्टि राकेश पर पड़ी. उसके साथ भी एक सिपाही था. तो राकेश ने भी सब सुना है! उसने भी वही कदम उठाया है!

उसने मुट्ठी हवा में तानी. अब बेटे को पता चलेगा रिवाल्वर से परिचय कराने का परिणाम! किसी को धमकाने का परिणाम! ●

सी. डी. २, सेक्टर-३, पोस्ट ध्रुवा, रांची.

1,000 रुपये के नकद इनाम

पराग उद्धरण प्रतियोगिता नं. ३१

ज्ञानवर्धन व मनोरंजन के साथ साथ दान भी

सर्वशुद्ध या निकटतम पूर्ति पर ७०० रु., न्यूनतम अशुद्धियों पर ३००रु.

इस प्रतियोगिता के संकेत-वाक्य बच्चों एवं किशोरों के लिए प्रकाशित पुस्तकों से ही लिये गए हैं. इसलिए जो पाठक सबसे अधिक पुस्तकें पढ़ते होंगे, उनके लिए खेल-खेल में एक हजार रुपये जीतने का यह स्वर्ण अवसर है.

सामने के पृष्ठ पर १२ संकेत-वाक्य दिए गए हैं. प्रत्येक वाक्य में एक शब्द का स्थान डंश लगाकर छोड़ दिया गया है. उसी पृष्ठ पर एक पूर्ति-कूपन है, जिसमें दो पूर्तियां दी गई हैं. जिस क्रमांक का संकेत-वाक्य है, प्रत्येक पूर्ति में उसी क्रमांक के आगे दो शब्द दिए गए हैं. उनमें से एक शब्द सही है, और दूसरा गलत. बस, आप गलत शब्द पर × का निशान लगा दीजिए.

'पराग उद्धरण प्रतियोगिता' में भाग लेने के नियम और शर्तें

१–एक पूर्ति-कूपन में दो पूर्तियां दी गई हैं. आप एक पूर्ति भरें या दोनों—पूरा कूपन बाहरी रेखाओं पर काटकर भेजना होगा. पूर्तियां 'पराग' में प्रकाशित पूर्ति-कूपनों पर ही स्वीकार की जाएंगी. यदि आप केवल एक ही पूर्ति भरें, तो दूसरी पूर्ति को क्रास कर दीजिए, और उसके नीचे पूर्ति क्रमांक आदि कुछ न भरिए.

२–पूरे कूपन की दोनों पूर्तियों का प्रवेश-शुल्क १ रुपया और केवल एक पूर्ति का प्रवेश-शुल्क ५० पैसे है. दोनों में से किसी भी पूर्ति को आप पहली मान सकते हैं. एक ही नाम से आप चाहे जितनी पूर्तियां भेज सकते हैं. एक ही लिफाफे में अनेक नामों और परिवारों की पूर्तियां भेजी जा सकती हैं. लिफाफे के अंदर रखी सभी पूर्तियों का सम्मिलित प्रवेश-शुल्क एक ही पोस्टल आर्डर, मनी आर्डर, या नकद रसीद से भेज सकते हैं. किंतु ऐसी सभी पूर्तियों के नीचे कुल पूर्तियों की संख्या, उनके क्रमांक, और पूर्ति-कूपन में पोस्टल आर्डर, मनी आर्डर की रसीद या नकद रसीद का नंबर लिखना अनिवार्य है. पोस्टल आर्डर, या डाकखाने से मिली मनी आर्डर की रसीद, या नकद रसीद पूर्तियों के साथ अवश्य नत्थी करके भेजिए. डाक-टिकट या करेंसी नोट प्रवेश-शुल्क के रूप में स्वीकार नहीं किए जाएंगे. आप कार्यालय में नकद रुपया जमा करके या डाक-खर्च सहित मनी आर्डर भेजकर ५० पैसे मूल्य की चाहे जितनी नकद रसीदें प्राप्त कर सकते हैं और उन्हें अगले चार महीने तक, प्रवेश-शुल्क के रूप में, पूर्तियों के साथ नत्थी कर सकते हैं.

३–स्थानीय प्रतियोगी अपनी पूर्तियां 'टाइम्स आफ इंडिया भवन' के प्रवेश द्वार पर बनी 'स्थानीय प्रवेश पेटी' में डाल सकते हैं. स्थानीय या डाक से आने वाली सभी पूर्तियों के लिफाफों के खुलने वाली तरफ भेजने वाले का पता, तथा उनके पीछे यह पता लिखा होना चाहिए—**'पराग उद्धरण प्रतियोगिता नं. ३१', प्रतियोगिता विभाग, पोस्ट बॅग नं. २०७, टाइम्स आफ इंडिया भवन, बंबई–१.** मनी आर्डर फार्मों और रजिस्टरी से भेजे जाने वाले लिफाफों पर 'पोस्ट बॅग नं. २०७' न लिखें. पोस्टल आर्डर क्रास कर दें. उसमें 'पाने वाले' के स्थान पर **'पराग उद्धरण प्रतियोगिता नं. ३१'** और 'पोस्ट आफिस' के आगे—**'बंबई–१'**—लिखें. कृपया संपादक के नाम पूर्तियां या शुल्क न भेजें.

४–प्रथम पुरस्कार ७०० रु. उन प्रतियोगियों को मिलेगा, जिनकी पूर्तियों में संकेत-वाक्यों के सही पूरक शब्दों पर निशान नहीं होंगे, और सभी गलत शब्दों पर निशान लगे होंगे. यदि ऐसी कोई पूर्ति प्राप्त न हुई, तो उसके निकटतम अशुद्धियों वाली पूर्तियों पर प्रथम पुरस्कार दिया जाएगा. द्वितीय पुरस्कार ३०० रु. प्रथम पुरस्कार प्राप्त पूर्तियों से निकटतम अशुद्ध पूर्तियों पर प्रदान किया जाएगा. समान अशुद्धियों के एक से अधिक विजेताओं को घोषित पुरस्कार बराबर बराबर बांटे जाएंगे.

५–अपना नाम और पता प्रत्येक पूर्ति-कूपन पर सुपाठ्य और स्पष्ट अक्षरों में लिखिए. डाक में खो जाने वाली, विलंब से प्राप्त होने वाली, या गंदी व कटी-फटी पूर्तियां प्रतियोगिता में शामिल नहीं होंगी.

६–सभी पूर्तियां कार्यालय में पहुंचने की अंतिम तिथि सोमवार, ७ जून १९७१ है. अपनी पूर्तियां भेजने के लिए अंतिम तिथि की प्रतीक्षा न कीजिए. निर्धारित अवधि के प्रारंभिक दिनों में ही पूर्तियां भेज देने से आप अनेक भूलों से बच सकते हैं. सर्वशुद्ध शब्दावली तथा संबंधित पुस्तकों व पुरस्कार विजेताओं की सूची 'पराग' के अगस्त १९७१ के अंक में प्रकाशित की जाएगी.

७–प्रतियोगी को इस प्रतियोगिता से संबंधित प्रत्येक विषय में प्रतियोगिता संपादक का निर्णय अंतिम रूप से मान्य होगा. वैधानिक रूप से विवादास्पद विषयों में बंबई के संबद्ध न्यायालय को ही निर्णय देने का अधिकार होगा.

८–नियमों के प्रतिकूल तथा पूर्ति-कूपनों में आवश्यक विवरण से रिक्त कोई भी पूर्ति प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं की जाएगी. 'पराग' तथा संबद्ध प्रकाशनों के कर्मचारियों को इसमें भाग लेने का अधिकार नहीं होगा. ●

'पराग'

१. हम सब बच्चे ही तो
रुचि नहीं थी. तो
हमने उन शब्दों को

२. सच्ची स्वतंत्रता क
आजाद होने पर भी

३. मिली-जुली मेहनत
का मकान है.

४. मैंने बतलाया न,
काम हो जाता है, अ
करते हैं तो यह न
क्या होगा?

५. ऊंचाई पर हिमाचल
आंखों के सामने---

शशिकला चौरसिया,
गोपालगंज, सागर (म
तक के पते : डी–३३।
बिसौली गेट, चंदौसी
२३–श्रीमती भुवानी
श्रीमती सुषमा शर्मा,
–उपरोक्त नं. २५ से
जे. सी. गोयल, ए।१४
स्टेशन रोड, राऊ (म.
(उ. प्र.) ३१–मंजुरा
नं. ३१ से ३४ तक के पते
द्वारा श्रीमती सुषमा श
राकेश मेहता, ३८–ब
३९–निशा, द्वारा श्री
द्वारा श्री. पी. एन. चु
जोधां, जिला नागौर
नागौर (राजस्थान).
४४–अनिलकुमार रा
४६ के पते : द्वारा
४७–जसविंदर पाल
श्रीमती सुषमा शर्मा,
चुघ, डी–३३।बी,
उपाध्याय–उपरोक्त
५३–कु. सुभाष बत्रा

इसी प्रकार एक
अशुद्धि पर इनाम जी

इस प्रतियोगि
१–सांच को आं

'पराग' उद्धरण प्रतियोगिता नं. २८ का परिणाम

सर्वशुद्ध हल पर ५३ प्रतियोगियों ने प्रथम पुरस्कार जीता

सही उत्तर : १–रानी, २–भूत, ३–बही, ४–आग, ५–माता, ६–कह, ७–प्रपात, ८–प्रचार, ९–सरकार, १०–बढ़, ११–से, १२–उधर.

'पराग' उद्धरण प्रतियोगिता नं. २८ में तिरपन सर्वशुद्ध हल प्राप्त हुए इसलिए प्रथम पुरस्कार सर्वशुद्ध हल पर तिरपन प्रतियोगियों ने जीता, जिनमें से प्रत्येक को १३ रुपये ७० पैसे प्राप्त हुए.

अगर आपको पूरा भरोसा है कि आप पुरस्कार के हकदार हैं और आपका नाम पुरस्कार विजेताओं की सूची में नहीं है, तो आप २० मई १९७१ से पूर्व **प्रतियोगिता संपादक, 'पराग' उद्धरण प्रतियोगिता, पोस्ट बैग नं. २०७, टाइम्स आफ इंडिया, प्रेस बंबई–१** के पते पर एक पत्र लिखें. उस पत्र में अपनी पूर्ति की अशुद्धियों की संख्या, पोस्टल आर्डर, मनी आर्डर या नकद रसीद का नंबर दें. साथ में जांच की फीस के रूप में १ रुपया मनी आर्डर या पोस्टलआर्डर द्वारा भेजें. यदि आपका दावा सही होगा, तो पुरस्कार की राशि को उसी के अनुसार फिर से वितरित किया जाएगा.

सर्वशुद्ध हल वाले ५३ विजेता : प्रत्येक को १३ रुपये ७० पैसे

१–कु. आशा रानी, द्वारा श्री पी. एन. चुघ, डी–३३।बी, विजयनगर, दिल्ली-९. २–आलोक अग्रवाल, ३–कु. नीलम अग्रवाल, ४–कु. रचना अग्रवाल, ५–कु. मंजू अग्रवाल–उपरोक्त नं. २ से ५ तक के पते: द्वारा राजेंद्रकुमार अग्रवाल, बिसौली गेट, चंदौसी (उ. प्र). ६–विजयकुमार अग्रवाल, ७–कु. कुसुम अग्रवाल–उपरोक्त नं. ६ और ७ के पते : द्वारा एवरेस्ट रोडवेज, पो. फारबिसगंज, जिला पुर्णिया (बिहार). ८–रुक्मनी, द्वारा श्री गनपत राय आर्य, सदर बाजार, लाडनू (राजस्थान). ९–लीला डी. भाटिया, १०–कुमारी हंसा डी. भाटिया, ११–कुमारी कामिनी डी. भाटिया, १२–कु. अंजना डी. भाटिया, १३–कु. विमला डी. भाटिया–उपरोक्त नं. ९ से १३ तक के पते : द्वारा डी. जे. भाटिया सर्वोदय नगर, वाड़िया रोड, पोरबंदर (सौराष्ट्र). १४–श्रीमती मालती चौरसिया, १५–कु. सीमा चौरसिया, १६–शशिकला चौरसिया, १७–कु. कली चौरसिया–उपरोक्त नं. १४ से १७ तक के पते : द्वारा श्री मैयालाल चौरसि गोपालगंज, सागर (म. प्र.). १८–पी. एन. चुघ, १९–एस. एम. चुघ, २०–कु. आशा चुघ––उपरोक्त नं. १८ से तक के पते : डी–३३।बी, विजयनगर, दिल्ली–९. २१–श्रीमती धर्मेश्री देवी, द्वारा श्री राजेंद्रकुमार अग्र बिसौली गेट, चंदौसी (उ. प्र.). २२–ए. के. चोपरा, द्वारा श्री. पी. एन. चुघ, डी–३३ बी, विजयनगर, दिल्ली २३–श्रीमती भुवानी देवी चौरसिया, द्वारा श्री मैयालाल चौरसिया, गोपालगंज, सागर (म. प्र.). २४–विनेश, द्वा श्रीमती सुषमा शर्मा, 'विजय'कार्यालय, रूपरेखा, कनाटप्लेस, देहरादून (उ. प्र.). २५–मौना, २६–मधु, २७–गोविंद –उपरोक्त नं. २५ से २७ तक के पते : ३१३।९, जोशी रोड, करौल बाग, नई दिल्ली–५. २८–नरेश गोयल, द्वा जे. सी. गोयल, ए।१४४, विवेक विहार, आई. टी. आई. के समीप, शाहदरा, दिल्ली–३२. २९–हाबिल गायकर स्टेशन रोड, राऊ (म. प्र). ३०–कविता, द्वारा श्रीमती सुषमा शर्मा, 'विजय कार्यालय, रूप रेखा, कनाट प्लेस, देहर (उ. प्र.) ३१–मंजुरानी लड़ा, ३२–मुरलीधर लड़ा, ३३–किरणकुमारी लड़ा, ३४–चंद्रप्रकाश गट्टुराम लड़ा–उपर नं. ३१ से ३४ तक के पते : द्वारा भंवरीदेवी लड़ा, पो. निम्बी जोधां, बाया लाडनूं, जिला नागौर (राज.). ३५–महेंद्र द्वारा श्रीमती सुषमा शर्मा, 'विजय' कार्यालय, रूप रेखा, कनाट प्लेस, देहरादून (उ. प्र.). ३६–केवलकृष्ण मेहता, द्वा राकेश मेहता, ३८–बबली मेहता–उपरोक्त नं. ३६ से ३८ तक के पते : ३१३।९, जोशी रोड, करौलबाग, नई दिल्ली ३९–निशा, द्वारा श्रीमती सुषमा शर्मा, 'विजय' कार्यालय, रूपरेखा, कनाट प्लेस, देहरादून (उ. प्र.). ४०–पोटनल द्वारा श्री. पी. एन. चुघ, डी–३३। बी, विजय नगर, दिल्ली–९. ४१–गुटकी राठी, द्वारा कमलकिशोर राठी, पो. नि जोधां, जिला नागौर (राजस्थान). ४३–कमलकिशोर राठी, द्वारा बद्रीनारायणजी राठी, पो. निम्बी जोधां, नागौर (राजस्थान). ४३–रमेश, द्वारा श्रीमती सुषमा शर्मा, 'विजय कार्यालय, रूपरेखा, कनाट प्लेस, देहरादून (उ. ४४–अनिलकुमार रावल, २१, साउथ राज मोहल्ला, इंदौर (म. प्र.). ४५–रवि. ४६–राजरानी–उपरोक्त नं. ४ ४६ के पते : द्वारा श्रीमती सुषमा शर्मा, 'विजय' कार्यालय, रूप रेखा, कनाट प्लेस, देहरादून (उ. ४७–जसविंदर पाल सिंह, द्वारा श्री. पी. एन. चुघ, डी–३३।बी, विजय नगर, दिल्ली–९. ४८–रघुवीरशरण, श्रीमती सुषमा शर्मा, विजय कार्यालय, रूप रेखा, कनाट प्लेस, देहरादून (उ. प्र.). ४९–पी. एल. टेंभरे, द्वारा श्री पी. चुघ, डी–३३।बी, विजय नगर, दिल्ली–९. ५०–शेखर उपाध्याय, ५१–दीनदयाल उपाध्याय, ५२–अरुणकु उपाध्याय–उपरोक्त नं. ५० से ५२ तक के पते : द्वारा दीनदयाल उपाध्याय, पुलियाऊ, गनेशघाट, सागर (म. ५३–कु. सुभाष बत्राना, द्वारा श्री पी. एन. चुघ, डी–३३।बी, विजय नगर, दिल्ली–९.

१ अशुद्धिवाले १३७ विजेता : प्रत्येक को २ रुपये

इसी प्रकार एक अशुद्धि पर १३७ प्रतियोगियों को पुरस्कार मिले. इनमें से प्रत्येक को २ रुपये प्राप्त हुए. अशुद्धि पर इनाम जीतने वालों की संख्या काफी ज्यादा होने के कारण उन सब के नाम प्रकाशित करना संभव नहीं है.

पुरस्कार की राशि मई १९७१ में कार्यालय से भेजी जाएगी.

इस प्रतियोगिता में जिन पुस्तकों से संकेत-वाक्य लिये गए उनका परिचय

१-सांच को आंच नहीं––ले. हरिकृष्ण देवसरे––प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस––पृ. १०. २–उपर्युक्त ––पृ. ३–उपर्युक्त. ––पृ. ३३. ४–गधा चला गंधर्व नगर को––ले. बिगत––प्र. ज्ञानभारती बाल पॉकेट बुक्स––पृ. उपर्युक्त पृ. ४०. ६–उपर्युक्त––पृ. ४९. ७–भारत रत्न––प्र. प्रकाशन विभाग, भारत सरकार––पृ. ३०. ८–उप ––पृ. ३५. ९–इस माटी के लाल––ले. वेद मित्र––प्र. शकुन प्रकाशन––पृ. १९. १०–उपर्युक्त––पृ. ६३. उपर्युक्त––पृ. ७२. १२–आंख और अंगुली––ले. चन्द्रदत्त इंदु––प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस––पृ. ३२.

अनिल पूरे जोर से बल्ला घुमाता है. गेंद सामने खड़े फील्डर के सिर पर से होती हुई चली जा रही है. चौक्का! मैदान तालियों के शोर से गूंज रहा है. अनिल की सेंचुरी जो हो गई है. बल्ला घुमाते वक्त अनिल का दिल 'धक्' से रह गया था. जरा-सी चूक हो गई, तो आउट निन्यानवे पर. मगर नहीं, शाट सही पड़ा.

तालियां गूंजती ही जा रही हैं. उनकी तड़-तड़-तड़ बढ़ती जा रही है, बढ़ती जा रही है और अब तो जैसे तालियों की ताल एक-दूसरे में घुलने लगी हैं.

टिर्र्र् टिर्र्र्र...टिर्र्र् टिर्र्र्र...मैदान और दर्शक धुंधले होते-होते गायब हो जाते हैं. अनिल आंखें खोलकर जल्दी-जल्दी पलकें झपकाता है और उछलकर बिस्तर पर बैठ जाता है.

अलार्म बज रहा है. वह हाथ बढ़ाकर अलार्म बंद कर देता है. वह रात को अलार्म लगाकर सोया था. उसकी निगाहें छोटे कांटे पर रुक जाती हैं, जिसके नीचे चार का अक्षर दबा हुआ है. अनिल को लगता है जैसे वह भी चार मन के बोझ से दबा जा रहा हो.

इस वक्त उठकर पढ़ना! ऐसे मीठे-मीठे सपनों को अलविदा कहकर किताबों में सिर खपाना! क्या मुसीबत है! उसकी पलकें भारी होती जा रही हैं. वह क्या करे?

वह अलार्म के कांटे को साढ़े चार पर घुमाता है. आधा घंटा और सो ले, सपने में थोड़ी बॉलिंग भी कर ले, फिर उठेगा.

मगर सपना बदल जाता है. वह होटल में बैठा डोसा आने का इंतजार कर रहा है कि काउंटर पर रखे फोन की घंटी बजती है अजीब तरह से. फोन उठाए जाने के बाद

kissekahani.com

मौसवे का जाल

भी घंटी बजती रहती है, बजती रहती है...अनिल को उठकर अलार्म बंद करना पड़ता है...

मुफ्त के डोसे का यूं हाथ से जाना...उसका मूड उखड़ जाता है. बुझे मन से वह फिर लंबा हो जाता है किसी और दिलचस्प सपने की प्रतीक्षा में.

●

पिछले तीन दिनों से अनिल के साथ यही हो रहा है. इसका मतलब यह नहीं कि अलार्म की टिर्र्र्-टिर्र्र् सुनने में अनिल को मजा आता है. बात दरअसल यह है कि इम्तहान सिर पर आ गए हैं. वैसे इम्तहान हर साल होते

हैं, मगर इस बार के इम्त
इस हायर सेकेंड्री के इम
सका, तभी उसे इंजीनियरि
बनी बी. एस-सी. के पापड़
कई सालों से लोअर सेकेंड
इस साल इतनी कोशिश क

आखिर किसी तरह
उठकर बैठते ही उसे भू
धोते वक्त अनिल ने से
पढ़ने बैठ जाएगा और
इतना तय करने के बाद
उसने डटकर नाश्ता किय
एक आधा पढ़ा उपन्यास

पूरा कर ले और इसीन
गला घोंटे, पढ़ाई कर सके
उपन्यास ज्यादा बड़
पूरा हो गया. उपन्यास
ली और मम्मी को चाय
पी कर, सुस्ती उतारकर
चाय ने अनिल को
अब वह जमकर पढ़ सके
वह अपनी कुर्सी प

है, मगर इस बार के इम्तहान का अपना ही महत्व है. इस हायर सेकेंड्री के इम्तहान में अनिल अव्वल आ सका, तभी उसे इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला मिलगा, वर्ना बी. एस-सी. के पापड़ बेलने पड़ेंगे. इसी लिए पिछले कई सालों से लोअर सेकंड डिवीजन पास होने वाला अनिल इस साल इतनी कोशिश कर रहा है.

आखिर किसी तरह अनिल की नींद टूटी और उठकर बैठते ही उसे भूख का एहसास हुआ. हाथ-मुंह धोते वक्त अनिल ने सोचा कि वह नाश्ता करते ही पढ़ने बैठ जाएगा और बारह बजे से पहले नहीं उठेगा. इतना तय करने के बाद उसे सुकून महसूस हुआ और उसने डटकर नाश्ता किया, फिर दो कप चाय पी और एक आधा पढ़ा उपन्यास लेकर बैठ गया, ताकि उपन्यास

फोटो : मोहनकुमार शर्मा

पूरा कर ले और इत्मीनान से, बिना अपनी जिज्ञासा का गला घोंटे, पढ़ाई कर सके.

उपन्यास ज्यादा बड़ा नहीं था. साढ़े दस बजते-बजते पूरा हो गया. उपन्यास बंद करके अनिल ने अंगड़ाई ली और मम्मी को चाय बनाने को कह आया ताकि चाय पी कर, सुस्ती उतारकर पढ़ाई करने बैठ सके.

चाय ने अनिल को सचमुच राहत दी. उसे लगा कि अब वह जमकर पढ़ सकेगा.

वह अपनी कुर्सी पर जम गया. फिर उसने आस्तीनें चढ़ाई और पहलवान की तरह ललकारते हुए बीज गणित की किताब उठा ली.

"बहुत सयाने हो!" उसके कानों में आवाज आई. "समझते हो बाकी सब गधे हैं, लच्चर हैं!"

अच्छा, तो बाहर मम्मी और सब्जी वाले में वार्ता चल रही है.

"अरे हम्म क्या समझेंगे किसी को कुछ, हम्म तो वसूल की बात करते हैं," सब्जी वाले ने अपने खास अंदाज में फरमाया, "जो चीज घर में रुपे किलो पड़ती है वह 'बाहर' नब्बे पैसे कैसे दे दें?"

"लगे बातें बघारने...काम की बात करो..."

"ए लो, बाई साहब! आप लोग सब्जियां बघारती हो और हम बातें भी न बघारें!"

"क्या खाक सब्जी बघारेंगे! इतनी महंगी देते हो कि मन होता है कि इससे तो जहर खा लें, वह अच्छा!"

घर के नौकर मांगीलाल ने भी बातचीत में अपनी टांग अड़ा दी थी और महतरानी भी आकर वहीं खड़ी हो गई थी. अनिल सुनता रहा.

जब दीवार घड़ी ने टन-टन-टन कर ग्यारह बजाए, तो अनिल चौंका.

"रेखा!" उसने छोटी बहन को पुकारा—"एक कप चाय बना लाओ, मन्नी!"

रेखा वहीं एक कुर्सी पर बैठी किताब पढ़ रही थी, सिर उठाकर बोली, "जी हां, आप आराम फरमाइए, मैं अभी बनाकर लाती हूं चाय!" उसके स्वर में चिगा-

—शाहिद अब्बास अब्बासी—

रियां थीं. उसने फिर वापस किताब में सिर घुसा दिया.

दोबारा कुछ कहना फिजूल था. थोड़ी चुस्ती लाने के लिए उसने बैडमिंटन का बल्ला और चिड़िया संभाली और दीवार पर शाट मार-मारकर खेलने लगा.

बारह बजे मम्मी ने खाने के लिए बुलाया. इतना प्यारा खाना बनाया था मम्मी ने कि वह खाता ही चला गया. उसका पेट भर गया मगर मन नहीं भरा, और जब मन भरा तब तक पेट ओवरफ्लो होने को आ गया था.

अप्रैल की बोझिल दोपहरी अनिल पर नशा-सा तारी कर देती है और तिसपर ठसाठस भरा पेट. झपकी आई और नींद में बदल गई.

●

जब साढ़े तीन बजे अनिल उठा, तो सिर भारी हो रहा था.

उसने हाथ-मुंह धोए और जब चाय पीने के लिए किचिन जाते हुए उसकी निगाह कैलेंडर पर पड़ी, तो उसका दिल धक् से रह गया.

इम्तहान को सिर्फ महीना-भर बचा है और उसे करीब सारे सब्जेक्ट्स तैयार करने हैं. कल रात को जब सोया था, तो मन में यह उम्मीद लेकर कि कल दिनभर

फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट से
नियमित रूप से ब्रश करने से मसूढ़ों
की तकलीफ़ और दाँतों की सड़न दूर ही रहती है।

फ़ोरहॅन्स
–दाँतों के एक डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट

क्योंकि फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट दाँतों और मसूढ़ों, दोनों की रक्षा करता है।
यह दाँतों के डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट है। इस टूथपेस्ट में मसूढ़ों की रक्षा के लिए कई खास तत्व मिले होते हैं।
मसूढ़ों की तकलीफ़ और दाँतों की सड़न रोकने का सबसे बढ़िया तरीक़ा है, दाँतों को नियमित रूप से सुबह और रात को फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट से ब्रश करना। आपके बच्चे को यह ज़रूरी बात सिखाने का समय यही है–उसका बचपन। जी हाँ, अभी, इसी उम्र में उनमें सीखने की बड़ी लगन रहती है। इसलिए यह शुभ शुरूआत आज ही से क्यों न की जाय!

फ़ोरहॅन्स से दाँतों की देखभाल सीखने में देर क्या सबेर क्या

मुफ़्त! "दाँतों और मसूढ़ों की रक्षा" नामक रंगीन सूचना पुस्तिका १० भाषाओं में मिलती है। मँगवाने का पता है: मैनर्स केयरल एडवाइज़री ब्यूरो, पोस्ट बैग १००३१ बम्बई-१ बी आर

नाम: _____ उम्र _____

पता: _____ P.10

*कृपया (डाक-खर्च के लिए) २० पैसे के टिकट साथ भेजिए और इनमें से अपनी पसन्द की भाषा के नीचे रेखा खींच दीजिए: अंग्रेज़ी, हिन्दी, मराठी, गुजराती, उर्दू, बंगाली, तामिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड

पढ़कर सब विषयों का एक-एक चैप्टर पूरा कर लेगा. उसे लगा कि उसने दिनभर के बेशकीमती बारह घंटे खो दिए हैं. उसका दिल डूबने लगा. पक्का इरादा करने के बावजूद वह पढ़ क्यों नहीं पाता?

बेमन से वह टेबिल पर आकर बैठ गया. मन में खीझ और अपने आप पर गुस्सा भरा था. उसका बस चलता, तो वह दिन की शुरूआत दोबारा करवा लेता.

ऐसी मन:स्थिति में वह क्या खाक पढ़ पाएगा? अनिल ने सोचा कि इससे तो अच्छा यह हो कि वह प्रकाश से मिल आए. और कुछ नहीं तो प्रकाश से दो-चार काम की बातें ही मालूम कर लेगा.

●

प्रकाश के घर पहुंचकर उसने दरवाजा खटखटाया; प्रकाश की अम्मां दरवाजा खोलने आईं.

"प्रकाश है?" अनिल ने प्रश्न किया.

हमेशा की तरह प्रकाश की मां ने अनिल को सोने के कमरे में जाने के लिए कहा. प्रकाश कमरे के एक कोने में टेबिल जमाए बैठा पढ़ रहा था.

पास पड़ी चारपाई पर बैठते हुए अनिल ने पूछा "कहो, मियां, क्या पढ़ रहे हो?"

प्रकाश ने मुस्कुराकर किताब का मुखपृष्ठ अनिल के सामने कर दिया.

"पलकों की ढाल!" अनिल ने आश्चर्य से किताब का शीर्षक पढ़ा. "तुम उपन्यास पढ़ने में लगे हो!"

प्रकाश मुस्कराता ही रहा. सवाल के जवाब में उसने हाथ का हल्का-सा इशारा किया.

टेबिल पर और भी दो तीन किताबें रखी थीं. अनिल ने देखा : 'श्रेष्ठतम रूसी कहानियां,' 'उर्दू की प्रतिनिधि हास्य कविताएं,' और 'दास्ताने नसीरुद्दीन.'

"तुम आजकल यही सब पढ़ते रहते हो?" अनिल ने हैरान होकर पूछा.

"और क्या?" प्रकाश ने अपने खास, सधे हुए, अंदाज से कहा. "सुबह से इन्हें ही पढ़ रहा हूं!"

"इम्तहान की तैयारी नहीं करनी?"

"इम्तहान की तैयारी ही तो कर रहा हूं. इन्हें पढ़ने से ही तो मूड बनता है!"

अनिल गंभीर हो गया—"मैंने भी आज 'एक कत्ल तीन कातिल' पढ़कर पूरा किया. मूड बनाना भी सचमुच बड़ा टेढ़ा काम है!"

"सचमुच!" प्रकाश ने कहा.

●

जब अनिल प्रकाश के यहां से लौटा, तो उसका मन हल्का हो चुका था. आखिर प्रकाश, क्लास का सबसे शानदार स्टूडेंट, भी तो आदमी है, उसके पास भी तो दिल है, उसे भी अपने मूड को मनाना पड़ता है.

उसने सोचा कि हल्के मन से वह सुबह उठकर अच्छी तरह पढ़ सकेगा. इसलिए तीन बजे उठने का अलार्म ल ाकर वह आठ बजे ही सो गया.

और वह रात के तीन बजे सचमुच उठ बैठा. मुंह धोने के इरादे से बाथ-रूम तक भी पहुंच गया. मगर तभी उसे खयाल आया कि तीन बजे से पढ़ता रहा, तो सुबह होते-होते आंखें दुख जा ंगी. पलकें झपीं तो जा ही रही थीं, पांच बजे का अलार्म लगाकर वह फिर सो गया. जब सुबह उसकी नींद टूटी, तो आठ बज रहे थे. बीच में अलार्म बजकर चुप हो गया था. उसे ऐसी गहरी नींद आई हुई थी कि टूट नहीं सकी.

नाश्ता करने के बाद पढ़ाई शुरू करने के पहले अनिल ने टाइम टेबिल बनाया और कुल कोर्स से कुल टाइम

(शेष पृष्ठ ५४ पर)

'पराग' के पाठकों को यह सूचना देते हुए हमें बड़ा दुःख है कि हमारे लेखक परिवार के एक सम्मानित सदस्य विद्वान् के. नारायणन् अब नहीं रहे. गत २० फरवरी के प्रातःकाल अचानक हृदय-गति रुक जाने से त्रिवेंद्रम में उनका देहांत हो गया. मृत्यु के समय वह केवल ४३ वर्ष के थे.

विद्वान् के. नारायणन् केरल निवासी थे. अब तक उनकी लगभग पौने तीन सौ रचनाएं हिंदी की लगभग ६० विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी हैं. सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक अनेक विषयों में उनकी रुचि थी. उनकी कहानियों, एकांकियों तथा लेखों में उनकी बहुमुखी प्रतिभा के दर्शन होते हैं. त्रिवेंद्रम से प्रकाशित हिंदी मासिक 'केरल ज्योति' का भी उन्होंने बड़ी लगन और निष्ठा से संपादन किया.

लेखक के अलावा वह संगीत के भी अच्छे साधक थे. कर्नाटक संगीत में उनकी अच्छी गति थी. इसपर उन्होंने हिंदी में काफी लिखा है.

'पराग' से उनका संबंध काफी पुराना था. उनकी कहानियां हमारे पाठकों में बड़े चाव से पढ़ी जाती थीं. इसका सबूत है 'हमारी पसंद प्रतियोगिता नं. ३३' में उनकी 'ट्रांजिस्टर' शीर्षक कहानी का सर्वप्रथम आना.

अपने इस प्रिय लेखक के इतनी अल्प आयु में स्वर्गवासी हो जाने का हमें बड़ा दुःख है. 'पराग' परिवार उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है.

kissekahani.com

लेख

देश-विदेश के अनोखे त्योहार

— श्रीकृष्ण

अग्नि पर्व

अगर हमारे शरीर पर आग की एक छोटी-सी चिनगारी भी छू जाए, तो हम दर्द से चिल्ला उठते हैं. लेकिन तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि इस धरती पर कई ऐसे देश हैं जहां नंगे पांवों धधकते अंगारों पर चलने के त्योहार मनाए जाते हैं. सब से अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि आग पर उतरने से पूर्व वे अपने पांवों में कोई अग्निरोधक मरहम या लेप भी नहीं लगाते, फिर भी उनके पैरों में न तो कभी फफोले ही पड़ते हैं और न जलने का किसी प्रकार का कोई घाव ही आज तक दिखाई पड़ा.

आओ, सब से पहले हम तुम्हारा परिचय फिजी के अग्नि पर्व से कराते हैं.

एक विशेष अवसर पर फिजी वासी नंगे पांवों आग पर चलने का पर्व मनाते हैं. आग पर उतरने के दिन से एक सप्ताह पूर्व ही तैयारी शुरू हो जाती है. एक विशाल गड्ढा खोदा जाता है. इस गड्ढे में मोटी-मोटी लकड़ियों की और बड़े-बड़े पत्थरों की बहुत ऊंची तह-पर-तह चुनकर आग लगा दी जाती है और फिर कई दिन तक बराबर ईंधन डाल-डाल कर उसे प्रज्ज्वलित किया जाता है. जब लकड़ियां जल-जलकर उनके बड़े-बड़े अंगारे बन जाते हैं, और पत्थर तपने लगते हैं, तब आग पर चलने वाले नंगे पैरों अंगारों और पत्थरों को रौंदते हुए अग्निकुंड के आर-पार कई चक्कर लगाते हैं.

फिजी द्वीप के बेका क्षेत्र के आदिवासी तपते हुए पत्थरों पर नंगे पांव चलकर अपनी धार्मिक निष्ठा का परिचय देते हैं

भारत के बहु गांव में
पर नंगे पांव आग प

अग्निकुंड में उतरने
का मुखिया अपने गले
फूल तोड़कर आग पर
का खिला रहता है, तब
कुंड में उतर जाते हैं. लेकि
समझा जाता है कि उन
गई. लेकिन ऐसा शायद
चलते समय उनके पांव
सचमुच फूलों पर कदम

प्रशांत महासागर
है—उमति. उमति द्वीप
के अवसर पर अग्नि प
पर्व से केवल दो दिन
और उसमें लकड़ियों के
आग में तपने के बाद
अंगारे बन जाते हैं, तु
नंगे पांवों उन पर चलते
मृत-पूर्वजों की आत्मा
वे उन्हें अग्नि पथ प
शक्ति और प्रेरणा प्र

हमारे देश में भी
परंपरा है. आज भी
हैं, जहां विशेष धार्मि

भारत के महू गांव में 'भोक्ता मेले' के अवसर पर नंगे पांव आग पर चलते हुए दो भोक्ता

अग्निकुंड में उतरने से पूर्व आग पर चलने वालों का मुखिया अपने गले में पड़ी फूलों की माला से एक फूल तोड़कर आग पर फेंकता है. अगर फूल खिला का खिला रहता है, तब तो सब के सब निधड़क अग्निकुंड में उतर जाते हैं. लेकिन यदि फूल मुरझा जाता है तो समझा जाता है कि उनकी साधना में कोई त्रुटि रह गई. लेकिन ऐसा शायद ही कभी होता हो. आग पर चलते समय उनके पांव इस प्रकार पड़ते हैं, मानो वे सचमुच फूलों पर कदम रख रहे हों.

प्रशांत महासागर में ही एक और छोटा-सा द्वीप है—उमति. उमति द्वीप के निवासी भी एक विशेष पर्व के अवसर पर अग्नि यात्रा करते हैं. यहां अग्निकुंड को पर्व से केवल दो दिन पूर्व प्रज्ज्वलित किया जाता है और उसमें लकड़ियों के स्थान पर पत्थर तपाए जाते हैं. आग में तपने के बाद जब पत्थर जलकर एक दम लाल अंगारे बन जाते हैं, तो सब द्वीपवासी पंक्ति बांधकर नंगे पांवों उन पर चलते हैं. आग पर चलने से पूर्व वे अपने मृत-पूर्वजों की आत्माओं के प्रति प्रार्थना करते हैं कि वे उन्हें अग्नि पथ पर साहस के साथ आगे बढ़ने की शक्ति और प्रेरणा प्रदान करें.

हमारे देश में भी आग पर चलने की अत्यंत प्राचीन परंपरा है. आज भी तमिलनाडु प्रदेश में कुछ गांव ऐसे हैं, जहां विशेष धार्मिक पर्वों पर आग पर चलना बहुत शुभ माना जाता है. दक्षिण-पूर्व की एक आदिम जाति में गांव से बाहर लगभग दस फुट लंबा एक गड्ढा खोदा जाता है, फिर उसमें लकड़ियां डालकर मंत्रोच्चार के साथ उनको जलाया जाता है. जब लकड़ियां जल कर दहकते हुए अंगारे बन जाती हैं, तो लोग उन पर नंगे पांवों नाचते-गाते हैं. कहते हैं कि मारवाड़ में भी एक लोकनृत्य इस प्रकार का है, जिसमें नर्तक दहकते हुए अंगारों पर नृत्य करते हैं.

दक्षिण भारत की बैगा आदिम जाति में रामनवमी के त्योहार पर लोहे की मोटी-मोटी जंजीरों को आग में तपाया जाता है. जब वे तपकर लाल हो जाती हैं, तो देवी के भक्त नंगे हाथों इन जंजीरों को दोहते हैं. लेकिन आश्चर्य! तपी हुई इन जंजीरों को दोहते समय इनके हाथ नहीं जलते!

उड़ीसा के चोचका देवी के मंदिर में भी हर वर्ष बैसाखी के दिन अग्नि उत्सव मनाया जाता है. जिन लोगों ने कभी चोचका देवी के सामने मनौती मानी होती है और यदि देवी की कृपा से उनकी मनोकामना पूरी हो जाती है, तो वे आने वाली बैसाखी को देवी के प्रति अपनी भक्ति, श्रद्धा और विश्वास प्रकट करने के लिए मंदिर के आंगन में दहकते हुए अंगारों पर नंगे पांव चलते हैं.

इस प्रकार हर बैसाखी के अवसर पर अनेक मनौती मानने वाले देवी के आंगन में एकत्र हो जाते हैं ताकि अंगारों पर चलकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर सकें. हरेक अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार मंदिर में एक फुट चौड़ा और जितना उसे चलना होता है उतना लंबा गड्ढा खोदता है. फिर उसे कोयलों से लबालब भर कर घास-फूस की सहायता से आग लगा देता है. अब मंदिर के पुजारी पंखों की सहायता से उन कोयलों को तेज दहकाते हैं. इस तरह मंदिर के आंगन में सुर्ख अंगारों से लपलपाती हुई अनेक पगडंडियां बन जाती हैं, जिनकी लंबाई दस गज से लेकर चालीस गज तक होती है. इन पगडंडियों के दोनों सिरों पर एक छोटा-सा गड्ढा भी बना दिया जाता है जिसमें देवी का चरणामृत भरा रहता है.

ठीक दोपहर के समय भक्त लोग महानदी में स्नान करने के बाद देवी का प्रसाद लेते हैं और भजन करते हुए अपनी-अपनी दहकती हुई पगडंडी पर खड़े होकर फल-फूल और चंदन आदि से अग्नि की पूजा करते हैं. इसके बाद चरणामृत भरे गड्ढे में पैर डुबो कर लाल-लाल अंगारों पर चलते हैं. दूसरे सिरे पर पहुंचकर फिर चरणामृत भरे गड्ढे में पैर डुबोकर अंगारों पर चलते हुए पहले सिरे पर वापस आकर देवी को अपनी प्रतिज्ञा सकुशल पूरी होने पर धन्यवाद देते हैं. यह सच है कि अंगारों पर चलने के उपरांत किसी प्रकार का जलने का निशान उनके पांवों में नहीं पड़ता.

छोटा नागपुर के विविध अंचलों में निवास करने

वाली कुछ आदिम जातियों में भी हर वर्ष गर्मी के मौसम में धधकती आग पर नंगे पांवों चलने की विचित्र प्रथा है. सिर्फ इतना ही नहीं, अपनी हथेलियों पर दहकते अंगारे लेकर वे देवस्थल तक जाते हैं और अपनी उपासना की सत्यता की गारंटी देते हैं.

वैज्ञानिकों और डाक्टरों ने अनेक बार आग पर उतरने से पूर्व और बाद में उनके पैरों की जांच की है, लेकिन अभी तक यह रहस्य उनके लिए सिरदर्द ही बना हुआ है.

पत्थरों की वर्षा

क्या तुम किसी ऐसे त्योहार के बारे में जानते हो, जिसे एक दूसरे को लहूलुहान करके मनाया जाता है? इस जानलेवा त्योहार का नाम है— 'गोटमार'. गोटमार 'गोट' और 'मार'— इन दो शब्दों को जोड़ने से बना है. 'गोट' मराठी भाषा का शब्द है, और इसका अर्थ है पत्थर का छोटा टुकड़ा. तुम्हें जानकर

पत्थरों की वर्षा के बीच दो पक्षों में होड़

आश्चर्य होगा कि इस त्योहार के दिन दो पड़ोसी गांवों के लोग एक दूसरे को पत्थरों से मारते हैं. ये दोनों पड़ोसी गांव हैं— पांढुर्ना और सावर गांव. पांढुर्ना मध्य प्रदेश में महाराष्ट्र की सीमा पर बसा एक छोटा-सा गांव है. इस गांव से लगी एक नदी बहती है— जाम. सावर गांव जाम नदी के दूसरे किनारे पर है.

महाराष्ट्र के प्रसिद्ध त्योहार 'पोला' के अगले दिन सुबह से ही दोनों गांवों में गाड़ियां भर-भरकर पत्थर आने लगते हैं और देखते ही देखते जाम नदी के दोनों किनारों पर पत्थर के ऊंचे-ऊंचे ढेर लग जाते हैं. इस समय तक दोनों गांव वालों में आपस में खूब हंसी-मजाक चलता रहता है. तब उन्हें देखकर कोई सोच भी नहीं सकता कि अभी कुछ देर में अपने-अपने ग्राम देवता की पूजा कर लौटने के बाद ये ही लोग एक दूसरे के जानी दुश्मन बन जाएंगे.

नदी के बीचोंबीच लकड़ी का एक खंभा गाड़ दिया जाता है. इस खंभे को उखाड़कर ले जाने के लिए ही पांढुर्ना और सावर गांव के निवासियों में भयंकर होड़ लगती है. दोनों ओर के अनेकों तैराक नवयुवक पत्थरों की वर्षा से बचाव के लिए अपने सिरों को कपड़ों के कवच में लपेटे हुए नदी में कूद पड़ते हैं. कुछ निहत्थे होते हैं, तो कुछ के हाथों में फरसे और कुल्हाड़ियां होती हैं. अगर खंभा उखाड़ा न जा सका, तो काटकर ही ले जाना होता है.

ज्यों ही दोनों ओर के युवक लहरों से जूझते हुए तैरकर खंभे की ओर बढ़ते हैं, दोनों किनारों पर खड़े सैकड़ों लोग अपने हाथों में पत्थर उठा लेते हैं और निशाने ताक-ताक कर पूरी ताकत से विपक्षी तैराकों को मारते हैं. इसके लिए वे लोग महीनों पहले से ही निशानेबाजी का अभ्यास करते हैं. तेज गति से फिकने वाले ये पत्थर किस सिर से होली खेलेंगे, कोई ठिकाना नहीं!

लेकिन इन तैराक युवकों की हिम्मत और हौसले की तुम्हें दाद देनी होगी कि ये पत्थर उन्हें लहूलुहान कर देते हैं, खून बह-बहकर नदी के पानी को भी लाल कर देता है, फिर भी उन्हें इसकी जरा भी चिंता नहीं होती. चिंता है तो बस यही कि किस तरह खंभा उन्हें मिले. . . किनारों पर बजते ताशों और नगाड़ों की जोशीली आवाज, पत्थरों की वर्षा के बीच उन्हें बराबर आगे बढ़ने के लिए उकसाती रहती है. ज्यों-ज्यों खंभे की दूरी कम होती जाती है, पत्थरों की बौछार भी तेज होती जाती है, चीखें बढ़ती जाती हैं और नदी का पानी गहरा लाल होता जाता है और यह पत्थरबाजी तब तक बंद नहीं होती जब तक कि खंभा किसी भी पक्ष द्वारा उखाड़ नहीं लिया जाता.

लोग सोचते होंगे कि इस भीषण पत्थरबाजी में बहुतों की तो जान भी चली जाती होगी. पर यह जानकर आश्चर्य होता है कि यह अनोखा पर्व यहां सदियों से मनाया जाता रहा है लेकिन कहा जाता है कि गोटमार की चोट के कारण आज तक कोई मरा नहीं.

यहां के लोगों की मान्यता है कि इस दिन उनके सिर पर उनके इष्टदेव का मंगलकारी हाथ होता है, इसलिए उनका कुछ अनिष्ट नहीं होता. जो लोग घायल होते हैं वे भी अपने घावों और चोटों पर कोई दवा या मरहम न लगाकर मंदिर के होम की राख लगा लेते हैं. कहते हैं कि इष्टदेवता के आशीर्वाद से यह राख ही रामबाण औषधि का काम देती है.

लेकिन सब से अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि खंभा उखड़ने के बाद, विजयी और पराजित, दोनों पक्षों के लोग फिर आपस में घुलमिल जाते हैं

शा की तरह मित्रता और
ते हैं.
दोनों गांवों के लोग
हैं, उस समय उनका उत
बनता है. उनके मन में
व नहीं आता कि अभी
सिर फोड़ने पर तुले हुए
व पत्थरों की चर्चा चल ही
चौथ' के बारे में भी बता दि
ड, विशेष कर ग्वालियर
लित है.
आश्चर्य तो यह है कि अ
य दिनों की अपेक्षा सड़कों अ
ड़ और रौनक नजर आती
क दम उलटा होता है. दि
ल सुनसान हो जाती है. सात
अपने घरों में दुबक जाते
र्मा होती है. लेकिन यह बध
ी छतों से होती है. यहां के
घरों के आसपास जो दुष्ट
इससे घबराकर भाग जाते
पहले से छतों पर पत्थर के
लिये जाते हैं और 'पत्थ
भी दिशा में अंधाधुंध फेंक
सिर को लहूलुहान न करे
से अधिक अचरज की बात त
सिर भी फट जाए, इस दि
शिकायत ही होती है, न क

खून में सने

दुरंम शिया मुसलमानों
दुनिया में यह अकेला त्य
खुशी में नहीं, एक शहीद क
कहते हैं इस दिन मुसलमानों
नवासे इमाम हुसैन कर्बला
ते हुए शहीद हुए थे. उनक
तभी से हर वर्ष शिया मु
ों का शोक मनाया जाता है
दुरंम' कहलाता है.
मुहर्रम के आखिरी दिन
जिए के आगे-आगे एक स
ता है, जो इमाम हुसैन के
द दिलाता है, और पीछे
भीड़ 'हुसैन' का नाम ले-
ते जोर-जोर से अपनी छा
भी दिल दहल उठते हैं.
ते हैं. लहूलुहान तो अधि
के जोश-खरोश में जरा
यह तो हुई मुहर्रम क
नीनगर के नागरिकों के

और हमेशा की तरह मित्रता और स्नेह के सूत्र में बंध जाते हैं.

जब दोनों गांवों के लोग एक साथ खंभे को ले जाते हैं, उस समय उनका उत्साह और हर्षोल्लास देखते ही बनता है. उनके मन में जरा देर को भी यह भाव नहीं आता कि अभी कुछ देर पहले वे एक दूसरे का सिर फोड़ने पर तुले हुए थे.

जब पत्थरों की चर्चा चल ही रही है, तो लगे हाथों 'पत्थर चौथ' के बारे में भी बता दिया जाए. यह त्योहार बुंदेलखंड, विशेष कर ग्वालियर और चंबल अंचल में प्रचलित है.

आश्चर्य तो यह है कि अन्य त्योहारों पर जहां सामान्य दिनों की अपेक्षा सड़कों और बाजारों में अधिक भीड़भाड़ और रौनक नजर आती है, 'पत्थर चौथ' के दिन एकदम उलटा होता है. दिन छिपते-छिपते सड़कें बिलकुल सुनसान हो जाती हैं. सात बजे के बाद सब लोग अपने-अपने घरों में दुबक जाते हैं. इसके बाद पत्थरों की वर्षा होती है. लेकिन यह वर्षा आकाश से न होकर घरों की छतों से होती है. यहां के लोगों की ऐसी धारणा है कि घरों के आसपास जो दुष्ट आत्माएं मंडराती रहती हैं, वे इससे घबराकर भाग जाती हैं. इसके लिए कई दिन पहले से छतों पर पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े इकट्ठे कर लिये जाते हैं और 'पत्थर चौथ' के दिन उन्हें किसी भी दिशा में अंधाधुंध फेंकते हैं. अब कौन पत्थर किस सिर को लहूलुहान न करेगा, कहना मुश्किल है! सब से अधिक अचरज की बात तो यह है कि चाहे किसी का सिर भी फट जाए, इस दिन की चोटों की पुलिस में न शिकायत ही होती है, न कोई सुनवाई.

खून में सने त्योहार

मुहर्रम शिया मुसलमानों का प्रमुख त्योहार है. दुनिया में यह अकेला त्योहार है जो किसी जीत की खुशी में नहीं, एक शहीद की याद में मनाया जाता है. कहते हैं इस दिन मुसलमानों के पैगंबर हजरत मुहम्मद के नवासे इमाम हुसैन कर्बला के मैदान में यजीद से लड़ते हुए शहीद हुए थे. उनकी इस कुरबानी की याद में, तभी से हर वर्ष शिया मुसलमानों में सात या दस दिनों का शोक मनाया जाता है. यह शोक का समय ही 'मुहर्रम' कहलाता है.

मुहर्रम के आखिरी दिन ताजिए निकाले जाते हैं. ताजिए के आगे-आगे एक सजा हुआ छतरीधारी घोड़ा होता है, जो इमाम हुसैन के वफादार घोड़े दुलदुल की याद दिलाता है, और पीछे होती है मातम मनाने वालों की भीड़. 'हुसैन' का नाम ले-लेकर जब ये मातम मानने वाले जोर-जोर से अपनी छाती पीटते हैं तो देखने वालों के भी दिल दहल उठते हैं. कई तो इसमें बेहोश भी हो जाते हैं. लहूलुहान तो अधिकांश हो जाते हैं, फिर भी उनके जोश-खरोश में जरा भी कमी नहीं आती.

यह तो हुई मुहर्रम की बात. अब पढ़ो सिंगापुर के चीनीनगर के नागरिकों के उस अनोखे पर्व के बारे

भाले की मार को सहन करने वाला चीनी बालक

में जो साल में एक बार पूर्णमासी की रात को मनाया जाता है. इस रात को गरीबों के मसीहा कांग टेक चून यांग का जन्म भी हुआ था. इस पर्व को लोग शरीर को तरह-तरह की यातनाएं देकर नए चांद के स्वागत में मनाते हैं.

शरीर को यातना देने के इनके तरीके भी बहुत ही विचित्र और दिल को कंपा देने वाले हैं.

ढोलकों और मजीरों के शोर-शराबे के बीच भीड़ में से एक लड़का निकलकर अलग रखी हुई एक कुर्सी पर बैठ जाता है. कुछ क्षणों बाद हाथ में भाला लिये एक पुजारी आता है और धीरे-धीरे लड़के की ओर बढ़ता है. भीड़ में एकदम मौत-सा सन्नाटा छा जाता है. लोगों के दिल धड़क उठते हैं, पर लड़के के चेहरे पर भय का निशान भी नहीं होता. पुजारी लड़के के पास पहुंच कर पूरी ताकत के साथ वह भाला उसके गाल में भोंक देता है, जो उस गाल को पार कर, दूसरे गाल को भी छेद कर निकल आता है. लड़के के गाल से खून का फव्वारा छूट पड़ता है.

देखते-देखते ही अब एक दूसरा लड़का भीड़ में से आगे बढ़ता है और एक ओर रखी बारह तलवारों की तीक्ष्ण धार वाली चारपाई पर नंगे बदन लेट जाता है. उसकी सारी पीठ लहूलुहान हो उठती है!

तभी हाथ में एक तेज चाकू लिये तीसरा युवक आता है और बिजली की-सी फुर्ती से वह चाकू के वार से अपने दोनों पैरों से बारी-बारी से मांस के लोथड़े काटकर हवा में उछाल देता है.

आधी रात बीतते-बीतते और भी तरह-तरह से ये लोग अपने शरीर को भयानक पीड़ा पहुंचाते हैं और अपने ही खून से होली खेलते हैं. लेकिन इसके बाद पीड़ा की चीत्कार और कराह सुनाई पड़ने की कौन कहे, चारों ओर ऐसी खामोशी छा जाती है मानो कुछ हुआ ही न हो. ●

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २३ दरियागंज, दिल्ली–६.

डाक-टिकटों पर पक्षी

—प्रभातकुमार गुप्त

पक्षियों के डाक-टिकट संग्रह करने का शौक आजकल आम हो गया है. कारण, एक तो पक्षियों के डाक-टिकट सुंदर होते हैं और दूसरे वे सरलता से उपलब्ध हो जाते हैं.

पक्षी का सबसे पहला डाक-टिकट आस्ट्रेलिया (पूर्वी) द्वारा १८४५ में प्रकाशित किया गया था. एक पैंस मूल्य के इस डाक-टिकट पर काले रंग की एक बत्तख का चित्र था. इसके बाद बोलिविया नामक देश ने एक ५ सैंट का टिकट १८६६ में छापा. १८७५ में जापान ने १२, १५ व ४५ सेन मूल्यों के पक्षियों के डाक-टिकट प्रकाशित किए. एंगोला नामक देश द्वारा १९५१ में जो पक्षियों के टिकटों का सैट प्रकाशित किया गया, उसके टिकटों की संख्या विश्व में अब तक प्रकाशित सैटों में सबसे ज्यादा थी यानी २४. ऐसा अनुमान है कि अब तक विश्व के १७५ देश कुल मिला कर ४८०० ऐसे टिकट प्रकाशित कर चुके हैं जिन पर पक्षियों के चित्र हैं.

यहां हम आपको विश्व के कुछ विशेष देशों द्वारा प्रकाशित किए गए डाक-टिकटों के बारे में बताएंगे.

भूटान ने, जो विश्व में आज सर्वोत्तम टिकट प्रकाशित कर रहा है, १९६८ में कुछ पक्षियों के डाक-टिकट १,२,४,८ और १५ चेत्रम मूल्य के जारी किए थे (चित्र सं. १,२,३,४ और ६).

हंगरी पक्षियों के सुंदर व बड़े आकार के टिकट प्रकाशित करने में अग्रणी रहा है. उसने ६० फिलर मूल्य का एक सुंदर बाज पक्षी का डाक-टिकट प्रकाशित किया है (चित्र सं ५).

सिंगापुर ने पक्षियों के अत्यंत सुंदर टिकट छापे हैं. चित्र सं. ८ में एक सुंदर चिड़िया को गिरगिट का शिकार करते हुए दिखाया गया है. चित्र सं. ९ में बांस के पेड़ों पर एक पक्षी को गाते हुए दिखाया गया है, तो चित्र सं. १० में एक समुद्री पक्षी को चित्रित किया गया है.

बर्मा हमारा पड़ोसी देश है. इस देश के दो टिकटों (चित्र सं. ११ व १२) पर क्रमशः उल्लू और सारस के चित्र हैं. इनका मूल्य क्रमशः २५ व ५० पैसे है.

मलेशिया द्वारा जारी किए गए एक सैट के दो टिकट यहां दिए जा रहे हैं. इनका मूल्य २५ व ३० सैंट है. इन टिकटों पर नर तथा मादा पक्षियों को अपने घोंसलों में दिखाया गया है (चित्र सं. १३ व १४).

न्यूजीलैंड द्वारा जारी किए गए तीन व ढाई पैंस मूल्यों के पक्षियों के टिकटों की बिक्री के साथ प्रति टिकट एक पैंस स्वास्थ्य सुधार के लिए अतिरिक्त लिया गया (चित्र संख्या १५ व १६).

आस्ट्रेलिया के २० सैंट के एक टिकट पर जहां एक सुनहरी चिड़िया का चित्र है वहीं ५ सैंट मूल्य के टिकट पर एक पीली पूंछ वाली चिड़िया का चित्र है (चित्र सं. १७ व २१).

कनाडा द्वारा जारी किया गया एक ६ सैंट का टिकट चित्र संख्या ७ में बताया गया है.

संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा प्रकाशित किए गए २० सैंट के एक टिकट पर 'मकाव' नामक पक्षी के जोड़े को दिखाया गया है (चित्र सं. १८). चित्र संख्या १९ में एक चिड़िया को फूल के साथ व चित्र संख्या २० में दो समुद्री पक्षियों को उड़ते हुए देखा जा सकता है.

इंग्लैंड ने चार पक्षियों के सुंदर टिकट ८ अगस्त १९६६ को जारी किए. इन सभी का मूल्य चार-चार पैंस था.

यह प्रसन्नता का विषय रहा कि भारत ने भी ३१ दिसंबर १९६८ को चार विभिन्न मूल्यों (२० पैसे, ५० पैसे, १ रुपया व २ रुपये) के पक्षियों के टिकट जारी किए. इन टिकटों पर क्रमशः नीलकंठ, कठफोड़ा, दहोलिका और शकरखोरा नामक पक्षियों के चित्र थे.

४१ कांतिनगर, जयपुर (राज.)

संचय का सही अर्थ

दो प्रकार के व्यक्ति व्यर्थ ही कष्ट उठाते हैं और बेमतलब श्रम करते हैं. एक तो वे जो धन संचय करते हैं, परंतु उसे भोगते नहीं, दूसरे वे जो ज्ञानार्जन करते हैं, किंतु तदनुसार आचरण नहीं करते.

—शेख सादी

---

१ 2 ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ 20 २१

धोखे का जाल (पृष्ठ ४७ से आगे)

को भाग देकर पता लगाना चाहा कि उसे किस गति से काम करना चाहिए.

तभी पोस्टमैन आकर रवि की चिट्ठी दे गया, जिसे पढ़ते और जवाब लिखते-लिखते दस बज गए. फिर जब उसने अपनी शेष गणना पूरी की, तो उसके होश गुम हो गए. अगर वह डेढ़ चैप्टर रोज के हिसाब से पढ़े, तब जाकर उन्नीस दिनों में कोर्स पूरा कर पाएगा.

कल ही की तरह उसका दिल डूबने लगा. ऐसी हालत में उसे याद नहीं रहा कि उसे जरूरत से ज्यादा नहीं खाना चाहिए.

खाने के बाद टेबिल पर बैठा तो, मगर किताबें खोलने से पहले ही नींद के झोंके आने लगे. अपने आप पर झल्लाते हुए वह बिस्तर पर पड़ गया.

तीसरे पहर उठाया पिता जी ने, जो दफ्तर से जल्दी चले आए थे. "क्या बात है, अनिल, आजकल ख्वाब में पड़ते हो?"

"नहीं तो. . .क्यों, डैडी?"

"इसलिए कि जब भी देखता हूं तुम्हें खटिया पर सवार पाता हूं!"

"नहीं नहीं, डैडी," अनिल ने घबराकर कहा, "मैं तो जरा फ्रेश होने के लिए सो गया था."

"तो सोने से पहले तुम 'बासी' होते हो क्या?"

रेखा डैडी के पीछे खड़ी सयानापन दिखा रही थी : "इसी लिए भैया नहाने-धोने में भी घंटा भर लगाते हैं!" उसने अपना टका-सा मत प्रस्तुत किया.

अनिल उसे घूरता हुआ वहां से खिसक गया. जी चाहता था कि अपना सिर पीट ले. अगर इसी गति से पढ़ता रहा, तो कायदे से फेल भी नहीं हो पाएगा.

प्रकाश की बात याद आई, तो उसे कुछ तसल्ली हुई. उसने सोचा कि खुद प्रोग्राम बनाने और नाकामयाब होने से तो अच्छा है कि प्रकाश के प्रोग्राम पर चला जाए. चाय पीकर उसने 'सारिका' पढ़ने की कोशिश की. मगर मजा नहीं आया. मन का असंतोष कुछ भी नहीं करने दे रहा था. उसके कदम प्रकाश के घर की तरफ उठ गए.

●

प्रकाश के हाथ में इस वक्त 'कोहबर की शर्त' थी. अनिल जिस ढीले-ढाले ढंग से खाट पर बैठा, उसने प्रकाश का ध्यान खींच लिया.

"क्या बात है, बड़े सुस्त नजर आते हो?"

अनिल ने एक ठंडी सांस भरी—"प्रिपरेशन लीव्ज क्या हुई हैं, सारी चुस्ती छुट्टियां मनाने चली गई हैं! तुम बताओ, क्या चल रहा है?"

"देख ही रहे हो."

"यह तो ठीक है, मगर पढ़ाई कब शुरू कर रहे हो?"

"पढ़ाई तो चल ही रही है!"

"क्या मतलब?. . . अच्छा, यानी साथ-साथ पढ़ाई भी करते जा रहे हो."

प्रकाश ने सिर हिलाया.

"यार, तुम्हारी देखादेखी मैंने भी फैसला किया है कि हर समय पढ़ाई का बोझ ढोने से तो अच्छा है कि आधा दिन मूड बनाया जाए और आधा दिन जमकर पढ़ा जाए."

"बेस्ट आफ लक!" प्रकाश बोला.

"ऐसा करो, तुम 'पलकों की डाल' तो पढ़ चुके हो, जरा मुझे भी पढ़ने को दे दो. शायद उससे मूड अच्छा बने."

प्रकाश ने पास रखी अलमारी में से 'पलकों की डाल' निकालकर अनिल को थमा दी.

अनिल ने पुस्तक और लेखक का नाम पढ़ा, फिर कवर पलट कर पहले पन्ने पर नजर डाली—'त्रिकोणमिति'—लेखक. . . यह क्या! प्रकाश ने पन्ने पलटे. विषय-सूची, फिर पहला अध्याय. उसने जल्दी जल्दी सारे पन्ने पलट डाले. सारी किताब त्रिकोणमिति से ही भरी पड़ी थी. उसके चेहरे का रंग उतर गया.

त्रिकोणमिति एक तरफ पटक कर उसने 'धीरे बहे दोन रे' उठाया. उस कवर के नीचे 'उच्चतर माध्यमिक भौतिकी' दफन थी. अनिल ने मशीनी अंदाज में मेज पर पड़ी सारी किताबें देख डालीं. रंग-बिरंगे उपन्यास-कहानी के कवरों के नीचे पाठ्य पुस्तकें उसका मखौल उड़ा रही थीं.

सब-कुछ एक तरफ पटककर अनिल सिर पकड़ कर बैठ गया. सामने बैठा प्रकाश उसे बहुत दूर का आदमी मालूम हो रहा था और प्रकाश के चेहरे पर चिपकी मुस्कराहट उसे छुरी की तरह काटे डाल रही थी.

उसने अपनी जलती हुई आंखों को मिचमिचाया, थूक घोंटा और बिफर कर चीखा—"धोखा करते हो! दूसरों को गुमराह करते हो! यही है तुम्हारी इंसानियत!"

प्रकाश सारी बातें चुपचाप सुनता रहा. सब कुछ बोलकर जब अनिल चुप हो गया, तो प्रकाश ने कहा—"किसके साथ धोखा करता हूं मैं, बताओ तो? गुमराह ही करना होता, तो मैं तुम्हें त्रिकोणमिति वाली किताब क्यों पकड़ाता? धोखा तुम दे रहे हो—अपने आपको धोखा. तुम अगर पढ़ना चाहते हो, तो तुम्हें कौन रोकता है? अपना रास्ता तुम खुद नहीं पहचानोगे, तो और कौन पहचानेगा? आंख मींचकर दूसरों के पीछे चलोगे, तो गढ़े में गिरोगे!"

अनिल बैठा रहा. उसके थके और टूटे हुए मन पर प्रकाश की बातें हथौड़े की तरह पड़ी थीं. मगर उसको लग रहा था उस हथौड़े ने उसके दिमाग के टेढ़े-मेढ़े पुरजों को सही आकार ही दिया है, बेडौल नहीं किया है.

उसकी समझ में आ गया था कि उसे मूड का नहीं मूड को उसका गुलाम होना चाहिए. ●

रसायन विभाग, आई. आई. टी., पवई, बंबई-७६

kissekahani.com

एक था अहीर. नाम था बंको. बंको याने बांका. सच-मुच बांका ही था वह. उसकी लाठी की धाक दूर-दूर तक फैली हुई थी.

कच्छ के शहर भुज के पास काड़ी तड़ावड़ी नामक एक गांव है. वहीं रहता था बंको.

उन दिनों कच्छ में 'बाबा' का राज्य था. 'बाबा' याने 'खेंगारजी बाबा'. 'खेंगारजी बाबा' याने खेंगारजी तृतीय, जिसे कच्छ-गुजरात की जनता बहुत प्यार करती थी. आज से करीब अस्सी बरस पहले 'बाबा' ने कच्छ पर राज्य किया था. वह इतना बलवान, चतुर और साहसी था कि अब कई लोक-कथाएं उसके साथ जुड़ गई हैं.

बाबा को चीते और जंगली सूअर के शिकार का बहुत शौक था. अपने राज्य में उसने यह हुक्म जारी कर दिया था कि चीते और जंगली सूअर का शिकार जनता

नहीं कर सकती. शिकार करने का हक अगर किसी को है, तो सिर्फ बाबा को. चीते या जंगली सूअर को जो आदमी जान से मारेगा, उसे कड़ी-से-कड़ी सजा दी जाएगी.

एक बार बंको किसी काम से भुज गया. काम निबटा कर अपनी बैलगाड़ी में वह वापस लौटने लगा. काड़ी तड़ावड़ी गांव अब ज्यादा दूर नहीं था. शाम हो चली थी.

अचानक बैलगाड़ी में जोर का झटका लगा. दोनों बैल बुरी तरह घबरा कर रुक गए थे. बंको ने देखा कि मारे डर के दोनों बैलों के रोम खड़े हो गए हैं.

बंको को समझते देर न लगी कि आसपास ही कहीं कोई चीता छिपा हुआ है. बैलों को चीते की गंध मिल गई है. इसी लिए वे डर के मारे भौंचक हो गए हैं.

बंको ने बैलों की पीठ थपथपाई, लेकिन उनका डर दूर न हुआ.

अपनी मजबूत लाठी उठा कर बंको बैलगाड़ी से उतरा और चारों तरफ चौकन्नी निगाह फेरने लगा. अगर चीते का इरादा हमला करने का है, तो बंको

—मनहर चौहान—

इस लाठी से ही उसकी खबर ले सकता है.

सचमुच चीते ने हमला किया. एक भयंकर गर्जना के साथ वह पास की झाड़ी में से प्रकट हुआ. उसका इरादा था किसी बैल को मार डालने का—लेकिन लाठी लेकर यह सामने कौन डटा हुआ है? यह तो बंको है! क्यों न पहले बंको का ही काम तमाम किया जाए? चीते ने बंको पर छलांग लगा दी.

बंको ने जोर से लाठी घुमाई.

चीते की खोपड़ी पर लाठी इतने जोर से पड़ी कि वह एक ही बार में जमीन पर गिर पड़ा. बंको को वह भयानक चीता छू भी न पाया. जमीन पर गिरकर चीता पल-दो-पल तड़पा, फिर मर गया.

बंको अपनी बैलगाड़ी में बैठकर आगे बढ़ गया. काड़ी तड़ावड़ी गांव पहुंचते उसे देर न लगी.

रात हुई. रात बीती. सुबह हुई. आते-जाते लोगों ने चीते की लाश देखी. किसने मारा है चीता? बाबा ने मनाही की है, तो भी किसने मारा डाला यह चीता?

बंको ने मूंछों पर ताव देते हुए कहा, "मैंने मारा है, लाठी के एक ही वार से!"

बंको गिरफ्तार कर लिया गया. बाबा की अदालत में उसे हाजिर किया गया.

बाबा ने पूछा, "क्या यह सच है कि तूने चीते को जान से मार डाला?"

"हां, बाबा, यह सच है," बंको बोला.

"क्या यह भी सच है कि तूने लाठी के एक ही वार से चीते की जान निकाल ली?"

"हां, बाबा, यह भी सच है."

"लेकिन यह तो असंभव है. चीता इतना मजबूत और चपल प्राणी है कि..."

"लेकिन मैं भी चीते से कम मजबूत और चपल नहीं हूं, बाबा!"

"तेरी हिम्मत को हम दाद देते हैं. लेकिन क्या तुझे मालूम नहीं कि चीते का शिकार करने पर मनाही है?"

"मालूम है, बाबा. लेकिन अगर मैं चीते को न मारता तो वह मुझे मार डालता. मैंने सोचा कि एक पशु के मारे कौन मरे! इसी लिए मैंने उसे यमलोक पहुंचा दिया," बंको बोला. "लेकिन आपके मारे मैं मर सकता हूं!"

"क्या मतलब?" बाबा की भौंहों पर बल पड़े.

बंको ने कहा, "चीते को जान से मारने के अपराध में आप मुझे जान से मार सकते हैं, लेकिन चीता पशु था और आप मनुष्य हैं. एक पशु के मारे मरने से बेहतर है एक मनुष्य के मारे मरना!"

बंको के इस उत्तर ने बाबा को खुश कर दिया.

कहने की जरूरत नहीं कि बाबा ने बंको को कोई सजा देना जरूरी न समझा. ●

एल-३४, कीर्तिनगर, नई दिल्ली-१५.

बकरे दादा

बकरे दादा लेकर आए
मोटा एक सिगार;
दियासलाई में बाकी थीं
बची तीलियां चार!

एक-एक कर लगे जलाने,
थे शौकीन अनाड़ी;
धुआं नहीं निकला सिगार से,
मगर जल गई दाढ़ी!

—शंभूप्रसाद श्रीवास्तव

नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशुगीत

पिछले कई वर्षों से 'पराग' में शिशु गीत छापे जा रहे हैं. इन शिशु गीतों के चयन में बड़ी सावधानी बरती जाती है. क्योंकि शुद्ध शिशु गीत लिखना उतना आसान नहीं है, जितना समझा जाता है, इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं. ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चार से छह साल तक के बच्चे आसानी से जबानी याद कर लें और अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें. इन से मुहावरेदार हिंदी सरलता से जबान पर चढ़ जाती है.

बंदर का तलाक

बंदर बोला—पंचो, दुःख से
सूख गई है काया;
नई बहुरिया इस बंदरी ने,
मुझ को बहुत सताया!

मैं तो शरण तुम्हारी आया,
तुम राखो या मारो;
यह तलाक की विनय-पत्रिका,
प्लीज, इसे स्वीकारो!

—पुष्यमचंद 'मानव'

करो आज उपवास

दिन भर चूहा रहा भटकता,
मिला न उसको दाना;
चुहिया भी भूखी बैठी थी,
नहीं पक सका खाना!

चूहा आकर बोला, "बीवी,
अब क्या करें बताओ?"
चुहिया बोली, "चलो आज तो
होटल में ही खाओ!"

चूहा बोला, "अरी मूर्खा,
पैसा एक न पास!"
चुहिया बोली, "घर बैठो फिर,
आज करो उपवास!"

—निर्मला तिवारी

अक्ल ठिकाने आई

लिये पोटली चुहिया चाची,
चलीं भुनाने दाने,
तभी छीनकर भागा बंदर,
जा पहुंचीं वह थाने!

भालू जी थे तेज दरोगा,
समझ लिया झट केस;
पलक मारते पकड़ा बंदर,
हुआ सामने पेश!

कड़ी सजा में बंदर जी ने
हवा जेल की खाई;
नाकों चने चबाए फिर तो
अकल ठिकाने आई!

—शांति मालवीय

फोटो खींचने के लिए मज़ेदार कैमरा आग्फ़ा क्लिक III

शुरू करने के लिए उत्तम, साथ देने में सर्वोत्तम

- इस्तेमाल करने में सरल। हेरफेर (एडजस्टमेंट्स) की जरूरत नहीं।
- हर १२० रॉल पर (६×६ सें. मी. की) १२ बड़ी तस्वीरें खींच सकते हैं।
- एक्सरेडी केस, पोर्ट्रेट लेन्स तथा फ्लेशगन के दाम अलग। साफ़ सुहाने प्रिन्ट एवं एनलार्जमेंट्स के लिए आग्फा फोटो पेपर्स ही इस्तेमाल करें।

मूल्य : ४६.५० (कर अतिरिक्त)

ये सभी अधिकृत आग्फा विक्रेताओं के यहाँ मिलते हैं
आग्फा-गेवर्ट के सहयोग से भारत में बनाने वाले :
दि न्यू इंडिया इन्डस्ट्रीज लिमिटेड, बड़ौदा

AGI एकमात्र वितरक :
आग्फा गेवर्ट इंडिया लिमिटेड
बंबई . नई दिल्ली . कलकत्ता . मद्रास

® यह फोटोग्राफी संबंधी उत्पादनों के निर्माता आग्फा-गेवर्ट एक्टिएनगेसेल्शाफ्ट का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है

आग्फा क्लिक—भारत का सर्वाधिक लोकप्रिय कैमरा

CMAG-139-203R Hin

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता १०७

बच्चो, नीचे का चित्र है न मजेदार! काश, यह रंगीन होता, तो क्या कहना था! चलो, तुम ही रंग भरकर इसे हमारे पास २० मई १९७१ तक भेज दो. हां, अगर तुम्हारा खयाल हो कि चित्र की पृष्ठभूमि को तुम अपनी कल्पना से और ज्यादा उभार सकते हो, तो रंगों द्वारा उसे चित्रित करने की तुम्हें स्वतंत्रता है. सबसे अच्छे रंग भरने वाले तीन प्रतियोगियों को एकसे सुंदर इनाम मिलेंगे और उनमें से दो के चित्रों को छापा भी जाएगा. लेकिन रंग भरने वालों की उम्र १६ साल से अधिक नहीं होनी चाहिए और उन्हें 'वाटर कलर' ही उपयोग में लाने चाहिएं. चित्र के नीचे वाला कूपन भरकर भेजना जरूरी है. पुस्तिकाएं भेजने का पता : संपादक, 'पराग' (रंग भरो प्रतियोगिता नं. १०७), पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बंबई–१.

यहां से काटो

kissekahani.com

यहां से काटो

यहां से काटो

कूपन

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता – १०७

नाम और उम्र राजीव कुमार

पूरा पता

यहां से काटो

लेलो जी लेलो!

चिक्लेट्स लेलो!

मज़ेदार चूइंग गम

प्यारे बच्चो! तुम हरदम चबावो चिक्लेट्स चूइंग गम
मज़ा आयेगा यम् यम् यम्, नयी जाति के, भांति-भांति के
ऑरेंज, लेमन, पेपरमिंट, ट्रूटी-फ्रूटी चूइंग गम।

रंग भरो प्रतियोगिता नं. १०४ का परिणाम

'पराग' की रंग भरो प्रतियोगिता नं. १०४ में जिन चित्रों को पुरस्कार योग्य चुना गया, उनमें से दो को यहां छापा जा रहा है. पुरस्कार विजेताओं के नाम और पते इस प्रकार हैं :

- **विभूति सहारिया, १५-सी मछली भवन, किला, रामपुर (उ. प्र.).**
- **कुमारी सुजाता लघाटे, द्वारा श्री बी. बा. लघाटे, पीली कोठी, नारायण बाग, शिवपुर, वाराणसी (उ. प्र.).**
- **विवेकानंद गुप्त, द्वारा श्री गोपाल जी गुप्त, हसन बाजार (रूपन बाजार), पो. हसन बाजार, जिला—आरा—शाहाबाद (बिहार).**

ऊपर वाला चित्र है विभूति सहारिया का और नीचे वाला कुमारी सुजाता लघाटे का. दोनों प्रतियोगियों ने ही मूल चित्र की पृष्ठभूमि में अपनी-अपनी कल्पना से कुछ न कुछ जोड़ा है और उसी के अनुरूप मेल खाते रंगों का चुनाव किया है.

प्रयास करने वाले दूसरे बच्चों में से इनके प्रयास अच्छे रहे :

मकवाना जगदीपकुमार मोहनलाल, भावनगर-१; मोमीन हसन भाई अलाव भाई, नडियाद; रेनु श्रीवास्तव, वाराणसी; अमिता कपूर, मैनपुरी; संदीप मुशरान कानपुर; वीरेंद्र सिंह चौहान, आगरा कैंट; मधुलिके, रामपुर; हिना फारुकी, उन्नाव; सुभाषचंद्र खत्री, करोपुट; प्रतिभा मलिक, रुड़की; जयंत रमाकांत शर्मा, जलगांव; रघुवीर सिंह, पटना-२; शैलेंद्र शर्मा, अलीगढ़; अनीता जैन, एटा; सुनील शर्मा, अमरावती; राकेश, खपराडीह; रेखा सिंह, भागलपुर; अनिलकुमार बंसल, रामपुर; नीलिमा जैन, मुजफ्फर नगर; विपिन चंद्र पांडे, अल्मोड़ा; सलिल मिश्रा, बीसलपुर; रामकृष्ण सिन्हा, कटिहार; पुलिन बिहारी मित्रा, डालटनगंज; नीरजा सक्सेना, गोरखपुर; अतिभा, आगरा-३; विभा जौहरी, मिरजापुर; कुलदीप कुमार श्रीवास्तव, लखनऊ; मूलचंद विश्वकर्मा, नैनी तथा साबना ढांड, रायपुर. ●

प्रत्येक पॉकेट बुक्स के साथ बहुमूल्य उपहारों का भाग्यशाली कूपन प्राप्त करिये

बसन्त बाल पॉकेट बुक्स का प्रथम अभूतपूर्व रंग-बिरंगा सेट प्रकाशित हो गया

चार रुपये का लाभ व कीमती उपहार

प्रसिद्ध लेखकों की रहस्य व्यंग्य व निर्भीकता से युक्त मनमोहक पुस्तकें

- लोहे का आदमी इन्दिरा
  दिलचस्प वैज्ञानिक उपन्यास
- भूतों का डेरा गोविन्द सिंह
  सनसनीखेज रहस्यमय उपन्यास
- मूर्खाधिराज अजू दीदी
  हास्य एवं व्यंग्य प्रधान उपन्यास
- उजले लोग तरुण
  शोषण और अन्याय की कहानी
- धरती के बेटे उषा शर्मा
  साहसिक मनोरंजक कहानियाँ

प्रत्येक का मूल्य १ रु०

बसन्त प्रकाशन आगरा-५

kissekahani.com

सुंदर
नटखट
चितचोर

वाली मधुरी जिसने सबका
मन मोह लिया है
वाली टाइम्स आफ इंडिया की
पाक्षिक फिल्म पत्रिका मधुरी

माधुरी
रसीली मधुर पत्रिका